# बांके बिहारी की प्ररेणा

गिरजाशंकर उपाध्याय

BlueRose
Publishers

© GIRJASHANKAR UPADHYAY 2021

**All rights reserved**

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published in April 2021

**ISBN: 978-93-5427-426-8**

**Price: INR 274/-**

**BLUEROSE PUBLISHERS**

www.bluerosepublishers.com

info@bluerosepublishers.com

+91 8882 898 898

**Cover Design:**

Riya Parker

**Typographic Design:**

Ilma Mirza

**Distributed by:** BlueRose, Amazon, Flipkart, Shopclues

# विषयसूची


| | |
|---|---|
| सपने में घटनाओं का आना भावी संकेत | 1 |
| सनातन धर्म | 20 |
| श्री सीताराम | 22 |
| श्रीगणेशानयः | 22 |
| ।।तुलसी बन्दनां।। | 22 |
| ।। लक्ष्मी बन्दना।। | 23 |
| ।।भावनाओं का संसार।। | 24 |
| समय का फेर | 24 |
| ।। बसंत।। | 25 |
| ।। होली।। | 26 |
| ।। नवरात्री।। | 27 |
| ।। गर्मी का मोंसम ।। | 28 |
| ।। बर्षा का मोंसम ।। | 29 |
| ।। दरोगाजी रपट लिखो।। | 30 |
| ।। ट्रान्सफर बीमा।। | 31 |
| ।।इन्टरव्यू।। | 32 |
| राष्ट्र कवि | 34 |
| ओ रणवीर सहीद महाराणा करता हूॅ तुमको प्रणाम | 35 |
| ।।जुदाई।। | 37 |
| ।।जागो देश भक्त।। | 38 |

| | |
|---|---|
| वेयादें | 39 |
| सावन की फुहार | 40 |
| प्रजातंत्र की दशा | 41 |
| कुर्सी है करामाती | 42 |
| नेताजी के वादे | 44 |
| एक शराबी का रात का सपना | 45 |
| सर्विस | 46 |
| नन्ही फुलवारी | 47 |
| सादी के फेरों के हशीन सपने | 48 |
| शक्ति का स्वरूप | 51 |
| संघर्ष में शान्ती | 52 |
| हीनभावना एवं वाह सोन्दर्भ अशान्ती का कारण है | 53 |
| शुध्द आचरण मन को शान्ती देता है | 54 |
| ।।गणपति बंदना।। | 55 |
| प्रेम से ही भगवान मिलते है। | 57 |
| आंतरिक्ष की शक्तियों से समाज कल्याण एवं विकास | 59 |
| भावनात्मक भटकाव कैसे रोका जाये | 61 |
| रात्रि 4 बजे भजन का प्रभाव | 62 |
| शब्द ब्रम्ह में ईश्वर | 64 |
| प्रभु सुमरन से सभी कार्य वन्ते है | 66 |
| गोविन्द बन्दना | 68 |
| प्यारे सांवरिया की याद | 70 |
| बाके विहारी के लाल बाल  रूप दर्शन | 71 |
| विपदा हारी की याद | 73 |

| | |
|---|---|
| कोरोना संकट निवारण विनय | 74 |
| कोरोना रोग निवारण हेतू विनय | 75 |
| श्रीनंदलाल संकर से रक्षा करें | 76 |
| भारतीय संस्कृति महान है | 78 |
| श्री परशुराम भगवान की बन्दना | 81 |
| श्री भगवद गीता में निष्कर्ष कर्म योग | 83 |
| निष्काम कर्म योगी पहचान | 84 |
| निष्काय कर्मयोग के लिये उपाय | 86 |
| निष्काम कर्म योग ही कल्याण का हेतू है। | 87 |
| निष्काम कर्मयोग का महात्व | 89 |
| श्री भोलेनाथ की बन्दना | 90 |
| मॉ सारदा से विनय | 92 |
| श्री कृष्ण जी से विनय | 94 |
| श्री सीता माता की बन्दना | 96 |
| काम से ही अमरता प्राप्त होती है | 98 |
| 40 वर्ष विवाह के पूर्ण होने पर | 99 |
| संसार में कार्य अमरता की प्राप्ती होती है | 101 |
| (मीठी जवान महनत कश इन्सान) | 102 |
| प्रभु भक्ति से सुख प्राप्ती | 104 |
| (आरती वांके विहारी की) | 106 |
| कोरोंना से बचाव | 108 |
| मॉ का सम्मान | 110 |
| ईश्वर ही सब का रखवाला है | 112 |
| पंच तत्वों का संतुलन एवं हमारी सनातन संस्कृति निरोग बनाती है | 114 |

| | |
|---|---|
| ईश्वर ही सत्य है | 115 |
| (शुध्द अहार, उचित व्यवहार पर्याप्त निद्रा से निरोग रह सकते है) | 118 |
| अहार | 119 |
| मन मोहन कब आओगे | 121 |
| नेक कमाई | 123 |
| श्री राम जी चाहेगे वही होगा | 125 |
| श्याम दीवानी | 127 |
| सुख की प्राप्ती | 129 |
| हमें अपने कर्मो से सुख दुख की प्राप्ती होती है | 132 |
| राम नाम ही सार है | 134 |
| राधा–राधा जपने से सभी काम बनते है | 136 |
| चित चोर श्याम से प्रीति | 137 |
| (जादूगर श्याम) | 138 |
| जपो सीता राम बनेंगे सब काम | 139 |
| राधा नाम की चाबी | 140 |
| भजन राम का अति सुख दाई | 142 |
| सखी की प्रीत | 144 |
| सतरंगी है, श्याम | 145 |
| नारी का सम्मान करो | 146 |
| मोबाइल, कम्प्यूटर का सहारा | 147 |
| हरि कैसे मिलें | 148 |
| गोपाल ही सबको नचाते है | 149 |
| शक्ति बनकर सभी में समाया | 150 |
| भगवान ही परम हितू है | 152 |

| | |
|---|---|
| मेरे अन्दर आत्म रूप में बैठा है | 153 |
| माया के कारण प्रभु दर्शन नही होते | 154 |
| भक्तों  के हितकारी कृष्ण मुरारी | 155 |
| बृन्दावन के बांके विहारी | 156 |
| कान्हा मुझे बचाओ | 157 |
| सारी श्रष्टिका आधार राधा नाम, है | 159 |
| परमानन्द की प्राप्ती | 161 |
| अन्तर से पुकार से हरि मिलते है | 163 |
| (तुम्हारा, हरि अन्दर ही बैठा है) | 164 |
| श्रमिकों की समस्या | 165 |
| वांके विहारी का चमत्कार | 167 |
| बांके विहारी की सुन्दर भक्ति | 168 |
| सोच सुधारें | 169 |
| राम भजन अन्त में काम आता है | 171 |
| राम में राधा मॉ छिपी कुण्डनी में वास है | 172 |
| जग के रचने वाले | 174 |
| बोलो राधे, राधे | 175 |
| राम नाम जाप उच्चस्थिति में स्वयं जाप होता है | 176 |
| मनमोहन अन्दर ही बैठा है | 177 |
| सफलता के आधार | 178 |
| राम सुमिरन से मन बस से होता है | 179 |
| पिता | 180 |
| भारत मॉ के बीर जबान | 181 |
| राधा कृष्ण एक रूप | 183 |

| | |
|---|---|
| प्रभू प्रेम ही सार है | 185 |
| राम नाम सुमिरन करो | 186 |
| राम का शक्ति रूप | 187 |
| सदगुण संगति और भगवान सहारे है | 188 |
| कोऊ ना हित् हमार | 189 |
| दुर्गुण त्याग हरिभजन करें | 190 |
| सदगुण, संगति और भगवान ही सहारे है | 191 |
| हरि बिन को उना हितू हमार | 192 |
| दुर्गुण त्याग हरि भजन करें | 193 |
| घर का माहोल अच्छा हो | 194 |
| शक्ति ही पालन, संहार, जन्म का कारण है | 195 |
| कष्ट के समय भगवान ही सहारा है | 196 |
| भक्त की पुकार | 197 |
| धरती सब की माता है | 198 |
| माँ दयालु है कृपा करती है | 199 |
| हरि का भजन कीर्तन संकट मोचक है | 201 |
| सुख, दुख का कारण | 202 |
| साम 6 बजे 3 बार, हर, हर, हर, जाप से सारे संकट दूर होते है | 203 |
| मन में मुरली बाले को बसा लो | 204 |
| गोविन्द दरसन | 205 |
| अमर सहीदो को प्रणाम | 206 |
| जन्मदिन की बधाई | 207 |
| भारत देश महान | 208 |
| शिक्षक बन्दना | 210 |

| | |
|---|---|
| सनातन धर्म ही गुरू है। | 211 |
| गणपति बन्दना | 212 |
| गुरू पूर्णिमा पर गुरू बंदना | 213 |
| गणपति, शिव, हनुमान जी एवं श्रीजी के पूजन से राम, मिलते है। | 214 |
| हरिनाम ही सुख की खान है | 216 |
| भजन से सारे कष्ट दूर होते है | 217 |
| भक्ति ही सुखदाई है। | 218 |
| संसार रचने बाले हरि ही है।। | 219 |
| प्रभू भक्ति से सब कष्ट मिटते है | 220 |
| अन्दर वाहर प्रभूवास है। | 221 |
| हमारा प्रभु हमारे अन्दरती है | 222 |
| प्रभु चरणों में प्रीत लगा के। | 223 |
| प्रभू शक्ति से सब कुछ बना है | 224 |
| प्रभु भक्ति एवं सदकर्म से सुख मिलता है | 225 |
| ऊँ शक्ति वीज है | 226 |
| मन के शुभ विचार कष्ट मिटाते है | 227 |
| वृन्दावन में हर कोई राधे बोले | 228 |
| कृष्ण मुरारी का भजन करो | 229 |
| भारत की प्राचीन विद्या समझनी होगी | 230 |
| प्रकृति प्रेम से रोग दूर होते है। | 231 |
| क्रोध ही दुःख का कारण बन्ता है। | 232 |

# सपने में घटनाओं का आना भावी संकेत

जगते में मनुष्य आंख द्वारा देखता है काना द्वारा सुनता है। पैरों द्वारा चलता है। हाथों से काम करता है। मुॅह से खाता है। वांणी से बोलता है।

परन्तु जब नींद में होता है तब हाथ पैर, ऑख,कान,नाक,मुॅह,क्रिया सील नही होते है। फिर भी जब सपना देखता है तो सपने में पैर नही चलते फिर भी वह चलता है। वांणी मुॅह से नही वोलता फिर भी बोलता नजर आता है। अर्थात ज्ञान तथा कर्मेन्दियॅा सभी वगैर क्रिया किये ही क्रिया सील रहती है।

यहॉ तक कि हम उड नही सकते, फिर भी सपने में हम उडते नजर आते है पानी पर चलते नजर आते है। आखिर ऐसा क्यो होता है ? बगैर आंख खोले हम कैसे देख रहे, होते है? वगैर कान कैसे सुन रहे होते है। बहुत प्रश्न है। आंख बन्द होने पर देख नही सकती कान सुन नही सकते स्थिर पैर चल नही सकते आखिर यह किसका कार्य है। यदि हम सपनों को कल्पना मानें तो हम सपने में ऐसे स्थान ऐसी बस्तुये ऐसी घटनायें ऐसे लोग देखते है, जिनकी कमी कल्पना हमने नही की जिन्हें न कभी देखा है। न कभी सुना है।

रामायण में लिखा है।

बिन पद चलै सुनै विन काना

कर विन कर्म करै विधि नाना

आनन रहित सकल रस भोगी

विन वाणी वक्ता वड जोगी।

ईश्व अंश जीव अविनसी

अर्थात् आत्मा ईश्वर का अंश है। ईश्वर के समान आत्मा उसी का अंस होने से वगैर पैरों,कानों हाथों मुॅह एवं वाणी के कार्य करती है। तथा अविनाशी है। हर स्थान पर विचरण कर सकती है।

हमारा स्थूल शरीर इन्द्रियॉ वाह जगत के सम्पर्क में रहती है। इन्द्रिया सपने में संवेदी है। सपने में जब वाह जगत से सम्पर्क रत इन्द्रियॉ क्रियाहीन होती है। तव वाह एवं आन्तरिक जगत से सम्पर्करत आत्मा का सम्बध मन से हो जाता है। मन की क्रिया को आत्मा देखती है। मन यदि गलत विचार करता है। आत्मा प्रतिकार करती है।

यदि चिन्त,मन,इन्द्रियॉ सभी शान्त हो तो सपने में परमानन्द आत्म दर्शन की झलक मिलती है।

योग क्रिया द्वारा चित्त,मन,एवं इन्द्रियों को बस में किया जा सकता है।

तथा परमानन्द आत्म दर्शन किये जा सकते है। ऐसी दशा में आत्मा द्वारा संसार से घटित होने वाली आगे की घटना महात्व पूर्ण जानकारी आदि किसी विशेष व्यक्ति के सम्बन्ध में घटना आदि या उससे सम्वन्धित महात्व पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

मुझे वचपन से अभी तक ऐसी कई घटनाओं सपने में आई जो आगे सच निकली इन्ही का क्रमवार में वर्णन कर रहा हूॅ।

1. मैं वी0एस सी0 का छात्र था मुझे सपने में दिखा कि हमारे घर में घर की छत टूट गई है। वडा सुराख हो गया कोई घर से सामान ले जा रहा है। मैंने यह घटना अपने घर पर बताई घर पर चोरी की सम्भावना है।

   कुछ दिनों बाद हमारी चचेरी वहन की सादी सेंवढा से होनी थी। हमारा परिवार लहार से सेवढा गया था हमारे भाई, भाभी, चाचाजी व माताजी लहार ही थे, सादी में जाने की तैयारी में थे रात्री में दीवार तोडकर चोरो ने चोरी करली घटना सही हुई।

2. में अपनी वहिन के यहॉ इटावा गया था। रात्रि में मुझे सपना दिखा मेरी मॉ का देहान्त हो गया है। नहाते में पैर

फिसला और मोंत हो गई। मैं नीद से जाग गया ईश्वर का ध्यान किया ऑसू बहने लगे, यह घटना मैंने इटावा में अपनी वहिन एवं वहनोई व परिवार के अन्य लोगो को सुनाई कहने लगे भाई सपने में तो ऐसी वैसी वाते दिखती है। मैं तुरन्त बस द्वारा लहार आया घर पर पता चला हमारी दादी छत से रात्रि में गिर गई और र्स्वगवास हो गया है।

3. में अपने ग्राम बरहा तहसील लहार में था, अचानक मुझे बुखार आ गया चार पॉच दिन रहा। रात्रि में मुझे वेचैनी रही सपने में देखा कि मेरे पेट में भारी गठान पड गई है। मे वेचैन हूॅ। बुखार तो ठीक हो गया । कुछ माह वाद दिसम्बर 1979 में मुझे पेट में बाई ओर गठान उठती दिखी मैंने डॉक्टर को चैंक करवाया परन्तु 10 दिन के पश्चात गठान बहुत बढ गई ग्वालियर में डॉ0 पी0 एन0 अग्रवाल जो लहार के ही है। के सहयोग से डॉ0कान्हरे को दिखाया उन्होने तत्काल भर्ती के लिये कहा में भरती हो गया उसी दिन आप्रेशन हुआ 1 लीटर मवाद निकला 2 तीन महावाद में ठीक हो गया।

4. मेरी नौकरी के दौरान पदस्थापना अशोकनगर जिला गुना में थी, वहॉ मुझे रात्रि में सपना दिखाई दिया कि शहर में चारों ओर आग लगी है। सरदार लोग ट्रक लेकर भाग रहे हैं। चारों तरफ मार काटे मची हुई है। कुछ समय पस्चात स्व0 इन्द्राजी को गोली मार दी गई तथा चारों ओर दंगे फसाद हुये।

5. अशोक नगर में पंडित रामस्वरूप जी पाराशर के यहॉ चार नातिनें थी, नाती नही था आप ईश्वर के परमभक्त घर वार के कारोबार से दूर रहत हुये, भजन पूजन में लगे रहते थे नाती न होने की चिन्ता थी। क्यों कि एक ही पुत्र था उनकी चार पुत्रियॉ, पुत्र एक भी नही था। संसारिकता के हिसाब से चिन्ता उचित थी। मुझे सपने में आदेश मिला कि पंडित रामस्वरू‌प जी पराशर अभियांत्रित दीपक नवरात्रि मं अखण्ड रूप से जलावे तो नाती प्राप्त होगा। मेंने यह युक्त उन्हें वताई कुछ समय पश्चात नाती पैंदा हुआ।

6. अशोक नगर में उसी समय तहसीदार श्री माणिक लाल जी शर्मा थे हमारी उनसे मुलाकत थी। रात्रि में मुझे सपना दिखा कि श्री अर्जुन सिहॅ जी मुख्य मंत्री नहीं रहेंगे। मैंने यह वात बडेही आत्मा विस्वास से तहसील श्री मणिक लाल जी शर्मा को वताई चुनाव के वाद सपथ, श्री अर्जुन सिहॅ जीन की परन्तु अचानक अर्जुन सिहॅ जी के स्थान पर मुख्य मंत्री श्री मोंतीलाल बोरा जी को बनाया गया।

7. में अपने घर लहार छुटिटयॉ लेकर आया था। त्यौहार था। हमारा छोटा भाई जो शिवपुरी में नौकरी करता है। वह मुझे सपने में दिखा वह सिर पर पटटी वॉधे है। तथा कह रहा है। दुर्घटना हो गई मैने यह वात अपने पिताजी को वताई। उसी दिन भाई जव शिवपुरी से घर आया तो सिर पर पटटी वही थी । मैंटाडोर का ऐक्सीडेंन्ट हो गया था जिससे वह शिवपुरी से ग्वालियर आ रहा था।

8. में अशोक नगर में कार्यालय में कार्य कर रहा था। हमारा चपरासी गुना जाने की कह रहा था । रात्रि में सपने में बस दुर्घटना ग्रस्त होती दिखी थी

अतः मैंने उसे जब गुना जाने की मना की थी तो वह मान गया। उसी वस का ऐक्सीडैंन्ट ले गया ।

9. मैंने सपनें में देखा श्री पं0 श्यामाचरण शुक्ल को कॉग्रेस मे प्रवेश मिल जावेगा। यदि हनुमान जी की उपासना व पंचमुखी पाठ करें। मैंने उस विषय में पत्र अशोकनगर से पं0 कैलाशपति नायक के निर्देशानुसार लिखा मुझे पत्र का उत्तर प्राप्त नही हुआ परन्तु पं0 श्यामाचरण जी को कॉग्रेस में प्रवेश मिल गया। पुनः सी.एम. बने।

10. मैंने सपने में देखा कि विधान सभा के चुनाव वर्ष 1993 में लहार से टिकट रमाशंकर चौधरी को मिला है। मैंने यह वात श्री पहलवान उपाध्याय जी को वताई टिकट पहले फाइनल चौधरी को हो गया था। परन्तु वाद में बदल दिया गया।

11. मैंने सपने में देखा हम होटल में रूके है। तथा उसके चारो तरफ अन्य होटल है सकरी रोड है। दूसरे दिन ही मेरी पत्नी को भोपाल जाने का आदेश मिला, मुझे भोपाल जाना पडा तथा सपने में देखे गये होटल में ही रूकना पडा, उससे पहले मैने कभी भी उस होटल को नही देखा था, नही उसमें रूका था, रूकने से पहले में सपने देख चुका था जब होटल में रूका तो महसूस हो रहा था जैसे अभी

भी मूं सपने में हूॅ। सपना हकीकत का एक ही मिलान था । यह घटना दिनांक 20/08/94 की है।

12. में ग्वालियर में निवासरत था।

मुझे सपने में दिखा कि हमारे रिस्तेदार

भावी का भजीजा तथा भावी के चाचा मोटर साईकिल से जा रहे है। एक्सीडेट हो गया लहार से वरई गांव जो समय। वह अस्पताल में जाकर भर्ती है। मैने यह सपना अपनी पत्नी को बताया। दूसरे दिन घटना घटित हुई सच में एक्सीडेंट हुआ तथा ग्वालियर में आकार भर्ती हुये।

13. मैने अपनी पत्नी को बोला कि आज सपने में देखा तुम फिसल कर गिर गई हो, अतः आज आंगन में मत आना।

पत्नी दिन भर नही आई। शाम को जब में ऑफिस से घर लोटा वह ध्यान भूल गई फिर आंगन में आई और फिसल गई गनीमत थी फिसल कर मेरे ही ऊपर गिरने से वच गई।

14. मेरी पद स्थापना बरई पनिहार ग्वालियर के पास थी। मैने देखा कि एक कर्मचारी विधुत लाइन से चिपक कर दुर्घटना ग्रस्त हो गया है। मैने उसे बुलाकर बताया कि तुम 10 दिन विधुत लाइन पर कार्य मत करना वह घर पर ही रहा। घर समिरिया में विधुत लाइन टूटने से वहां के लोग आ गये लाइन मैन ने चलने से मना किया परन्तु वह बोला में लाइन नही धू सकता केवल बताऊगा। तुम लाइन बन्द र

तार जोड़ना। लाइन को बन्द कर डी.पी. से कटकर निकालकर तार जोड़ने हेतु ग्रामीणो ने का। परन्तु तार न जुडे वह स्वयं जोड़ने लगा। और वह दुर्घटना ग्रस्त हो गया। उसका नाम बाबूसिंह है बरई ग्राम में ही रहता हैं

15. मैं बामौर विधुत विभाग में कार्यरत था। मेरे साथी हुक्कू बाबू को मैने बताया आज आफिस के सामने एक्सीडेन्ट देखा है। अतः तुम रोड़पर घर जाते समय रोड़ से दूर रहना। हुक्की बाबू और में साथ रोड़ से दूर खड़े हो गये तथा एक्सीडेंन्ट हो गया।

16. हमारे मकान में वायुसेंना में कार्यरत श्रीवास्तव जो भूला गोरखपुर से थे। उन्हें एक बेटी हुई थी। उसके अलावा कोई संतान नहीं हई। बेटी लगभग 8 वर्ष की थी। उन्होंने काफी इलाज कराया। सपने में बालक जम्न ले रहा है। श्रीवास्तव जी के यही। सपने में देखा। मैने उन्हे यह बात बताई। वह हमारे मकान से क्वाटर मिलने से क्वाटर में सिफ्ट हो गये। कुछ समय बाद उन्हे एक बालक की प्राप्ती हुई।

17. श्री सुनील सिंह राठौर जो भगतसिंह नगर ग्वालियर में रहते थे।

अवविण्डसोर हिल में रहते है।

पूर्व में आई.टी.एम. कालेज में पढाते थे।

गणित विषय एक वार मुलाकात होने पर मैने उन्हे बताया कि मेरे सपने के अनुसार आप की नोकरी धूट जायेगी। आपके तीन कालेज होगे तथा अप को दूसरा पुत्र वगैर आपरेशन के होगा। उनको दूसरा पुत्र वगैर आपरेशन के हुआ। नोकरी छूटने के वाद आज तीन कालेज के मालिक है। वी.आई.एस.एम. कालेज उन ही का है।

आत्म तत्व से जाग्रत या स्वप्न में सटीक भविष्य का ज्ञान हो जाता है। बस आवश्यकता इस बात की है कि हम सजग व सतर्क रहे।

इसी तरह की कई घटनाये है। सभी का वर्णन करना संभव नहीं है।

कुछ घटनाओं का जिक्र किया है।

# सनातन धर्म ही गुरू है

गुरूज्ञान से ही भारत महानता धरण किये है।

धर्म के नाम पर भारत की जन्ता लाखों की संख्यायें में एकत्रित होती है।

विघटन एवं विनाशक कगार पर खडी मानव जातिको आज धर्म की अत्याधिक आवश्यकता है। इसके लिये धर्म को समझना होगा कि, धर्म क्या है? महाभारत में धर्म की उत्पत्ति धधातु से बताई गयी है। घृ का अर्थ है। धारण करना ।

धर्म समस्त संसार का मूल आधार, और समाज की एकता को मूर्तिमान करने वाला एक सशक्त माध्यम है। महाभारत में कीर्ति लक्ष्मी घ्रत्ति मेघा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, तथा मतिको धर्म की पत्नियों के नाम बताये है अर्थात धर्म उनके बिना अपूर्ण है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार धर्म का अर्थ है आत्मा को आत्मा के रूप में उपलब्ध करना, अर्थात आंतरिक प्रदेश में प्रविष्ट कर सत्य का संस्पर्श करना।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है। कि किसी सम्प्रदाय की छाया में पैदा होना अच्छा है पर उसकी सीमाओं में ही आवद्ध रह जाना बहुत बुरा है। हमें सम्प्रदाय  का इतना विसतुत बनना होगा कि उसकी परिधि में समस्त संसार आ जाया। यदि ऐसा संभव नही होता तो स्वय को साम्प्रदयिक संकीर्ण सीमा से बाहर निकलना होगा । एकता समता शुचिता, सहकारिता सहिष्णुता धर्म का लक्ष्य है। धर्म का सही स्वरूप समझाने और शाश्वत सिध्दान्तों को व्याहारिक जीवन में उतारने पर ही मनुष्य जाति का भविष्य सुरक्षित है। धर्म के सास्वत सिद्धात सनातन धर्म में समाहित है।

**धर्म के दो भाग है।**

मन्दिर, मस्जिद,गिरजा मत मतान्तर तो पोधे की रक्षा के लिये लगाये गये घेरे के समान है, धर्म के दो भाग है। पहला कलेवर व दूसरा प्राण कलेवर परिवर्तित होता है प्राण धर्म के शाशवत सिध्दात है जो जैसे थे वेसे ही आज है, धर्म का असतित्व प्राण पर ही टिका है। आज समाज मे बहुतायत उन व्यक्तियों की है। जो धर्म के वास्तविक

स्वरूप और लक्ष्य से अपरचित हैं, वे सम्प्रदाय रूपी कलेवर को ही धर्म का स्वरूप समझते है, और सीमित रहकर रूढिग्रस्त होकर धर्म के लक्ष्य से भटक जाते है। धर्म के नाम पर होने वाले सभी प्रकार के झगडे से केवल यही प्रकट होता है कि आध्यात्मिकता का मर्मसमक्ष मे आया नही है।

## सतानत धर्म में नियमों के पालन मे द्रढता से होता है

आज करोडों वर्ष व्यतीत होने पर भी सनातन धर्म केवल जीवित ही नही है समस्त विक्रतियों तथा बाहय आधातों के निरन्तर थपेडे सहने पर भी, उसमें अपने धर्म का आचरण करने वालों की एक वडी संख्या है। जव कि विश्व में एक ग्रन्थ, एक गुरू एक उपासना पध्दतियों को धर्म मानने वाले अनेक सम्प्रदायक जन्मे और नष्ट हो गये। सनातन धर्म में नियमें का पालन द्रढता से किया गया है। जब कि अन्य धर्मो में ऐसा नही है। प्रत्येक युग के विशेष विशेष धर्म हैं, प्रत्येक वर्ण व आश्रम भिन्न भिन्न धर्म है। परन्तु असंख्या विविधतओं के होते हुये धर्म में मोलिक एकताएँ होती है।

## धर्म की रिति स्वच्छता

धर्म प्राकृतिक एवं शास्त्रीय रीत से दैनिक स्वच्छता शारीरिक एवं मानसिक की आज्ञा देता है, देनिक स्वच्छता केवल शरीर के लिये ही आवश्य नही है। बल्कि मन के लिये भी आवश्यक है मन भी सूक्ष्म शरीर का अंग है

अतः मन की स्वच्छता का दैनिक प्रयास आवश्यक है। स्वच्छता के साथ शरीर एवं मन का पोषण भी आवश्य है, पोषण हेतु धर्म द्वारा अनुमोदित भोजन ही ग्रहण योग्य है, मन लिये शुध्द सात्विक भोजन आवश्यक है मन के लिये शुध्द आचार प्रतिदिन चाहिये ।

जो लोग गुरू की कृपा से परिपूर्ण है। वही शुध्द सात्विक तन व मन को भोजन प्राप्त कर रहे है।

## धर्म हमें नैमितिक कर्म के लिये मार्ग दिखाता है

जब घर में संतान होती है विवाहहोता है और कोई अतिथि आता है । कोई मरता है। ऐसे समय हमारे कर्म, जैसे दुकान जाना, कार्यायल जाना, काम पर जाना आदि में अन्तर करते है। हम ऐसे अवसर पर चित में विशेष उल्लास, उत्साह, चंचलता पाते है ओर किसी की मृत्यु

पर चित में सोक, संताप, पाते हैं। ऐसे समय में अनुकूल एवं प्रतिकूल समय में धर्म ही हमारी सहायता करता है, धर्म से परिपूर्ण गुरू ही हमारी सहायता करता है

## धर्म के समान नियम पालन

धर्म सामन्य नियम पालन के लिये हमें आज्ञा देता है भारत में धर्म सामान्य नियमों के पालन की आज्ञा देता है।

1. सत्य 2. दया 3. संयम 4. पवित्रता 5. कष्ट सहिष्णुता 6. उचित अनुचित का विचार 7.मनका 8. इन्द्रियों का संयम 9 अहिंसा 10. ब्रम्हचर्य 11. त्याग 12. स्वाध्याय 13. सरलता 14. संतोष 15. समदर्शिता 16. सेवा 17. धीरे धीरे भोग वृति का त्याग 18. मनुष्य के लौकिक सुख प्राप्ति के प्रयत्न उल्टा ही फल देते है। 19 मोंन 20. आत्म चिन्तन 21. प्राणियों में उन्नति का यथा योग्य विभाजन तथा उनमें विशेषकर मनुष्यों में अपने आराध्य को देखना 22. महापुरूषों की परम गति भगवान के रूप गुण, लीला महात्यका श्रवण 23. भगवान गुण लीला का कीर्तन 24. भगवान स्मरण 25 भगवत्सेवा 26. पूजा यज्ञादि 27. भगवान को नमस्कार करना 28. भगवान के प्रति दास्यभाव 29. साख्य भाग 30. भगवान को आत्म समर्पण

विशेष धर्म

विशेष धर्म मनुष्य होने के नाते प्रत्येक मनुष्य की समाज में विशेष कर्तव्य है। नागरिक होने से देश के प्रति कर्तव्य, पिता , पुत्र, भाई , पति होने के कर्तव्य सामाजिक प्राणी होने से समाज के प्रति कर्तव्य सभी कर्तव्य सदाचार अपना कर पूर्ण करना है। जो दूसरे के लिये आर्दश एवं अनुकरणीय बनजायें । जिससे देश, समाज, की उन्नति एवं विकास हो।

## धर्म का पालन

यदि हम बीमार है और हम अपने रोग को ठीक करने हेतु उस रोग को ठीक करने की दवा ले तो रोग ठीक होगा ।

यदि हम मकान बना रहे बना रहे है त्रुटि से छत डालने में हम मूल करते है छत गिर जाने की पूरी संम्भावना है। धार्मिक अनुष्णन में भी त्रुटि से विपरीत होता है. त्रुटि से विपरीत फल की पूर्ण सम्भावना होता है

अर्थात त्रुटि का फल विपरीत होता है त्रुटि धर्म पालन मे ग्राह नही।

## धर्म के नाम पर खिलवाड़

भारत में आज धर्म के नाम पर मरने मिटने वाली जन्ता को गुमराह करना तथा धार्मिक भावनाओं से खेलना व राजनैतिक स्वार्थको सिध्द करना ओधी मानसिकता है।

अतः आवश्कता इस वात की है। कि हम धर्म पराण जाता को सही दिशा में चलन को प्रेरित करें तथा उन्हें सजग, सतर्क रहने के लिये व स्वार्थी तत्वों की ओधी मानसिकता से दूर रहने के लिये धर्म के वास्तविक अर्थ को समझायें ।

परहित सरिस धर्म नहि भाई।

पर पीडा सम नहि अधि माई।

## अहिंसा परमों धर्मा

## धर्म का वास्तविक रूप भाई चारा है

धार्मिक उन्माद से कमी आनन्द की प्राप्ती नही होगी। राष्ट्र का विकास धर्मान्ध होकर नही धर्म परायण होकर धर्म का मार्ग समझाने पर ही सम्भव होगा।

धर्म का अर्थ शंकुचित आधार पर लेना व्यर्थ है। धर्म पूजा पाठ तक सीमित नही है। नाहि मन्दिर मस्जिद,गुरूद्वारे, गिरजाघर तक बल्कि सम्पूर्ण मानव के निर्माण में। भाईचारे, एकता, प्रेम विश्व वन्धुत्व अपनत्व,ममत्व मैत्री सहयोग परस्पर सहायता राग द्वेष से रहित मानव कल्याण का सम्पूर्ण पाठ क्रम ही धर्म है।

## धर्म एवं राजनीति में अन्तर समझे

यदि कोई व्यक्ति, संगठन, राष्ट्र मानव कल्याण की वात तो करे पर जाति, द्वेष, सम्प्रदाय, धर्म भेद घृणा, फैलाकर राष्ट्रीय एकता का खतरा पैदा करे तो वह किस धर्म का पालन कर रहा है, यह धर्म का पालन न होकर धर्म की ओट में धार्मिक भावनाओं का सहारा लेकर राजनीत रूपी वैतरणी पार करने का प्रयत्नहै। क्या कभी धर्म तोडने की बात करता है, क्या धर्म विभाजन जो हिंसा व जातिय आधार पर हो मान्यता देता है, क्या हिसां के वलपर किसी निर्माण कार्या को संम्पादित कराने की अनुमति धर्म देता है, राम ने धर्म हेतु अवतार लिया था। धर्म की मरयादा का पालन किया था। त्याग, सत्य संगठन मैत्री,सहयोग केवल पर प्रेम व भाई चारा निभाते हुयेअनीति पर विजय प्राप्त की थी। आज यदि हम आर्दश भूल कर आर्दश धर्म से विमुख होकर क्या राम का अपमान तो नही कर रहे है।

## हमारे राम आदर्श युग पुरूष है।

उनकी मर्यादायें मान्यताओं है। हम निर्मल मन मोह, कपट, छल, से रहित होकर ही राम को प्राप्त कर सकते है, वगैर प्राप्ती के स्थापना भी सम्भव नही हो जो बस्तु प्राप्त नही उसकी स्थापना कैसी भावनाओं में भगवान का निवास है। जब भावनाये ही दूषित होंगी तो भगवान का वास कैसा, बगैर धर्म के भगवान निवास नही करते, भगवान का निवास वही होता है जहॉ धर्म हो, गीता में भगवान स्वंय कहते है अर्जुन में तुम्हारे साथ इसे लिये लिये नही है कि तुम मुझे प्रिय हो, वल्कि इस लिये कि तुम धर्म पालन कर रहे हो, यदि तुम धर्म से विमुख होते तो में तुम्हें सहायता नही करता। जब जब धर्म की हानि होती है। तो संसार में अनीति, अत्याचार, अन्याय, पाप, हिंसा, द्वेष, अशान्ती,भय फैलता है। यह क्रम तब तक चलता हैं जब तक धर्म की पुनर स्थापना नही होती। यदि कोई व्यक्ति, संगठन या राष्ट्र अधर्म का सहारा लेता तो उसमें यह लक्षण, अनीति अन्याय, अत्याचार, पाप, हिंसा, द्वेष अशान्तीव भय के स्पष्ट दिखने लगते है।

## धर्म दवा के रूप में समाज का इलाज करती है।

जिसका असर समाज पर पडता है। एक पत्थर का टुकडा पानी में फैकने पर अपने स्थान के अलावा का क्षेत्र दूर तक तक कम्पन पैदा करता है, ऐसे ही अधर्म का क्षेत्र भी दूर तक अपना प्रभाव छोडता

है। जब हम रोगी होती है। तो हमें डॉक्टर के पास जाना पडता है समाज जब रोगी हो तो धर्म द्वारा ही समाज का उत्थान होता है, यदि दवा समय से नही मिली तो समाज का रोग असाध्य हो जाता है।परणाम समाज का विनाश हो जाता है इन्फैक्सन से कई तरह के रोग पनपते है वायु, जल, वातावरण के दूषित होने पर हमारा शरीर भी रोगी वन जाता है, जीवाणु विषाणु भी तरह तरह के रोग फैलता है, हमारा शरीर तो डाक्टर उपचारित करने से ठीक हो जाता है, परन्तु समाज के रोग, जातिगत रोग, एवं राष्ट्र में जो रोग फैल रहा है। उसकी तरफ हमारा ध्यान तो है। परन्तु सारथक कोई डाक्टर अभी नही मिला है सरकारी विभाग समाज शास्त्री, नेता, बुध्दिजीवी सभी इस विषय को जानते है। यदि समस्याओ का हल चाहिये तो हमारे राष्ट्रय जीवन में चेन अमन चाहिये तो हमारे राष्ट्रीय नेता, विचारक, प्रबुध्द नागरिक यथार्थ परक के दृष्टि धर्म आधार पर विचार करे, जिससे राष्ट्र के रंगो मे फैल रहे जहर को उपचारित किया जा सके, यदि हम यथार्य से दूर रह कर हल खोजगें तो समस्यायें और बढेंगी। समस्यों का यथार्थ परक हल खोजने पर ही समस्याओ का निदान होगा।

## जन्म से नही कर्म से पहचान

समाज का चार जातियों में वंटवारा धर्म या कर्म के आधार पर माना जावे तो ब्रहमण का धर्म व कर्म यही है समाज के उत्थान हेतू प्रयास करें एवं अज्ञान का निवारण करें क्षत्रिय वह है जो अनीति से जूझने व नीति का पालन कराने में सलग्न रहे। समाज में किसी वस्तु की कमी न होने दे वह वैश्य है। है। जो अपने धर्म, कर्म को छोडकर अपने आप में सीमित हैं पेंट भरने प्रजननकार्य, पशुव्रतियों में डूव वह हर व्यक्ति शूद्र है। वह चाहे जिस जाति कुल में उत्पन्न हुआ हो। ब्रहमण,क्षत्रिय वैश्य व शुद्र संसकार व कर्म जो धर्म के अनुसार हो अपनाने पर ही मनुष्य बनता है, जन्म से न कोई ब्रहमण है, न क्षत्रिय न वैश्य सभी सूद्र ही पैदा होते है। संसकार धर्म कर्म के द्वारा हम अपनी जाति यानि पहचान बनाते है। हमे सिर्फ जातिगत आधार जो जन्म से सम्वध रखता है बॉटना बुध्दिमानी नही ओछी मानसिकता है कर्म आधार, हो जाति व्यवस्था ।

क्या हमारी सरकार का भी यही हाल है सरकार धर्म निरपेक्ष का अर्थ सर्व धर्म संभाव  लगाती है धर्म, जाति, मूल वंश लिंग के आधार पर भेदभाव नही करेगी। जाति हमारे समाज व देश में जन्म से ही मानी जा रही है कर्म व धर्म की आवश्यकता नही है। कितना अच्छा होता यदि हमें जाति के अनुसार कर्म न करने के कारण निम्न जाति का बनाने व्यवस्था होती  तथा अच्छे कर्म वालों की उन्नति। हमारा समाज दुसचरित्र व्यक्तियों को मान्यता नही देता समाज से वहिसकृत कर देता।

पाश्चात संस्कृति घातक है

परन्तु पश्चमी जगत ने हमारे भारतीय समाज पर प्रभाव डाला है उसी का परिणाम आज हमारं समाज , देश व जन्ता भुगत रही है औरत को भोग की बस्तु समझना घिनोंनी कमुकता, अशलील दृस्य फिल्म डिस्को की चका चोंध की भरमार हमारी संस्कृतिकों दूषित कर रही है। क्या इसी का नाम विकास है? क्या इसी का नाम सम्यता है? यदि ना तो फिर इसे दूर दर्शन अन्य माध्यमों द्वारा क्यों प्रचारति किया जा रहा है घातक है।

भोग का चिन्तन घातक है।

भोगवादी चिन्तन,मनन,दर्शन, प्रदर्शन हमें क्या लाभ देगा। हमारा कितना उत्थान करेगा ईश्वर ही जाने ।

क्या हमें इस पर गौर करना चाहिये,

यदि हमें भारतीय दर्शन मनन, चिन्तन अभ्यास छोड दिया तो हम भोग के रोग में जकड जावेगे एवं योग, प्रणायाम ध्यान, धारणा व समाधि से विलग हो जावेगे। व विश्व गुरू के स्थान पर हम चेला बनने लायक भी नही रहेगें।

आत्मा चिन्तन ही आधार है

इससे शान्ती मिलती

कर्म निष्ठ आत्मचिन्तन शील लोग अपना मुल्याकन करते है, तथा मार्ग में सही दिशा पर बढते रहते है अधिक और अधिक भौतिक चिन्तन मार्ग से भटकाव लाता है।

सुख,शान्ती, अमन हम भौतिकता मे खोजते है यह हमारा भटकाव नही और क्या है, हमारे संसकारो से हमारा हम स्थिर होता है मन स्थिर होने से बुध्दि बनती हे बुध्दि के सही काम करने से ज्ञान प्राप्त होता है ज्ञान के प्रकाश से सुख व शान्ती की अनुभूति प्राप्ती होती है क्या हम धर्म के इस मार्ग को जानकर भी अनजान नही है

धर्म के चारो ओर पवित्रता है।

धर्म पवित्रता से उत्पन्न है सत्य, अहिंसा त्याग, तपस्या, संतोष समदर्शित व साख्य भाव की भनक सहज ही धर्म के चारों और रहती है। धर्म मणि है जो स्वंय के प्रकाश द्वारा प्रकाशित है। शान्ती शीतलता व निम्न को उच्च परमता की ओर ले जाता है।

धर्म को सीमाओं में नही वांध सस्ते सीमा अनन्त है अनुभूतियों का अनुभव होगा पुस्तक द्वारा धर्म के मार्ग को वताना एक मार्ग की ओर जाने वाली रास्ते की तरफ इसारा करना है, जिस धर्म के बन्धन में स्वयं भगवान बंधे हों सहज व्याख्या या महज सीमा में बॉधना एक कुचेष्टा भर ही होगी।

आत्म अनुभूति द्वारा हृदयागम आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति करपाना गूगे के गुड के समान है शक्कर मीठी है यह वाते कहने से मिठास का पता नही चलता मिठाई का स्वाद चखने वालो शब्दों में मिठाई की मिठास की अभिव्यक्ति नही कर सकता अनुभव ही कर सकता है।

तब धर्म, की अभिव्यक्ति भी करपाना सहज नही अनुभव द्वारा ही अनुभूति होगी।

महापुरूषों में धर्म की गंध आती है तथा जिससे धर्म फैला है। यदि हम ऐसा व्यक्ति के जीवन का देखेंया ऐस पूर्ण गुरू को देखे जिसका जीवन,

सत्य, दया, पवित्रता, तपस्या, त्याग, सरलता, संतोष, से पूर्ण हो जो कष्टसहिष्णु इन्दियों पर संयम रखता हो, व समदर्शी हो व सेवा भाव रखता हो व लेकिक सुख की इच्छा त्याग दी हो।

ऐसे मनुष्य के गुड वा जीवन में हमें धर्म के दर्शन प्राप्त होते है। तथा ऐसे लोगों का जन्म धर्म को एक से दूसरों में स्थानान्तरण, कर

पुष्पवित्र करने के लिये होता है। महापुरूषों के जीवन चरित्र से धर्म, की सोंधी गंध आज भी फैल रही है जो वातावरण को शुध्द करती रहती है। आज भी भारत भूमि में धर्म, क जडें नवोदित हवाओं को जन्म दे रही है पाश्चात सम्यता ने बहुत वडी विघ्नवाधायें में उत्पन्न करदी है। आज भोतिक वादी चिन्तन के विकार ने हमारे आध्यमिक चिन्तन को बुरी रतह प्रभावित किया है। सूक्ष्मता अनुभूति के द्वारा स्वंय होती है ध्वनि की सूक्ष्म तरंगो आज हमें टैलीफोन द्वारा सुनाई देती है परन्तु दिखाई नही देती यदि टेलीफोन न हो तो हम घ्वनि तरंगो को नही सुन सकते

अतः– द्रस्य,अद्रस्य दोनो का महात्व है।

## धर्म, द्वारा जटिल दिमाक रूपी जटिल कम्यूटर को व्यवस्थित रखने की तकनीक

अभी भारत वर्ष में शान्ती व्यवस्था को स्थाई रूप से चौपट नही किया जा सकता।

## भौतिक सम्पन्नता से शान्ती संभव नही धर्म से संभव है।

भौतिक बस्तुओ भौतिक सुख सुविधा भौतिकवादी चिन्तन व भौतिकता की होड ने आज विदेशाो ने पैर जमा लिये है। अणु, परमाणु अधुनिकतम तकनीक से परिपूर्ण कर सैनशक्ती रखकर क्या कोई देश खुशहाली शान्ती व्यवस्था कायम रख सकता है। यदि हों तो क्या आज ऐसे देश खुशहाल शान्ती व्यवस्था पा गये है। आज हमारे समाज को व्यवस्थित शान्ती सुख व खुशहाल बनाने के लिये रामराज्य की कल्पना की जाती है।

## धर्म को में जाने धर्मान्ध न बने

धर्मान्धता भी अभिसाप है। व अन्धानुकर भी गर्त में ले जाने वाला है। धर्म के प्रति सजग अन्धानुकरण का परित्याग करने पर ही हम सही मार्ग पर चल सकेंगे। धर्म, रूपी प्राचीनतम गुरू के मूलतत्वों को अनदेखाकर उनका पालन यदि नही करेंगे तो परिणाम अवश्य हमें भोगने पडेगें।

आज हमारी सरकार धर्म के वाह पक्ष पर ही ध्यान नही दे रही है। महज आन्तरिक पक्ष पर राष्ट्र्य की औपचारिकता निभा रही है। प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है वह राष्ट्र भक्त हो, कोई ऐसी व्यवस्था क्यों

कायम नही करती जिससे अनौपचारिक रूप से व्यक्ति के जीवन मे राष्ट्रभक्ति की विषम वेदना जागृत हो, इसके लिये अंतोतम रूप से धर्म का हृदयागम यानि आत्म शुध्दि व्यवस्था को स्थापित करना है। भारत की धर्म व्यवस्था आधुनिक परिवेश में समक्षकर समाज को भी दाईत्व सोपना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा आज जो अपने धर्म को धर्म नही मानते अपनी भारत मॉ की नही मानते देश सेवा व समाज सेवा की बातकर लोगों को भ्रमित कर रहे है। उन्हें क्या कहा जावे इस प्राकर के लोगों की संख्या आज अधिक बढ गई है ऐसे मे हमें जनजागृति लानी होगी । शिविर लगाकर राष्ट्रभक्ति का पाठ पढाया जाये।

## समाज भी भूमिका निभायें

आज की उस धर्म भीरू जन्ता के धर्म गुरूओं का दाइत्व नही है। कि जनजागृति शिविर लगाकर धर्म के विकृत रूप से जन्ता को आगाह करें। पत्र पत्रिकाओं सभाओं सम्मेलनो, तथा अन्य उन सभी माध्यामों का उपयोग कर जिससे धर्म के वास्तविक अर्थ को जन्ता समक्षकर सही मार्ग पर चल सकें। अव मठ गुरूकुल व मन्दिरों गुरूद्वारों चर्च या मस्जिदों तक ही धर्म का क्षेत्र न समक्षा जावे।

## धर्म गुरू की भूमिका अहम है

पूरे देश में इकाई स्तर तकधर्म के सही रूप को समझने का व अपने जीवन में डालने का दाइत्व यदि आज धर्म गुरूओं ने नही लिया तो समाज में फेल रही बुराइयों का रूप भयंकर रूप से फैलेगा व शाान्ती व व्यवस्था खुशहाली विकास की हमारी इच्छा कमी पूर्ण नही होगी । जो औपचारिक रूप से चल रही है । कितना अच्छा होता धर्म के मूल तत्वों को भी समाहित कर अनोपचारिक रूप से शासन योजना बनाकर शासकीय, अशासकीय, समाजसेवी निस्वार्थी धर्मप्रेमी, लोगों को दाइत्व सोपतें तो शिक्षा के साथ धर्म जागृति हेतू धर्म के मूल तत्वों से विषय रोचक होता, धर्म भीरू जनता को भी आनन्द आता व समाज के ऐसे तत्वों के द्वारा जो अनके अपने परिचित धर्म प्रेमी है। धर्म के साथ शिक्षा ग्रहण करता है यहॉ यह आवश्यक है किसी स्वार्थ से वसीभूत कोई व्यक्ति, समाज , पार्टी स्वंय अपना समाज, व देश का भला नही करता यह कार्य ऐसे लोगों द्वारा करवाया जाना सदैव असभ्यता कोई जन्म देता है।

## धर्म के द्वारा नैतिक पतन को रोकना

आज नैतिकता का पतन बडी तीव्रता से हो रहा है। धर्म के मूलवत्वों के प्रति अभिरूचि की कमी इस के लिये उत्तर दाई है।

नैतिकता के पतन के साथ ही राष्ट्र का पतन प्रारम्भ हो जाता है धर्म हमें

## धर्म संस्कार बान बनाने में मूलभूत कार्य करता है।

1. वच्चों की शिक्षा संस्कार
2. स्त्रियों की जागृति
3. समाजिक जाग्रति कर्मचारी नेता, तथा धनी व्याक्तियों हेतू कानून

## धर्म हेतू संस्कार आवश्यक

संस्कार से मन मन स्थिर से बुद्धि बृद्धि से ज्ञान प्राप्ती होती है। क्या आज संस्कारों की तरफ ध्यान दिया जा रहा है। संस्कार डाले बिना बुध्दिमान की कल्पना करना उसी समान हो जिस तरह कटेपेड। में पुष्पों की आसा करना ।

बच्चों में संस्कार डालने में माता पिता, समाज राष्ट्र सभी का दाइत्व है परन्तु क्या हम पूरी तरह यह धर्म निभा पा रहे है हमें इसके लिये क्या करना होगा। किसका कितना दाइत्व है। क्या हमारी यह आज आवश्यकता नही है कि इस दिशा में हम सोचे कुछ कर गुजरे यदि हम वास्तव में बुध्दिजीवी है ज्ञानी है तो हमें राष्ट्र के प्रति क्या करना है हमारा क्या दाइत्व है क्या हम उसे पूरा कर पार रहे है। इसका उत्तर अन्तर आत्मा में खोजे और अन्तर आत्मा के उत्तर अनुसार कार्य करें भरत भूति में अनगिनत मातायें हुई है। जिन्होने धीर, वीर, योध्दाओं ज्ञानी, तपस्पी, त्यागी आदर्श पुरूषों को जन्म दिया।जिन्होने मात्र भूमि की सेवा में अपना सवकुछ न्योछावर किया आज भारत माता उनपर वलिहारी है। क्या आज ऐसा माताओं की कमी है। आज कोंन से कारक है कानसी कठिनता है, क्या हमे इसे हम दूर नही कर सकते कि हमारा भारत फिर महान बनजावे । हम असहाय से क्यों हो रहे है।

## धर्म के मूल तत्व को समझ कर दोष दूर करें।

निश्चिय ही हम धर्म के मूल तत्वों को ध्यान से रखकर आत्म सात से सभी कूछ पुनः पा सकते है। यदि हमारे मुख्य, आदर्श, नैतिकता, चरित्र में पतन आया है तो इसके दोषी हम स्वयं है। हमें दोष दूर करने हेतू प्रयास करने चाहिये ।

## सम्पती कानून विचार आवश्यक

कुछ व्यक्तियों द्वारा सम्पति का अधिक संचय करना तथा कुछ को दो समय भोजन न मिलना भी हर देश की समस्या है, हमारे देश में गरीवों की संख्या अधिक यदि सम्पति व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन तक ही रहे, व बच्चो को सम्पति ट्रान्सफर निश्चित सीमा तय ही हो कर अधिक सम्पति सरकार व उनकी रोजी रोटी हेतू सर्विस या व्यवसाय हेतू निश्चित पूजी की व्यवस्था कर दे, तो सरकार बहुत सारा धन प्राप्त कर सकेगी। इस हेतू सरकार आवश्यक कानूनी संसोधन क्यों नही करती एक कानूनी संसोधन धन से कई विकराल समस्याओं का सामाधान हो जावेगो अधिकता जन्ता गरीव हैं वह इस कदम का स्वागत करेगी। निश्चत सीमाओं में धन व जायदाद से उपर धन व जायदाद राजसात होने से अधिक धन प्राप्ती व जायादा प्राप्ती की अन्धी होड में अंकुश जगेगा। जाति, धर्म के नाम पर आरक्षण से आर्थिक आधार पर आरक्षण होता तो जाति, धर्म सम्प्रदाय रूपी जहरीला वातावरण नही पनपता आर्थिक विसमता को क्या जातिगत आरक्षण से पूरा किया जा सकता है। आरक्षण से क्या यौग्यता बोनी नही हो गई है अशिक्षित को शिक्षित आयोग्य का यौग्य गरीव को अमीर बनाना है। तो अधिक धनवान को सामान्य बनाना भी समय की पुकार है।अनीतिस अधिक धनवानो,द्वारा समाज राष्ट्र कानून व जन्ता को सदैव क्षति पहुचाई जाती है। और राष्ट्र, समाज, व मानव जाति पर कलंक है, ऐसे व्यक्ति संरक्षण देने वालों को क्या कहें। क्या सक्षम सक्रिय सम्पन्न दाइत्वके प्रति सजग ,प्रहरी समाज राष्ट्र हितेसी इस और ध्यान देंगै। क्या हमारी सरकार ध्यान देगी।

शासकीय सेवक व महत्वपूर्ण व्यक्ति प्रत्येक राजनेता को प्रत्येक वर्ष अपनी सम्पती का व्योरा देना आवश्यक कर दिया जावे। किसी महात्व पूर्ण पद पर विराज मान होने से पूर्ण इस वात का घोषणपत्र लेना आवश्यक समझा जावे। व मानीटरिंग के लिये अलग व्यवस्था रहे जो

प्रतिवर्ष रिपार्ट दे । सम्पति विवरण क्षेत्र के हिसाव से पुस्तिका मे दर्ज का रिकॉर्ड बनाया जावे यदि इससे अधिक कही कुछ और हो तो होने का घोषणा पत्र मे राखा जावे । प्रत्येक की सम्पति विवरण जन्ता के समक्ष रखा जावे। आज तत्कालिक धर्म के तहत शासन को ऐसी व्यवस्था करना चाहिये।

उपरी दिखावा, राजनीति, भौतिकता की अन्धी होड, परिवारवाद, नैतिक मूल्यों का हृास एवं भागवाहिता के कारण धर्म, समक्ष पाना कठिन है।

धर्म, के वास्तविक स्वरूप को समक्षाकर अनुशरण करने पर ही रामराज्य की कल्पना तथा वास्तविक सुख शान्ती प्राप्त हो सकती है आज महात्मओं साधुओं, सन्यासियों को वास्तविक सुख इस लिये प्राप्त हैं, कि वह सनातन धर्म का  पालन करते हुये आचरण वान, धर्म अनुयाई है। तथा आज भौतिकताओ तथा अन्य कारणों से दुखी व्यक्ति ऐसे गुरूओं की शरण में शान्ती व सुख की कामनासे जाते है।

**सनातन धर्म ही गुरू है।**

अर्थात् सनातन धर्म ही हमारा गुरू है। हमें सनातन धर्म का पालन आवश्यक रूप सेकरने पर ही राम राज्य की कल्पना पूर्ण होगी एवं शान्ती प्राप्त होगी ।

# श्री सीताराम
# श्रीगणेशायनमः
# ।। तुलसी बन्दनां।।

जन्म दिन पर तुम्हें बधाई, सतसत बार नमन ।
सदैव तुम्हारा ़रिणी रहेगा, भारत का हरजन ।।
धर्म त्याग मरयादाओं की रस, रसिक रसीली गाथा ।
परोपकार धर्म के कारण ही हम तुम्हें नवाहें माथा।।
पढकर के हम धन्य हुये रामचरित अति पावन ।
मेरे जीवन में आजाता मेघ भरासा सावन ।।
अमर आलोकिक कृतिया रचकर तुमतो स्वर्ग सिधारे ।
आजाओं फिर एकवार जन–जन के तुम प्यारे ।
त्याग,तपश्या राम भक्ति से राम दरश थे पाये ।।
तुलसीदास जी अमर रहो तुम तुलसी मॉ के जाये ।
आज विनय इतनी सी मेरी ध्यान लगा सुन लेना।।
तुम्हारी कृपा से राम भक्ती पायें यही दुआयें देना ।

# ।। लक्ष्मी बन्दना ।।

महा लक्ष्मी धन की देवी, तुमको सतसत बार नमन ।
तुमको पाकर हर जन झूमे खिल उठता है सब का मन।।
धीरे सिन्धु में हरिकी सेवा करके यह वैभव पाया।
जन –जन का मन आतुर है पाने को तेरी माया।।
राजा से तुम रंक बनाती,रंको को करती राजा।
पता नही कितनों का बजा दिया तुमने बाजा।
महालक्ष्मी पूजन तेरा, चिन्त शान्त कर देता मेरा।।
सुगन्ध पुष्प, दीपों की माला, अर्पण मैंने सब कर डाला।।
महा महिम सुन विन्ती मोरी करू सदा आरति में तेरी।।
घर मेरे ऑ मां वस जाना, नाफिर घर से जाना।।
में भी एक निर्धन जन हूॅ धन देवी मुझको अपनाना।।

# ।। भावनाओं का संसार।।

## समय का फेर

समय का क्या ठिकाना, कब किसे कहॉ पहुॅचाये।
समय चक्र हम, तुम, सबको बडे बडे ही नाच नचाये।
समय का अन्तराल भी स्नेह दर्शाता है।
सच है, अपनों के साथ मजा आता है।
भावनाओं का जोड भी वे जोड है।
भावनाओं में भी होता नया–नया मोड है।
हास्य,व्यंग,श्रृगार में भी भावनाओं की देखें भलक,
भावों से चलते हाथ, पैर नयन, और पलक।
भावनायें जब भी दुरभावनाओं में वदल जावें।
तव दूर भावनायें ही इन्सान को दुश्मन बनावें।
प्यारे भाइयों भावनाओं के मंत्र कों समक्ष जायगा।
सच मानिये भवनाओं से ही भगवान भी मिल जायगा।
स्नेह,प्यार, धर्म, नैतिकता सभी में भावना प्रधान है।
भावनाओ के बने जाल का नाम ही जहान है।

# ।। बसंत ।।

बसंत आ गया, नशा छा गया।

आम, महुआ टेस फूले।।

मद मस्त होकर भोरेंझूलें।

कुहू कुहू कर कोयल  बोले।।

बसंती हवा संग जिया मेरा डोले।।

छनक,छनक बाजत कहि पायल ।।

बसंती हवा से जिया मेरा घायल।।

मद मस्त होकर सारी धरती ।

नाच रही मानो छम–छम करतौ।।

गेहूॅ में आई सुनरही वाली

क्या कमहै सजनी की लालीं।।

बसंती हवा में ऐसा नशा है। बसंती हवा से न कोई बचा है।

# ।। होली ।।

रंग रंगत तन, रंग रंगत मन।
रंग पडत तन , रंग वढत मन।।
भिडत तन में रंग , बाढत नई उमंग ।
गौरी आतुर हो, पिय पर डारत रंग।
मनकी नई उमंग, नये मोसम के संग।
घटत ही शीत, बाढी अतिप्रीत।
प्रकृति की वहार खिलत पात पात।
लगत प्रकृति हो, पियके संग।
लागत प्रकृति ने घोल दिया सब रंग।
झूम रहा मिलने धरती से आकाश।
इस मोसम में बुझेगी अब प्यास।
जो पास नही है वह मन मै उदास।
होली की रंगीन चादर।
हर मन में भर रही उल्लास

# ।। नवरात्री ।।

नवरात्री महोत्सव हम मना रहे है।
पूजन विधिवत करा रहे है।।
मॉ की भूरत कितनी प्यारी ।
सारी दुनिया से है। न्यारी।।
शान्ती दयामय निर्मल कोमल।
खुशी विखेरती है पल पल।।
विध्न हरण कर मंगल करती ।
सबकी खाली झोली भरती ।।
धनधान्य सब माता देती ।
नही किसी से मॉ कुछ लेती ।।
माँ की महिमा अपरम पार।
खड़े हुये हम तेरे द्वारा।।
सभी कर रहे मॉ को बन्दन।।
चढा रहे रोली और चन्दन।।
दूव पुष्प, चम्पा, और वेला।।
अगर धूप नारियल केला।।
मेवा भरे थाल हम लाये।।
रत्न वही जो मॉ से पाये।।
शरण तुम्हारी हम है माता।।
जन्म–जन्म का मॉ से नाता।।
पूरी भरदो सबकी झोली।।
तुम्हें मनाउ मॉ मेरी भोली।।

# || गर्मी का मोंसम ||

मई की धूप चलती लपट।
टपक रहा है। पसीना।।
खाना कम बस हवा चाहियें।
ओर ठंडा पानी पीना।।
कनपटी पर पडते थपेडे।
गर्म हवा गर्मी लपेडे।।
दहक रही है बनकर ज्वाला ।
ठोक रही है। सर में भाला।।
पशु पक्षी सब है बेहाल।
सूखे कुये, नदी ओर तालं।।
सडकें सभी पडी सुन–सान।
सुवह शाम आते महमान।।
आम सेक लिमका की वोतल।
बगैर वर्फ नहि चलते होटल।।
साम भये सब पक्षी गाते।
गर्म हवा से छूट न पाते ।।
पंखों से अब गर्मी आती ।
कूल्ड हवा ही सवके मन भाती ।।
सादी की पंगत जब जाते, नही सभी व्यंज अब भाते।।
मई–और जून में सूखा खून।
चलो चलें अब देहरादून ।

# ।। बर्शा का मोंसम ।।

बरसात का मोंसम आया।

बदलों ने पानी वरसाया।।

गर्मी हो गई है। कम।

मिट गये सारे गम।।

पड रही धीमी–धीमी फुहार ।।

वाह, क्या सुहानी वहार ।

धरती हो गई है, हरी भरी और नम।।

पेंड पोधे झूम रहे हैमानों आ गई हो दम।।

बादलों का गरजना, चलने से ठंडी हवा।

चारों दिसा में मस्ती भरी फैल चुकी है फिजा।

पक्षी आपस में चोंचे लडारहे है।

मोंसम का आनन्द और वढा रहे है।

सांप सापोले भी निकल पडे है।

मेंढक और मेंढकी के कदम भी बढें है।

विजली की चमक, और वादलों का गरजना।

सजनी की मुस्कान, और पायलों का बजना।।

कितना अच्छा लगता है यह मौसक ।

गरमी से राहत, और मिट जाते है गम ।

मोज मस्ती करों, आ गया वरसाता का मोंसम।

# ।। दरोगाजी रपट लिखो।।

दरोगा जी रपट लिखो,

दहेज का मामला है।

दुलहन लाल जोडे में जल गई है।

लडके बाले कह रहे है आफत टल गई है।।

लउकी का पिता नही भाई है।

उसकी थोडी सी कमाई है।

भाई रो रहा है। वेहाल है कहो? किसे उसका ख्याल है।

दरोगा जी रपट लिखो,

कानून कही सो गया है।

आदमी कही खो गया है।

शासन असाह है, कोनकी किसे परवा है।

सामाजिक धार्मिक संस्थायों चुपचाप है।

कह रही है पाप के भागी खुद आप है। कहो इसका जिम्मेदार कोंने है?

इस पर सारा शहर मोंन है।

दरोगा जी रपट लिखो ।।

# ।। ट्रान्सफर बीमा।।

कर्मचारी वहनों और भाईयों।
अपना ट्रान्सफर खतरे का बीमा कराइयों।
छिमाही या बार्षिक जैसी सुविधा हो किस्तें भरें।
साल भर आराम से रहें किसी से न डरे।।
यह कम्पनी शासन की देख रेख में चल रही है।
लाखों की संख्या बीमा कम्पनी से पल रही है।
हर शहर में बीमा की शाखायें है।
शासन को इससे बहुत आशायें है।
शाखा के एजेन्ट गांवो तक जाते है।
वही से बीमा की किस्ते भी लाते है।
ट्रान्सफर होना परेशानी से भरा है।
इसीलिये हर कर्मचारी ट्रान्सफर से डरा है।
हमारी मानो इस खतरे को टालो।
किसी वीमा एजेन्ट से तुम भी बीमा करालों।

# ।। इन्टरव्यू ।।

एक सज्जन इन्टरव्यू के लियें पहुॅचे। कमेंटी अध्यक्ष में पूछा आपकी योग्यता क्या है?

कितना पढे है? अपने अशली प्रमाण – पत्र दिखाइये,

फिर जो भी पूछा जावे उसमा सही सही उत्तर बताइये।

सर में भूगोल में स्नातकोतर हॅू।

प्राइवेट स्कूल में पढाता हॅू।

11250 रू वेतन पाता हॅू।

एम0ए0 में गोल्ड मेंडल पाया था,

गोल्ड मेंडल वेचकर सरजी मैने यह सूट सिलवाया था।

टयूशन भी करता हॅू सर किसी तरह अपना पेट भरता हॅू।

अच्छा अब बताइये विश्व में भारत की स्थिति समझाइये?

भारत देश महान, यहॉ सभी धर्म समान।

भारत में अपराध, शिक्षा, जनसंख्या, वेरोजागरी भुखमरी दहेजहत्या,

आतंकवाद, महगाई का प्रतिशत बढ रहा है।

नैतिकता, व्यवहार और आचरण में गिरावट आई है।

बिलासता और भौतिकता विदेशो की तरह बढाई है।

जातिवाद भाई भतीजा वाद,

सम्प्रदायवाद और क्षेत्रवाद के नारे हो गये आम है।

अब हर चौराहे पर विदेशी भदरा के वितके जाम है।

सर और कुछ बताउ और विस्तार से समझाउ नही अब रहने दो,

सामने जो बहिन जी बैठी है उन्हें भी कुछ कहने दों

बहिन जी आइये, इसी या अन्य विषय में आप भी बताइये।

सर में समाज सास्त्र में पी.एच.डी. ळें

व्यूटीपारलर चला रही हूॅ। 5000/ रू प्रतिदिन कमा रही हूॅ।

पति देव मेरे अर्थशास्त्र में पी.एच.डी है। परन्तु में ही उन्हें खिलाती हूॅ।

क्या करू महरी नही आती वरतन उन्ही से मजवाती हूॅ।

आप नौंकरी मुझे नही दे सकें तो, मेरे पति को दीजिये।

प्लीज, मेरे पति की कुछ हेल्प की किजिये।

खाना पकाने से घर का हर काम करते है।

एसी माहनता से हम उन पर मरते है।

आप और आपके पति इन्टरव्यू में पास

आप और आपके पति से हमें है, बहुत आस।

आज पिये बनजाइये,

मेरे घर का साराकाम अपने पति से करवाइये।

# राष्ट्र कवि

जन–जन तुम्हें राष्ट्र कवि पुकारे।
धन्य भाग्य हमारे भूरत वन आज फिर पधारे।।
धर्म भी शाला में सम हो आज आये।
धन्य हो गये हम जो दर्शन आज पाये।।
हमारी प्रेरणा में भी राष्ट्र भक्ति भर दो।
हे राष्ट्र कवि मुझे भी ऐसा बरदो।।
मिटाये भेदभाव सव को गले लगाये।
जो हो दीन दुखी उसे  हम न सताये।।
भारत मॉ की अधीरता कुछ कम हो।
मॉ को तुम्हारे जाने का न गम हो ।।
जातिवाद, सम्प्रदायावाद, वर्ग भेद मिट जाये।
भारत में फिर से खुश हाली छाये।।
जन मन सब आन्लोकित हो जायें।
बस खुश हो राष्ट्रगीत गाये ।
सभी स्वास्थ्य हो लालच, पद लोकपता त्यागे।
हे राष्ट्र कवि तुमसे हम यही दुआ मांगे।।

# ओ रणवीर सहीद महाराणा करता हूँ तुमको प्रणाम

ओर रणवीर सहीद महारणा,

तुमको करता हूँ प्रणाम।।

दुश्मन से कमी हार न मानी।

करने दी न उसे मनमानी।।

जंगल में भी रहकर तुमने कभी न मानी हार ।

करो मेरा प्रणाम स्वीकार ।

ओ रणवीर सहीद महाराणा ।

तुमको करता हू प्रणाम।।

गीत गा रही हल्दी घाटी ।

गर्वित है भारत की माटी।।

तुमने जो भी मन में ठानी ।

पिला दिया दुश्मन को पानी ।।

ओरणवीर सहीद महाराणा है।

तुमको करता हूँ प्रणाम ।

मरे नही तुम अमर हो गये।

चमक रहा तुम्हारा प्रताप ।

तेज पुंज यश गाथायें।

सब तेरे सब आभूषण है।

जो रणवीर सहीद महाराणा तुमको करता हूँ प्रमाण

आलोकिंक आमा को पाकर।

चमक रहे हो स्वच्छ गगन पर। साकर कर दिया तुमने नाता

तुमसे खुश है, धरती माता ।

ओरणवीर सहीद महाराणा।

करता हूॅ तुमको प्रणाम।

# ।।जुदाई।।

आने पर इतनी खुशिया।
जाने से मन है, उदास ।।
कितना अच्छा लगता था।
जब रहती थी तुम मेरे पास।।
मेरे दिल को क्या होता है।
लगता मन ही मन रोता है।।
में समझाता हूॅ नादा दिल को ,
क्यों अधरी अभी से होता है।
दिल तो है, नाजुक सी कलिका
खिलता है आने पर मलिका ।।
मालिका की प्यारी वातों से,
लगता कलिका को पानी।।
अब मलिका के जाने से
कोयल कलिका है मुरझानी।।

# ।।जागो देश भक्त।।

कुछ उदासी कुछ अनमनायन ।
उनमें मची है मक्खियों जैसी भिन्न भिन्न ।।
अपनी अपनी कलां,
अपना अपना दांव पेंच ,
समय मिल गया है । प्यारें
जी भर के खेंच ।।
उपर से नीचे सब एस से नियम।
सभी एक से है नही कोई कम।।
स्वार्थ के कारण हो रही है यह वर्वादी ं।
बापू तेरी रो पडी है यह सफेद खादी।।
मान मर्यादा त्याग करने,
अब होड सी मची है।।
मॉ और वहिनों की इज्जत नही बची है।
हर चीज में मिलावट हर चीज हो गई नकली
देश भक्त जन सेवक मिलते नही अब असली
जागों देश भक्तों जुल्मी को सिखा दो
जुल्म यदि न मिटे तो जुल्मी को सुधार दो।
समय के साथ तुम इन्हें बताओ।
ओ मगर मच्छो देश तुम न खाओ
तुम्हें पडजायेगे जान के लाले ।।
पडजाओ गे जब तुम राष्ट्र भक्तों के पाले।

# वेयादें

होनी तो हो जाती है, पर याद कहॉ से आती है।
दिन मे तो खो जाती है, पर रातो में छा जााती है।
केवल मन का भ्रम है या दिल की पुकार।
इन सवको रहने दो, अब करते है, वातें चार।
याद सदा ही रहती है, वह मन ही मन कुछ कहती है।
जैसे सरिता प्रवाह आवाध गति से वहती है।
याद कहा कब कोंन किसे, किन,किन से मिलता होगा।
क्या इन सब वातों का यादों में है, लेखा जोखा।
लगता है तुम पर भी यादो का साया छाया
यादों के इस चक्र व्यूह नें, रचडाली सारी माया।
मन युक्ता में वसी हुई यह मीठी मीठी वाते है।
पर तुम ना बोलो बोल पडेगी तुम्हारे मन की वाते है।
यादो में सुख, दुख होता, यादो में होती छाया ।
यादें तो बस यादें है, इनकी नही कोई काया।
जगत बनााया जिस प्रभू ने यादें है। उनकी माया।

# सावन की फुहार

रिमझिम रिमझिम, चारो ओर घटा काली
कहॉ चली ओ सजधज कर ।
चम्पल, चपला सी मत वाली।
किस साजन की प्यारी है।
किस के मन को भाई है।
इस सावन की फुहार में।
सजी धजी क्यों आई है।
भोला मुखडा, वडेनयन कजरारे मतवारे है।
लम्बी चोटी, उभरा सा वदन, मखमली तन
कोमल – लाता सी इठलाती किसे ढूडने आई है।
मोंसम की आभा छीड  हुई तेरी शोभा के आगे,
कहॉ जा रही है, सजनी थोडा सा कुछ बतलादे।
बोली चपला में हूॅ, सावन की घटा,
में आई हूॅ, सज धज कर।
मुझे बताओं कहां मिलेगें, प्यारे, शांवरिया सुन्दर।
श्याम सुन्दर से, मिलने को में सजधज कर के आई हूॅ।
कहॉ मिलेगा मेरा पिया,
में पिया के मन को भाई हूॅ।

# प्रजातंत्र की दशा

आधी और तुफान से भूचाल धराधर आती है।
भूखे नंगे, कमजोर, जनों को कहा मिली आजादी है।
जतिवाद ओर सम्प्रदायवाद से किया हुआ वटवारा है।
क्या यही धर्मप्रद देश भारत वर्ष हमारा है।
प्रजातंत्र को गले लगा कर क्या सपना साकार हुआ।
जाकर पूछो दुखी जनों से जो उनसे व्यवहार हुआ।
लुटती, अस्यत, पिटते गरीव जाके देखो,उन्हें करीव।
क्या अहसास तुम्हें इन वातों का।
दुश्मन जैसी प्रति घातो का।
न्याय विका है, सस्तेदाम, अफसर क्या क्या करते काम।
नैतिकता, व्यवस्था और चरित्र, देखलो आज है कितने पवित्र।
शहरों में कितना आराम ।
गन्दे नाले, मच्छर कर रहे है।
काम तमाम पुलिस प्रशासन कितना सच्चा ।
जान गया है, बच्चा बच्चा ।
सस्ता राशन और सस्ता पानी।
नही रही कोई हैरानी, अपराध हो गये है कितने।
कम शराव पीकर मिट जाते है सारे गम ।
वच्चे, बच्चिया कितनी सुरक्षित सुरक्षा।
हो रही कितनी चर्चित।
नही मिलावट धोखे वाजी, अच्छी व्यवस्था में सब ही राजी।
भाई यह प्रजातंत्र है।
यहाॅ हर कोई स्वतंत्र है।

# कुर्सी है करामाती

उछल कूद कर नाच कराती ।

ग्रह कलह घर में करवाती, कुर्सी है। करामाती।

कुर्सी से चलता शासन, कुर्सी से बंटता रासन।

कुर्सी बाटे भाई चारा,

कुर्सी है करामाती ।।

कुर्सी सब को यह बतलाती,

तुम मुझ पर बैठै हो, पर में तुम पर भारी हूॅं।

कितने ही अन्यायों को सहकर भी ना हरी हूॅं।

कुर्सी है करामाती।।

हर कोई पाने को आतुर कुर्सी का चमत्कार ।

कुर्सी के चक्कर में मचा है कितना भारी चीत्कार। कुर्सी है करामाती ।

कुर्सी सब को मन भाती ।

कुर्सी क्या क्या खेल कराती ।

कभी मित्र को शत्रु बनाती ।

कुर्सी है करामाती।

कुर्सी पर बैठे राजा।

कुर्सी पर बैठे मंत्री ।

कुर्सी पर बैठै अफसर।

कुर्सी पर बैठे यंत्री ।

बुध्दिमान का मन हरलेती।

उठापटक का मंत्र भी देती।

गुटवाजी मन में ले आती।

पार्टीयों में घात कराती ।

कुर्सी है, करामाती।

रात में ना सोने देती ।

याद आत ही चित हर लेती।

कुर्सी है करामाती ।

# नेताजी के वादे

खेतों में सरसों फूली, मोसम भी अब मर्जीका ।
अवतो शासन अपना ही है, काम करो अब मर्जीका।
सरकारी सेवक वदल दूगा, अपनी मर्जी के लगाउगा।
तुम भी प्यारे मिलकर छानों, दूध मलाई खाउगा।
कोन मुझे नेताजी कहता, किस किस को मेरा भय रहता।
तुम सब जाके देखो प्यारे, कोन कहा किससे क्या कहता ।
कुछ भी सुनलो फोरन आना, फिर आकर के सब बतलाना।
फिर बदलूगा उनको चुनकर, नई योजना मन में गुनकर।
धनुआ का जो पोता था, पहले कपडे धोता था।
बना दिया मैंने नेता, अब आय हजारों की देता।
किये हुये है, हमने वादे, विल्कुल ही है, सीधे साधे।
गरीवी, और भ्रष्टाचार, दूर करूगा अत्याचार ं।
वेकारी सब दफा करूगा दूगा सबको रोजगार।
दूर हुई अब भ्रष्टाचारी, फिरती है, भारी भारी ।
मेरा घर तो शरण स्थल है, शरण लिये है तो प्यारी ।
वेकारी अब दूर हो गई, दूर कर रहा हूॅ भ्रष्टाचार ।
धन दौलत अम्वार लगा है, भाई लोगो करो विचार।

# एक शराबी का रात का सपना

तेरी पतली कमर ही पकड़ूगा।

अपनी वाहों में जकड़ूगा।

तुम्हे एक नजीर ऐसी दूगां।

जो तुम्हारे लिये तोहफा होगा।

पर तू तो खमोश है, आहें भर रही है।

पर भूकता क्या चुप हैं, सब कुछ कह रही है।

तेरी आहों का कटीली निगाहों का अहसास मुझे हो गया है।

में जगा रहा हूॅ, जो जवानी का नशा कही खो गया है।

पर जगांउ क्यों तू तो अभी भी खामोस है।

अरे अब समक्षा तू नशे में बेहाश है।

कही में तो नशे में नही हूॅ । क्या में अपने आप में सही हूॅ।

में नही उसे जो बेहोशी और नशा छापा है।

वस उसी नशे का मेरे उपर भी साया है।

फिर मेंने कहा ओर करीब आओ

में तुम्हें बचालू तुम मुझे वचाओ।

उसने मुस्कारा का सहमति दी। फिर मैने भी अपनी मनमानी की ।

सुबह  हो चुकी थी, में जाग गया था।

रात का वह सपना भी अब भाग गया था।

# सर्विस

मैं तुम्हारा प्रीतम हूॅ।

पर उसका तो नोंकर हूॅ।

तुम हमारी हो जरूर ।

पर में उसका हूॅ।

तुम मुझे न छोडो,

पर में उसे ना छोडूगा।

तुम मेरे पीछे दौडो,

में उसके पीछे दौडूगा ।

वह मुझको जो देती है,

में तुमको तो देता हूॅ।

वह तुम्हारी सौतन है,

में भी तो यही कहता हूॅ।

पर क्या करू

वसे अधीन उसी के रहता हूॅ।

# नन्ही फुलवारी

एक थे जोशी ओर उनकी रानी।

नई नवेली मस्त जवानी ।

मस्ती भरी मस्त मस्तानी ।

ऐसी प्यारी प्यार कहानी।

नन्हा फूल खिला उपवन में ।

जैसे हो दीपों की रानी ।

जग भग जग भग प्यारा दीपक।

करने लगा वह खूव प्रकाश।

धरती झूमी,झूमा आंगन।

धर की बघिया और आकाश।

रहते थे वे कभी मेरे पास।

कितना सुन्दर है, फूल वगिया का अहसास।

# सादी के फेरों के हशीन सपने

सेच रहा हूॅ सादी करलू, अपने अरमानों को भरलू।
वडी सुहानी रातें होंगी, मीठी मीठी वातें होगी।
सपने मेरे पूरे होगे, वादों में सोदा होगा।
नन्हा सा एक फूल खिलेगा जो आगे पैदा होगा।
पालूगा उसे लाड प्यार से, चूमेंगे उसको पल पल।
दिख जाये जब उसकी मॉ मच जायेगी दिल में हलचल ।
मुस्कान भरी वह प्यारी सी जब पास मेरे आ जायेगी।
मीठीसी अगडाई लेके जब याद मेरी इठलायेगी।
तब मे दुनिया को बतलाउगा, सादी तो आजादी है।
थका हुओ में खिल जाउगा, उसके दिल से मिल जाउगा।
तुम से कहता तुमभी सुनलो कोन कहे वरवादी है।
प्यार भरा मन थामें रहता, मेरा मन मुझ से ही कहता ।
सदी करना सोच समझकर, लगते पूरे सातो चक्कार
सतों चक्कर सुनलो भाई
नई दुल्हनियो घर जब आई।
मकान तो नया बनवादो भाई।
आते ही फरमाईस सुनाई ।
जल्दी से राशन लाना।
तभी बनेगा रात का खानां
मैंने मन में सोचा जाना।
वह सुनती थी बेठके गाना।

मै। आया राशन लेकर।

फिर शुरू हुआ दूजा चक्कार।

सर में दर्द कमर में टूटन।

पीडा ने वैचैनी करदी।

उस महरी को जाके देखौ।

जिसने मुझसे हामी भरदी ।

उस महरी को ढूडूगा, बतलाओ मुझे उसका घर ।

दवा लाउ पहले तुमको, हाथ भला मैंने सर पर ।

वीते दिन और वीती राते,

कहा गई वह मीठी वातें।

सोचा मैंने कन को कस कर ।

रूका नही वह तीजा चक्कर।

तीजे मे सब पाया था।

नन्हा मुन्ना आया था।

खुशी हुये हम दोनो मिलकर।

अब सुनलो आगे के चक्कर।

नन्हा थोडा सोता थां।

गोद न लो तो रोता था।

लिये हुय हम उसको घर पर ।,

फिरते थे अन्दर से वाहर।

दूमर है, खाना बनपाना।

जल्दी आफिस से घर आना।

लेट हो गये घर आने में

तब वीवी मारेगी ताना।

अब समझे शादी के वादे ।

बिल कुल है, सीधे साधे

वादों को में निभा रहा हूॅ

बच्चों को में खिला रहा हूॅ।

बच्चा रोता चुप ना होता, जब भी थोडा सोता

में फिर से सपनों में खोता

प्यार भरी मुस्कानों से तू भरदे मेरी झोली ।

बच्चा सोता जब ना रोता दे देता उसको ओली।

अब सोच रहा हूॅ कब आये रंगों की होली ।

तभी याद आते ही आकर मुझ से बोली।

बनारसी साडी लाना, पिक्चर भी मुझ को जाना।

यू जना क्या देख रहे हो,

जल्दी से वायस आना।

अरमान मेरे थे फौलादी, जो बने हुये हैं अंगारे ।

राते कैसे वीतेंगी जब दिन में ही निकले तारे।

अरमानों की प्यारी होजी, जाने कब से जला रहा हूॅ।

अब ना पूछो वे सव बातें आगे की अब छुपा रहा हूॅ।

# शक्ति का स्वरूप

भौतिक बस्तुयें, किसी शक्ति के द्वारा गतिशील होती है। स्वयं भोतिक बस्तुये गतिशील नही होती है। अधिक शक्ति शाली अधिक से अधिक क्षेत्र को प्रभावित करती है, इसी के उदाहरण है– ऑधी, तूफान, महामारी, प्रलय यह सभी उच्च शक्ति से सम्पादित होती है, अब जानने वाली बात यह है, कहा? कव, तथा किन हालातो मे यह शक्तियां क्रियाशील होती है। तथा इन शाक्तियों पर किस चीज का प्रभाव पडता है। जिससे प्रभावित होती है। अगर यह पता लग जाय तो हम, प्राकृतिक विपदाओं पर काबू पा सकते है।

या निम्न शक्ति द्वारा किये जा रहे कार्यो को उच्च शक्ति द्वारा रोका जा सकता है।

हवा,आधी, तूफान, वर्षा तथा ग्रहण आदि पर आन्तरिक्ष ग्रहो की गति तथा अन्य क्रिया कलापों का प्रभाव पढता है।

अर्थात सभी भौतिक बस्तुयें, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ग्रहों से प्रभावित होती है ज्योतिस विज्ञान भी इस वात की पुष्टि करता है।

अतः हमें यह पता लगाना होगा कोन सी बस्तु कब किस ग्रह से कितना प्रभावित होगी, तथा उसका क्या परिणाम होगा । तथा इस प्रभाव को कैसे रोका जावे।

# संघर्ष में शांति

आज भावनाओं को स्थान कहा है स्वर्थपरिता, संकुचित विचार धारा, ध्रणित विचार, नैतिकता का पतन जैसे रोग समाज में अन्य संक्रामक रोगों की तरह फैल रहे है।

शुध्द भावनाओं के लिये शुध्द बातावरण चाहिये हमारे चारो ओर समाज में वातावरण दूषित हो गया है। प्राचीन काल में कई त्यागी महापुरूष हुये है। जिन्होंने त्याग, मर्यादा, धर्म नैतिकता परोपकार, जन हितेसी कार्य किये तथा सनातन धर्म की मर्यादा की रक्षा की ।

त्याग किया था राजा दशरथ ने धर्म हेतू प्राणों का राजा राम ने राज्य का , भाई भरत, लक्ष्मण तथा माता सीता ने अपने, अपने , सुखो का।

वेद, पुराणों, तथा धार्मिक अन्य ग्रन्थों जैसे रामायण, भगवत गीता, श्रीमदभागवत आदि का पठन, पाठन ना होने तथा धर्म मर्यादाओं के ना मानने व अनुभव सिध्द पुरूषों के मार्ग दर्शन का आज अभाव होने से समाज आज विनाश की राह पर चल रहा है।

रामजी ने जीवन भर संघर्ष किया। संघर्ष के साथ संगठन की कला के बल पर राम राज्य स्थापित किया। संगठन दिखावा का मात्र नही था आन्तरिक प्रेम द्वारा जुड जाना तथा अपने से अधिक अपने संगठन को ही महात्व देना प्रमुख गुण था।

अतः आन्तरिक प्रेम द्वारा जुडा हुआ संगठन संघर्ष द्वारा विजय हांसिल कर रामराज्य स्थापित कर शान्ती को प्राप्त करता है।

# हीनभावना एवं वाह सोन्दर्भ अशांति का कारण है

वीते सयम को सोचना बुध्दिमानी नही है। आप कभी पुरानी बातों को सोचकर हीन भावना को जन्म न दें। जो हो गया उसे क्या सोचना। भविष्य जिसे देखा नही उसके वारे में सोचना भी व्यर्थ है। अभी– आप को वर्तमान चल रहा है। जिसके वारे में सोचना आवश्यक है। अपने सुन्दर विचारों से महनत ज्ञान के द्वारा वर्तमाना मे कर्तव्य के पथ पर दृढता से बढे।

भटकाव आपके जीवन की सुन्दरतो को हानि पहुॅचा सकता है।

रूप से प्यार करना भूल हो सकती है। यह प्यास है प्यार नही।

एक स्त्री का गहना लज्या है, तथा चरित्र सुन्दरता में चार चॉद लगाता है। शरीर की कोमलता से अधिक वाणी में कोमलता होना आवश्यक है। बदन की कोमलता होने पर यदि वाणी कठोर है। तो सुन्दर बोतल में भरी तेजाव के समान है। मनुष्य के अन्दरहीन भावना दुश्मन की भांति है। व्यक्ति का विाकास रूक जाता है। तथा पतन होना प्रारम्भ हो जाता है घृणा, विरोध, अलस्य भुजलाहट भावना ही है।

दुनियां के स्वार्थ को देखकर मत घवराओं सुदृढ, विचार, सकारात्मक सोच, महनत सदकर्म नैतिकता, सदग्यान आदि से ही हम आगे बढते है।

अतःहीन भावना एवं वाह सोन्दर्य से सजग रहें । एवं अशान्ती से बचें।

# शुध्द आचरण मन को शांति देता है

परिस्थितियां सदैव एक जैसी नही रहती तथा विचार भी समय के साथ बदलते रहते है। कभी कठिन परिश्रम से सफलता नही मिलती कभी थोडे ही परिश्रम  से सफलता प्राप्त होती है।

मन में शान्ती धारण करके अफलता को भी सफलता में बदल सकते है। प्रतिकूल होने पर विचलित नही होना चाहिये।

हमारे अनुकूल होने पर प्रशन्नता बढ जाती है तथा मन पर अनुकूल प्रभाव पडने से हम सुख अनुभव करते है।

हमारे शरीर में रसायनिक क्रिया होती हैं तथा अन्ताश्रावी ग्रन्थियों द्वारा हार्मोन श्रावित होते रहते है, उनकी अल्प मात्रा हमारे मन पर प्रभाव डालती है रासायनिक क्रिया हमारे विचारों से प्रभावित होती है प्रशन्नता में अलग हारर्मोन वन्ते है। तथा क्रोध में अलग कार्य, व्यवहार, सोच, खानपान, संगति का हमारे जीवन पर अनुकूल प्रतिकूल असर पडता है

अतः हम जैसा सोचेंगे विचार करेंगे संगत करेंगे हमारा जीवन उसी के अनुरूप पर लाक्षित होगा। श्रिषि , मुनि, योगी, बैरागी आदि धनवान नही होने  पर सुखी रहते है यह सब सोच, विचार, खानदान, संगत तथा नियमों के पालन से होता है हम भी अपने जीवन को सुखमय बना सकते है। अपने शुध्द विचारों द्वारा।

# ।। गणपति बंदना ।।

गईपे गणपति जग बन्दन ।

शंकर पुत्र पारवति नन्दन।।

नाम तुम्हारा सदा सुख दाई।

सभी सन्तन मिल करी वडाई।।

गईये गणपति जय जग बन्दन।

शंकर पुत्र पारवति नन्दन ।।

विपदा सभी कष्ट हर लेते ।

जीवन में सब मंगल देते।।

गईये गणपति जग बन्दन।

शंकर पुत्र पारवति नन्दन।।

विध्दा दान सदा तुम करते ।

विधा धन से झोली भरते ।।

गाईये गणपति जग बन्दन ।

शंकर पुत्र पारवति नन्दन।।

असुर सदा तुमसे हे डरते ।

देव सदा इस्तुत सब करते है।।

रिध्दि सिध्दी के हो तुम दाता ।

भक्त जना के भाग्य विधाता ।।

गईये गणपति जग बन्दन शंकर पुत्र पारवति नन्दन ।

फूल पान और लिये सुपारी ।

लडडू मेवा काजू सभ्हारी ।।

भोग लगाते करके बन्दन ।

गईये गणपति नन्दन।

शंकर पुत्र पारवति नन्दन।।

विनय करत है दास तुम्हारा ।

सुख मय करदो यह संसार ।।

गईये गणपति जग बन्दन।

शंकर पुत्र पारवति नन्दन ।।

अपनी अमर लेखनी देकर।

शब्द अमर मन मे भर देना।।

शब्द प्रकट हो जब भी मन में।

सुख चैन रहे दिन रैना।

गईये गणपति जग बन्दन

शंकर पुत्र पारवति नन्दन।।

# प्रेम से ही भगवान मिलते है।

रामहि केवल प्रेम पियारा।

जान लेहु जेहि जानन हारा ।।

पोथी पढ पढ जग मुआ।

पंडित भयान क्रोध ।।

ढाई अक्षर प्रेम का पढे सो पंडित होय।।

प्रेम जगत का सार है।

विना प्रेम कछु नाह । माया ठगनी जानिये।

जायें जग भर माह।।

प्रेम उपज तेहि हियन में

सारे दुख मिट जाता ।।

मन लगा के अब सुनहु।

परम प्रेम की वात ।।

प्रेम दिव्य पवित्र है।

शुध्द न कछु अभिमान,

न अहंकार न स्वार्थ हो,

प्रेमह तत्व पहिचान

मन मोहन का रास ही ।

प्रेम तत्व अनुभूति ।

प्रेम सदा ही शान्ती है।

जीवन में अहसास ।।

प्रेम तत्व से आत्मां

प्रभु से देते मिलात ।

रामहि केवल प्रेम प्यारा।।

यह बात जानत जग सारा।

जब प्रेम प्रागाढ हो

भक्ति रूप ले लेते ।

भक्ति हृदय में बैठकर

कृष्ण दरस करलेत ।

कृष्ण दास की लालसा।

जब अग्नि ज्वाड बन जात ।

कृष्ण चरण की बन्दना,

और जग में कछु ना सुहात।

# आंतरिक्ष की शक्तियों से समाज कल्याण एवं विकास

आंतरिक्ष में अनेक सुक्ष्म शक्तियों की धारायें प्रवाहित हो रही हैं यह सुक्ष्म धारायें अत्यन्त शक्तिशाली है। उर्जावान हैं हमारी पहुॅच से बाहर, और सामान्य दृष्टि से परे होती है। उन शक्तियों की प्रकृति एवं प्रभाव भी अलग–अलग होते है।

उन शक्तियों को आकर्षित करने के लिये एक विज्ञान विधान एवं विशिष्ट प्रक्रिया यें होती है। जिसे हम कर्मकाण्ड कहते है। कर्मकाण्ड के द्वारा यह दिव्य शक्तियों आकर्षित होती है इन शक्तियों को आकर्षित करके मानव कल्याण हेतू श्रेष्ठ अस्थाओं को समाज मे स्थापित करना होना चाहियें। हमारा धर्म सानातन है। हमें यही शिक्षा देता है। धर्म के माध्यम से हमारे जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान संभव है। तथा जीवन का सर्वागीण विकास भी संभव है।

हमारे शरीर, इंद्रिया और मन पर,

जन्म, औसधि, मंत्र, तप एवं समाधि इन पाँच कारणों से विलक्षण भ्रभाव होते है।

इन पांच के द्वारा हम विलक्षण शक्तिया व सिद्धिसे पूर्ण हो जाते ह।

तथा कई विलक्षण तथा आश्चर्यकारी कार्य सम्पन्न किये जा सकते है।

चित में विलक्षण शक्तियों, सिद्धियों को धारण किया जा सकता है।

इसके लिये चित्त को कर्म – सस्कारों के बन्धन से मुक्त होना चाहिये।

यह सव योग साधना के द्वारा संभव है। हमारा ध्येय अर्थात जिसका हम योग साधन द्वारा ध्यान करते है वह हमें कर्म व संसकार से मुक्त कर दे।

सिद्ध योगी व अवतारी पुरूष जिन्हें हम महा मानव कहें तो सही होगा। हमेशा हर स्थिति में जागृत व सजग रहते ह। वह कभी भी भूल नहीं करते। यदि अनजाने में भूप हो तो परिमार्जन कर सकते है। भक्ति मन के मैल धोती स्चच्छ बनाती है।

भक्ति की प्रगाढता मन की मलिनता को धुलती हैं चित्त निर्मल हो जाता हैं इस अवस्था में जीवन का सत्य दिखाई देता है भक्ति में किसी विधि या प्रणाली की आवश्यकता नही भक्ति जीवन का अंतिम सत्य है।

# भावनात्मक भटकाव कैसे रोका जाये

हर प्राणी प्यार, अपनापन, आत्मीयता तथा स्नेह पाना चाहता है।

प्यार अपनापन आत्मीयता तथा स्नेह के अभाव में व्यक्ति उन्यादी उदासीन, हिसक, क्रोधी होकर अपराध की दुनियां में विचरण कर समाज को देश को कष्ट पहुॅचाता है। एवं अपने अमूल्य जीवन को गलत दिसा में मोडे लेता है।

आज के युवाओं में यह भटकाव का मुख्य कारण भावनात्मक अतृप्ति ही है।

भावनात्मक भ्रान्तियों में भटकाव असंख्य युवक–युवतियां हर साल मनोरोगों का शिकार होते हैं, तथा कुछ लोग अत्मा हत्या जैसे कदम उठाते हैं यह समाज के लिये हानिकारक हैं बुध्दिजीवियों , मनो विज्ञानियों मनोचिकित्सकों तथा हमारी सरकार को इसके कारण एव निवारण हेतू सार्थक प्रयास करना आवश्यक है। साथ ही धार्मिक संस्थाओं द्वारा मानव कल्याण हेतू शिविर लगाकर नव युवाओं को भावनात्मक भ्रातियों से वहार निकाल कर मानव मूल्यों एवं नैतिकता का पाठ पठाना समय की मांग है।

जब हम स्वंय को अतृप्त महसूस करते है। तो तृप्त समाज कैसे बनेगा, आज की युवा पीढी में भावनात्मक दूरियां बढने का कारण माता– पिता तथा समाज तथा वर्तमान शिक्षा पध्दति द्वारा अपनी जवाबदारी को ना निभाना है यदि युवा पीढी को प्यार, अपनापन आत्मियता, स्नेह मिले तो भावनात्मक रूप से द्रढ होकर नवीन राष्ट निर्माण की ओर बढसकेंगे।

# रात्रि 4 बजे भजन का प्रभाव

भजन करू दिन रात

मन को लगालो हरि चरणो में ।

बन जाये सब बात।

भजन करू दिन रात।।

दर्शन पाये आज सपने में ।

करूणा कर का आज।।

में तो भजन करू दिन रात ।

सोवत पायो सुक को संगमें ।

चरण पकड लियें रात।

में भजन करू दिन रात।

नजर ओरछा प्रभु बिराजत ।

भक्त बक्सल है नाथ ।।

भजन करू दिन रात ।

भजन करू दिन रात।

चरण बन्दना प्रभू की कीजे ।

कृपा सिधु रधुराथ।

भजन करू दिन रात।

प्रथम मनाउ जनक ललीकों।

जिन्ह की कृपा भई आज।

बिना मात की कृपा न पावे।

हरि दर्शन का साथ ।

भजन करू दिन रात।

में भजन करू दिनरात ।

कुअर बाबा है अश्व विराजत।

करूणा, निधि के पास ।

कुआर वावा हे। भजन कर रहे,

हरि दर्शन के साथ ।

में भजन करू दिन रात।

सोवत देखो जनक लजी को।

प्रभु चरणों के पास ।

टेढे होकर प्रभुजी सोते

जगत निहारत जात ।

सोते में भी कृपा बरसावत

सुक को लेकर साथ ।

में तो भजन करू दिन रात।

सब बनजयगी बात ।।

# शब्द ब्रम्ह में ईश्वर

मारा मारा क्यों फिरता, मन से रहत उदास।
याद करों तुम हृदय से, सदा तुम्हारे पास
शब्दब्रम्ह को जानियें मन में कर विश्वास ।।
शब्द ब्रम्ह में हरि रमें।
शब्द हरि का बास।।
शब्द ब्रम्ह के नाद की महिमा बडी विशाल।।
शब्द ब्रम्ह के पास में, हें कलहु के काल।
ऊँ शब्द में रम रहे, ब्रम्हा, विष्णु, महेश।
ब्रम्ह को जानियें अनादि श्रृष्टि का शेष ।।
राम शब्द में हरि बसे।
यह शब्द जपो धर ध्यान।
राम शब्द को जानलो
यह वेदों की ही जान ।।

# श्री द्वारकाधीश शरण

सुनहु द्वारिकाधीश शरण में तेरी।
आ जाओं अब दरस करादों क्यों करते हो देरी।
बडी दूर से दर्शन करने, धाम द्वारका।
आया धन्य हो गया भाग्य हमारे दिव्य दर्श दिखाया।
अब कृपा बरसाकर निर्मल भक्ती देना।
सदा कृपा बरसाकर, दर्श दिखाते रहना।
हर दम विगडी बात बनाते।
भक्त जनो को गले लगाते ।।
सब की मन्सा पूरण करते।
सबकी खाली झोली भरते।
भक्त जनों का काम सम्हारा।
जगत पिता हैं, नाम तुम्हारा।
सुनहु द्वारिका धीश शरण में तेरी।
आजाओं अब दरस करादों क्यों करते हो देरी।
दर्श तुम्हारे पाकर के हम निर्मल भक्ती पाते।
जब निर्मल भक्ती मिल जाये तब भव सागर तर जाते ।

# प्रभु सुमरन से सभी कार्य वन्ते है

प्रभु आप की कृपा को में

मन्द समझनही पाया ।

वार वार आकर सपनों में, सुन्दर दर्श कराया

माया के इस चक्र व्यूह में, फसा हुआ इन्सान ।।

बार–बार आकर प्रभु फिर भी, दर्श सिखाते ज्ञान ।।

भव के रोग मिटाते प्रभु जी, बीमारी सब भागे ।

प्रभु के दर्शन पाकर के, सोई आत्मा जागे।

कर्म वन्धन सब कट जाते है, प्रभू सुमरत मन जाके।

मन आत्मा प्रफूलित होती प्रभु संत संग में जाके ।

सत दरश जब जब होवे, समको सुख है साथ ।

भववाधा सब मिटने बाली,दर्श दिये रघुनाथ।

गाय को मनमें माता समझो यही सत्य हैं वातं

गाय की सेवा करने से, कटे अंधेरी रात।

परहित सेवा भाव समझ कर,

करते रहना काम।

सेवा भाव समझ बजरंगी बस में कीन्हे राम।

राम का सुमरन मन से करतई पाप कटे ।

जब भी समय मिले, मन मन ही रामई राम रटै।

यह आत्मा अविनाशी, प्रभु दर्शन की है प्यासी।

मन बिरथा क्यों भटक रहा पास तेरे अविनाशी।

भागवत कथा सुनन समझन  से होता तत्व ज्ञान।
मन अब तू मत भटके तुझे मिल गई सुख की खान ।

# गोविन्द बन्दना

हे गोविन्द हे गोपाल,
हे मन मोहन, हे नन्द लाल ।
तेरी माया विकट विशाल,
हे गोविन्द , हे गोपाल।
हे मन मोहन हे नन्दलाल ।
तनमन सोप दिया है तुमको,
तुम रखना मेरा ख्याल।
हे गोविन्द हे गोपाल,
हे मनमोहन, हे नन्द लाल।
मुरली मधुर बजाओ,
प्यारी सी तान सुनाओ ।
राधा संग रास रचाओ,
रास के दर्श कराओ ।
तेरे नयाना वडे विशाल ,
हे मन मोहन हे नन्द लाल।
साथ में सखिया नाचें ,
ठुमका दे दे ताल ।
आनन्द उमंग चहुओर दिखे,
होवे जनम निहाल,
हे गोविन्द हे गोपाल ।
हे मन मोहन हे नन्दलाल ।

पहने बैजन्ती माला,

सुन्दरता करत कमाल।

माथे पै मोरनी बाधे ,

कम्मर पीताम्बर साधे ।

धिक, धिक ताथईया नाचें,

मेरे मन को करत निहाल ।

हे गोविन्द, हे गोपाल,

हे मन मोहन, हे नन्द लाल।

# प्यारे सांवरिया की याद

मन में आन बसो, मेरे प्यारे सांवरिया ।

सारे दुख दूर हुये जब तुमको याद किया ।

गोपी मन भा गई जब बाज तेरी बसुरिया ।

राधा संग नाच रहे, बाजे तेरी पैजनिया ।

घायल हो गयो रे, मेरे अन्तर का मनिया।

मन मे आन बसो, मेरे प्यारे सांवरिया।

सरे दुख दूर हुये, जब तुमको याद किया ।

मेर मुकुट पीताम्बर साजें, कमर में कर धनिया ।

ब्रम्हा, शिव जब ध्यान धरें मोहित मोहनिया ।

श्याम छटा अति मोहनी मूरत ।

चन्द्र घटा में अति हो शोभित ।

ध्यान धरें जब प्यारी छविकी ।

मेरे मन हो गया मोहित ।

मन में आन बसों मेरे प्यारे सांवरिया ।

सरे दुख दूर हुये जब तुमको याद किया ।

अखिया बरस रही , तेरी देखी मूरतिया।

मन में आन,बसो मेरे प्यारे सांवरिया ।

सरे दुख दूर हुये, जब तूमको याद किया।

# बाके विहारी के लाल बाल रूप दर्शन

गये ब्रन्दावन दर्शन करने बांके विहारी नाथ।
ब्रन्दावन के अनमोल कृष्ण भी थे मेरे साथ।
बांके बिहारी ने मन्दिर में चमात्कार दिखलाया।
एक छोटा बालक बनके फूलों को बरसाया।
में अति मन्द यही समझा,
यह बालक है नटखट।
जब दृष्टि से ओ फल होकर,
समा गया बह सर पट ।
5 अक्टूवर 2019 को मैना भूल सकूगा।
जब तक घट में प्राण रहे,
में उनका नाम रटूगा।
श्याम सुन्दर तुमसे मिलकर कुछ, बात नही हो पाई ।
दर्शन देकर ओझल हो गये
थोडे पडे दिखाई
दिन रात का चैन छिना,
तुम मन्द मन्द मुस्काते ।
आंखें मूदू तुम ही तुम हो ।
मन में दर्शकराते ।
ना जाने कब आये वह घडी ।
जब तुमसे हो बात ।
दर्श दिखाकर चले गये ,

ऐसा क्यों रघुनाथ ।
मेरी भक्ति कम ना होवै ,
बढे दिन और रात ।
आओ मोहन प्यारे बनके ,
थोडी करलो बात ।

# विपदा हारी की याद

हे दुख भंजन, मुनियन रंजन ।
करहु कृपा हे नाथ, तुम हो दीनन के हितकारी ।
अब राखो लाज हमारी, रामा रखो लाज हमारी ।
जब जब कष्ट पडे भक्त पर, पीर हरत बनवारी।
हे दीनन के हितकारी, तुम राखो लाज हमारी।
रामा राखो लाज हमारी ।
कष्ट हरे सब गौतम नारी, तुम हो विपदा हारी ।
तुम दीनन के हितकारी, अब राखो लाज हमारी ।
रामा राखो लाज हमारी ।
अरज करें सब मिलकर तुम से,
हरलो विपदा सारी ।
तुम दीनन के हितकारी, अब राखो लाज हमारी ।
ओ मेरे बनवारी, ओ मेरे बनवारी ।
अरज सुनी तुमने मीरा की, टारे संकट भारी ।
तुम दीनन के हितकारी , ओ मेरे बनवारी ।
अब राखो लाज हमारी रामा राखो लाज हमारी ।

# कोरोना संकट निवारण विनय

कोरोना संकट बन बैठा महामारी ,
इस संकट को देख दया निधि
दया करो गिरधारी ।
तुम दीनों के नाथ कहाते, दीनों पर संकट भारी।
सुन्दर प्यारी दुनिया की उजड रही फुलवारी ।
अब तक कोई समझा है ना, कैसी है महामारी ।
अद्रश्य कटीले कोरोना का सोर मचा है भारी ।
मानस मनमें भय और दुख है समाया ।
जरा पास आजाने से दूषित हो रही काया ।
दोपदि, मीरा गज की तुमने सुनी थी करूण पुकार।
अब विपदा के मारे भक्तजनो की पीडा हो,क्यों स्वीकार?
रूठों को में मना रहा हूँ प्यारे मुरली वाले।
अवोध बालकों, बालाओं को छमा करो रखवाले।
मान, प्रतिष्ठा और बडाई धन दौलत और भोजन ।
तुम्हारी कृपाविना नही पाता, दुनिया का कोई जन ।
कोई संकट भक्तों का क्या तुम सह पाओंगें ।
पूरा विश्वास यही है, आकर तुम्ही बचाओगे।
बार बार बिन्ती हम सबकी तुम करना स्वीकार ।
कोरोना को शान्त करों, देकर के ललकार
बच जायें जन जीवन प्रभु विनय करों स्वीकार ।

# कोरोना रोग निवारण हेतू विनय

जन जन मैं फैल रही है, कोरोना महामारी ।

क्या तुम को पता नही महावीर बलधारी ।

मस्जिद गिरजा, मंन्दिरों में सूनापन है भारी ।

घर में बन्द हुये जन जन है, घूमें फिरें अटारी ।

अलग अलग सब लोग हुये है, दुनिया में दुखभारी ।

राम ही जानें क्या बला है, कोरोना बीमारी तुम हो गुणों के सागर तुम हो सुख के दाता।

बिगडे काम बनाते तुम ही, तुम हो भाग्य विधाता ।

मन क्रम बचन ध्यान हम लाक्त।

है महावीर तुम्हे मनावत भागैरोग मिटादो पीरा है महावीर परम बलबीरा।

सूक्ष्म रूप घर के आजाओ , दुखी जनो जनों के रोग मिटाओं।

ध्यान धरें हम, तुम तुरत पधारों। हनु, हनु , हनु  रोग को मारों।

विनय करें हम आरत होकर।

दया करों हम सबके उपर।

जय हनुमान जय हनुमान जय,जय, जय, हनुमान ।

# श्रीनंदलाल संकट से रक्षा करें

तुम बिन कोई और नही है, दुनियां का रखवाला ।

ओ मेरे नदलाला, ओ मेरे नन्दलाल।

नही जगत में तुम सी अच्छी दौड लगाने वाला ।

ओ मेरे नंदलाला, ओ मेरे नन्दलाला ।

बडे बडे संकटो को पल में तुमने टाला ।

ओ मेरे नंदलाला, ओ मेरे नंदलाला ।

द्रोपदी,ओर मीरा की विपदा पल में तुमने टाली ।

मद मस्त होकर के मीरा पी गई विष का प्याला ।

ओ मेरे, नंदलाला, ओ मरे नंदलाला ।

गज को बचाने वाला, दौड लगाने वाला ।

ओ मेरे नंदलाला, ओ मेरे नंदलाला ।

अन्ध सूर, सदा ही रटें सुन्दर श्याम कन्हाई ।

बिन आखों के प्यारे कान्हा उनको पडे दिखाई

ओ मेरे नंदलाला, ओ मेरे नंदलाला

करमा ओर करयेंती बाई को है कंठ लगया।

जब,जब भक्तों ने तुम्हें पुकारा, उनको दर्श कराया।

ओ मेरे नंदलाला , ओ मेरे नंदलाला

भक्त सुदामा को तुमने सब कुछ ही दे डाला

ओ मेरे नंदलाला, ओ मेरे नंदलाला

तुमने साखियों संग रास रचा कर उन पर जादू डाला

ओ मेरे नंदलाला , ओ मेरे नंदलाला ।

जग पर छाया भारी संकट,दौड लगा दो लाला ।

ओ मेरे नंदलाला ओ मेरे नंदलाला ।

गयें, पक्षी दुखी सभी जन दुखी भई है वाला ।

ओ मेरे नंदलाला, ओ मेरे नंदलाला ।

आकर के इस कोरोना ने ताण्डव है कर डाला ।

ओ मेरे नंदलाला , ओ मेरे नंदलाला ।

आज तलक उस महा संकट को नही किसी ने टाला।

ओ मेरे नंदलाला , ओ मेरे नंदलाला ।

हर कोई है, बन्द घरों में लगा हुआ है ताला ।

ओ मेरे नंदलाला, ओ मेरे नंदलाला ।

मन्दिर, मस्जिद, गुरू द्वारों में लगा दई रोक

कही नही अब मिल पाता है परम पिता का भोग

ओ मेरे नंदलाला ओ मेरे नंदलाला ।

चक्र सुदर्शन लेकर के फिर एक बार आजाओ। मेरे प्यारे आकर के

विपदा से मुक्त कराओं ।

ओ मेरे नंदलाला , ओ मेरे नंदलाला ।

# भारतीय संस्कृति महान है

आयुर्वेद शास्त्र का यह सिध्दांत पुराना ।
अब सबको समझकर होगा यह अपनाना ।
बात, पिन्त औ कफ से भीषण होते रोग ।
तीनों को बस में रखें, सुखी रहें तब लोग।
नियमित दिन चर्या रहें, शुध्द होय अहार ।
धर्म आचरण सुध्दता, उत्तम रखें विचार ।
मन, वाणी पर संयम हो धरें प्रभु का ध्यान ।
मान वाचा और कर्मणा सबका हो कल्याण ।
मन में हो सदगुण सदा वाणी करें पवित्र ।
पतित न हो पाये कमी शुध्द पवित्र चरित्र ।
धर्म समाज परिवार की मर्यादा का ध्यान ।
यह धर्म परायण देश है, भारत देश महान ।
मर्यादा अनुशासन, नैतिकता परोपकार ।
साथ जियेंगे साथ मरेंगे करना होग यह स्वीकार ।
हाथ मिलाकर गला चूमकर कितनी नजदीकी आई ।
पश्चात सभ्यता क्यों हमने भी अब अपनाई ।
पैसा भी कुछ काम ना आवत, महारोग सब को समझावत।
लोक डाउन और सोसल डिस्टेडिग की बात बतावत।
पशु पक्षी कीटो को मत मरना हैरान ।
अब सब कुछ समझ गये हो, लो इस को पहचान ।
ईश्वर प्रदत्त प्रकृति में है ईश्वर का वास ।

प्रकृति की इस वेदना से जन मन हुआ उदास ।
जलवायु यदि दूषित होगी तुम कैसे बचापाओंगे ।
सब कुछ जब दूषित होगा शुध्द कहा से खाओगे ।
धन दौलत जो खूव कमाई क्या उपर ले जाओगे ।
भूखे, गरीव, असाह लोगों को क्या सुविधा दे पायोगे।
अब भी सम्हल सके ना तुम, तो आगे पक्षताओंगे।
शुध्द जब नही मिलेगा, अशुध्द ही तुम खाओगे ।

हम सब को समक्षनी होगी फिर से यह बात ।
पर्यावरण अनुशासन का फिर से पहलें पाठ ।
धीरज धर्म मित्र और नारी को दें सम्मान ।
शुध्द आचरण साफ सफाई पर रहे अब ध्यान ।
उस अद्रस्य सन्ता को अब भी लो पहिचान ।
जिस की कृपा बिना नाहि चलता यह है सकल जहान ।
यह तन तो उडजायागो, जैसे उडत कपूर ।
राम राम रटलीजिये रे मनुआ भरपूर ।
करूणा निधि राम है, राम रटत सुख होय ।
राम राम रट लिजिये विरथा जनम न खोय ।
राम राम रटत ही सब सुख मिल जात ।
रामायण में आदि कवि यह बात बतात ।
विश्व गुरू यह भारत की पुरातन पहचान ।
पुरातन संस्कृति, सभ्यता ही थी महान।

आगे चलकर ज्ञान, विज्ञान यह जानेगा।
विश्व गुरू की प्राचीनता को पहिचानेगा।
अति दुरलभ ज्ञान जिसे विज्ञान भी जाना है ।
वेद मंत्र की शक्ती को कुछ देशो ने पहचाना है।
भौतिकता तो केवल उपर पडत दिखाई ।
आध्यात्मिक सत्ता तो हरदम राहत छुपाई ।
कल्पना, आज्ञा, योग, वैराग्य और वेद पुराण ।
क्या किसी अन्य देश को है उसका ज्ञान ।
अन्य देशों को जब कुछ उनका ज्ञान हो जायेगा ।
तब भी भारत को पूर्ण समझना पायेगा।
हे भारत के वासी भारत को पहिचानों ।
यहा जन्म लेकर प्रभु सत्ता को जानों ।

# श्री परशुराम भगवान की बन्दना

शिव का परसु कांधे साजे, हे विष्णु अवतारी ।
जन्म दिन पर तुम्हें बधाई परशुराम बलधारी ।
जमदारा में जन्म हुआ हर्षित दुनिया सारी ।
मात पिता के वध के कारण काट दिये शिर भारी ।
सदा सत्य धर्म प्रिय नायक, मुनियों का करते सम्मान ।
कमी कम ना हो पायेगा, तुम्हारा यशो गान ।
कीन्ह तपश्या वन में भारी, तब प्रश्न्न हुये त्रिपुरारी ।
जनक पुरी की भरी सभा, धनुस भंग ध्वनि भारी ।
तुरतई गमन कीन्ह सभा में, परशुराम बलभारी ।
डरे महीप जनक सकुचाने, जनक नगर वासी भयमाने ।
समय पहिचान प्रणाम तब कीन्हा ।
दूस्तुति कर बन गमन प्रवीणा ।
साधु सन्तों के तुम रख बारे, बेद विहीन महीयन मारे ।
धीरेवीर न्याय प्रिय नायक, ब्रम्ह वंस प्रि सव सुख दायक ।
नमन करत हम सब मिलकर ।
दया करो हम सब के उपर ।
अत्याचार अन्याय है आज धरा पर भारी ।
आजाओं फिर एक वार, परशुराम बलधारी ।
जन्म दिन पर तुम्हें मनावत हे भगवान हितकारी ।
दया द्रष्टि हम सबके उपर कर दो प्यारे नाथ ।
स्तुति कर हम पूजन करते अब सब शुभ हो बात।

घर घर हम दीप जलाते, नभा माथ अब तुम्हें मनाते

करूणा बर्षा करदो, सुनलो मेरी पुकार।

मिट जायें सब संकट जगके हो सेवा स्वीकार।

# श्री भगवद गीता में निष्काम कर्म योग

निष्कर्म कर्मयोग

सब कुछ भगवान का समझकर सिध्दि असिध्दि
में समस्वभाव रखते हुये, आसक्ति और फल की
इच्छा त्याग करके भगवत अनुशार केवल भगवान
के लिये सब कर्या का आचरण करना । श्रध्द भक्ति।
पूर्वक मन, वाणी और शरीर से सब प्रकार भगवान
के शरण होकर नाम, गुण, लीला, धाम का प्रभाव,
सहित उनके स्वरूप का निरन्तर चिन्तन करना।
यह निष्काम काम कर्म योग का साधन है।

# निष्काम कर्म योगी पहचान

जो व्यक्ति आकांझा से रहित तथा बाहर

ब भीरत से शुध्द और चतुर है, अर्थात जिस

कार्य के लिये आया था उसको पूरा कर चूका है,

एवं पक्षपात से रहित और दुखों से छूटा हुआ है

वह सब आरम्भों का त्यागी अर्थात मन, वाणी

और शरीर द्वारा प्रारब्ध से होने वाले सम्पूर्ण

स्वाभाविक कर्तापन का त्यागी होता हैं

सच्चिदानन्द बासुदेव परमात्मा में ही अनन्य प्रेम से, नित्य, निरन्तर
अचल मन वाला है, और परमेश्वर को ही श्रध्दा प्रेम सहित, निष्काम

भाव से नाम, गुण प्रभाव के श्रवण कीर्तन मनन

और पठन पाठन द्वारा निरन्तर भजने वाला हो,

तथा मेरा मन, वाणी और शरीर के द्वारा सर्वस्व

अर्पण करके अतिसय श्रध्दा भक्ति और प्रेम से

विहलता पूर्वक पूजन करने वाला हो, ओर सर्वशक्तिमान विमूति
बल,

ऐश्वर्य्र माधूर्य गम्भीरता, उदारता बतसल्य,

और शुहृध्दयता आदि गुणों से सम्पन्न

सब के आश्रय रूप बासुदेव से विनय भावपूर्वक भक्ति सहित ।

साष्टांग दण्डवत प्रणाम कर आत्मा को ईश्वर से,

एकीभाव करके ईश्वर को प्राप्त होता है।

परम प्रभू परमात्मा में ध्यानस्थ रहता है।

अतः इन्द्रियों का समूह अच्छी तरह वस में रहता है

मन,बुध्दि से परे सर्वव्यापी अकथनीय परमस्वरूप।

और सदा एक रस रहने वाले नित्य, अचल

निराकार, अविनाशी सच्चिदानन्द धन

ब्रम्ह को निरन्तर एकी भाव से ध्यान करते हुये उपास ते है।

# निष्काम कर्मयोग के लिये उपाय

मन चंचल है, अतः कठिनाई से वस में होने वाला है मन को बस में करने के लिये ईश्वर को सत्य तथा अन्य वस्तुओं को असत्यता समझें, असत्य बस्तुयें मन में भानकर बैराग्य उत्पन्न करके, मन को वश में करना चाहिये।

जिस पुरूष का मन बश में नही उसे योग दुष्प्राप्त है, जिस पुरूष ने मन को बश में कर लिया उसे निष्कर्म कर्म योग से जुडने में सरलता होगी। जो पुरूषा कर्म फल को न चाहता हुआ करने योग्य कर्म करता है वह सन्यासी और योगी है।

अर्थात सकल्पों को त्यागने वाला कोई पुरूष योगी नही होता। इन्द्रियों का भोग में आसक्त, न होना और न कर्मो मे आसक्त होना, निष्काम योगी के लिये आवश्यक है।

# निष्काम कर्म योग ही कल्याण का हेतू है।

हमारी जीवात्मा ही हमारी मित्र व शत्रु है। जिस व्यक्ति ने मन और इन्द्रियों सहित शरीर जीत लिया है, उस की जीवात्मा उस की मित्र बन जाती है, उसकी जीवात्मा जिनका मन इन्द्रियां वश में नही वह नाना प्रकार का दुख देती हैं।

अतः उचित आसन विछाकर आसन पर बैठ कर मन को एकागत में करने के लिये, शुध्द

अतः करण हेतू अभ्यास करें। और ब्रम्हचर्य के व्रत में स्थित रहता हुआ, भय रहित तथा अच्छी प्रकार शान्त अन्त करण वाला और सावधान होकर मन को ईश्वर में लगावे ।

इस प्रकार निरन्तर आत्मा को परमेश्वर में लगाकर स्वाधीन वाले शान्ती को प्राप्त करते है।

यह दुखों का नाश करने वाला योग तो यथा योग्य अहार और विहार करने वाल का तथा कर्मो यथा योग्य चेष्टा करने वाले और यथा योग्य शयन करने व जागने वालो का ही शिध्द होता है। इस प्रकार योग के अभ्यास से उत्पन्न वश में किया हुआ चित्त जिस काल में परमात्मा में सम्पूर्ण कामनाओ से सपृहा रहित हुआ पुरूष योग युक्त कहा जाता है।

योगस्थ व्यक्ति इन्द्रियों से परे केवल सूक्ष्म बुध्दि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है, उसको जिस अवस्था में अनुभव करता है और परमेश्वर की प्राप्ती होने पर आनदित होता है उस के समान दूसरा लाभ नही, ऐसा योगी भारी

दुख में भी चलायामन नही होता ।

इस लिये मनुष्य को चाहिये कि कल्पना से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण कामनाओं को निः शेपता से अर्थात वासना और अशक्ति सहित त्याग कर, और मन के द्वारा इन्द्रियों के समुदाय को सब प्रकार से अच्छी

प्रकार वस में करके क्रम से अभ्यास करता हुआ परमात्मा को प्राप्त होवे तथा परमात्मा के सिवाय कुछ भी चिन्तन ना करें।

क्योंकि जिसका मन शान्त है, और जो पाप से रहित और जिसका रजो गुण शान्त हो गया है, ऐसे इस सचिदानन्द धन ब्रम्ह के साथ एकी भाव हुये को उत्तम आनन्द प्राप्त होता है

और वह पाप रहित योगी इस प्रकार निरन्तर उभ्यास से परमात्मा मे ध्यान लगता हुआ सुख पूर्वक पारब्रम्ह परमात्मा की प्राप्त रूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता है।

जो योगी अपनी सहृदयता से सम्पूर्ण भूतों में सम देखता है, और सुख दुख को भी सब में सम देखता है, वह योगी परम श्रेष्ठ है।

# निष्काम कर्मयोग का महात्व

योगी तपस्यिों से श्रेष्ठ है, और शास्त्र के ज्ञान वालों से भी श्रेष्ठ है। तथा सकाम कर्म करने वालों से भी योगी श्रेष्ठ है। पुण्य क्षीण होने से मृत्यु लोक में जाते है। और जो अनन्य भाव से निरन्तर परमेश्वर का चिन्तन करते हुये निष्काम भाव से भजते है। उन नित्य एकीभाव में स्थित पुरूषों को ईश्वर अपने सानिग्ध में से लेता है।

योग दो प्रकार के है, कर्मयोग तथा ज्ञान योग कर्मयोग के बिना ज्ञान योग सिध्द नही होता अतः कर्मयोग में तत्पर रहकर श्री हरि की पूजा करनी चाहियें।

जो विधि पूर्वक कर्म योग में संलग्न रहता हैं उसके सव पाप नष्ट हो जाते है। पाप नष्ट होने से निर्मल बुध्दि का उदय होता है।

निर्मल बुध्दि को ही ज्ञान कहा गया है ।

संसार में सभी पदार्थ अनित्य है, केवल भगवान श्रीहरि नित्य माने गये है।

अतः अनित्य को त्यागकर नित्य श्रीहरि का आश्रम लेना चाहिये, यह लोक तथा परलोक के जितने भोग है, उनकी ओर से विरक्त होना चाहिये।

जो भोगों से विरक्त नही होता वह संसार में फंस जाता है। जो मानव जगत के अनित्य पदार्थो में आसक्त होता है, उसके संसार बंधन का नाश कमी नही होताअतः यम  नियम आदि गुणों से सम्पन्न होकर ज्ञान प्राप्ती की इच्छा से साधन करें। निष्काम कर्म भाव से कर्म करता हुआ ईश्वर में ध्यान लगाकर परमानन्द को प्राप्त करें

अतः में उस परमात्मा में एकीकृत होकर अपने जीवन का लाभ प्राप्त करें

निष्काम कर्मयोग से ही परमशक्ति की प्राप्ती होती है।

# श्री भोलेनाथ की बन्दना

जय हो शिव शंकरम्, तुभ्यम नमामि ।

विशाल नेत्रं, गल व्याल मालं।

त्रिपुण्ड सुन्दर, भालं विशालम ।

जय हो शिव शंकरम तुभ्यम नमामि ।

डमरू चर्मम्वंर, भूत व्यालं ।

भवूती सरीरं, कर त्रिशूल धारमं ।

जय हो शिवशंकर, तुभ्यम नमामि ।

सदा वरदाय कम्, शुभ कल्याण कारी ।

सदासच्चिदा नन्द, दाता त्रिपुरारी ।

जय हो शिव शंकरम, तुभ्यम नमामि ।

मता सती बामांगे बिराजंत ।

सदा करत भक्तन कल्याणं ।

गोरी पतें, गणपति पित बन्दन ।

जय हो शिव शंकरम तुभ्यम नमामि ।

सठवदन करति केय त्वयं पुत्र।

सदा भजे हम, शंरकम् दयालम् ।

जय हो शिव शंकरम तुभ्यम नमामि ।

नमामि शंकरम, नील कण्ठय् दयालय।

सदा प्रशन्नम, सुख वर दयाकम् ।

भजे हम नील कण्ठय दयालम् ।

जय हो शिव शंकरम, तुभ्यम नमामि ।

हल हल विशं, नील कण्ठे धारं ।
सदा सर्व सुखः कल्याण करोति ।
राम सदा त्वयं हृदये बसति ।
राम नाम प्रसादं त्वम मम देहि ।
जय हो शिव शंकरम तुम्पय नमामि ।
करोति सदा जग कल्याण शंभू ।
त्वयं शरणः प्रपध्दे नमामि ।
जय शिवशंकरम तुभाम नाममि ।
नन्दी स्वरं संग कल्याण कारी ।
हे शंभू नाथम् नन्दी सवारं ।
जय शिव शंरकरम तुम्भम नमामि ।
जय शिव शंकरम, जय गंगा धरण ।
प्रफ्फूलित बदन, तुभ्यम नमामि ।
चलत कुण्डलम् शोभित करडे ।
नमामि हे देवाधि देव नमामि ।
दूध दही का भोग लगाते, गंगा जल स्नान कराते ।
बेल पत्र, आक, धतूरा, कमल पुष्प तुम्हें चढाते ।
में नहि जन् तुम्हारी पूजा, राम भक्त तुम सम नही दूजा ।
जय शिव शंकरम् तुभ्यम नमामि ।

# मॉ सारदा सेविनय

हे मॉ सारदे, सत सत् नमन ।
हो विधा की दाता वीण वादन।
तुम्हरे सुमिरन होवे दिव्य प्रकाश।
हिय विराजत ही मिट जाती सारी त्रास ।
सुर, सरगम का ताल सिखा दों मन में आन विराजो।
मॉ तुम्हारा सत् सत् करते अभिनन्दन ।
हे वीणा वादिनी भरदो खुशियों से मन
तुम्हारे विराजे मन प्रशन्न होता वीणा वदनि ।
सुर, लय, ताल, विधा, बुध्दी की दाता ।
संगीत में सदा तुम्हारा वास है। माता।
विन विद्धया यह जग सारा दुख पावत ।
हे माता अरज करें और तुम्हें मनावत ।
आकर मेरे मन को दे दो विधा कावर।
अभय होय पाकर तुम को मिट जायें सारे डर।
गायें मन प्रश्न्न हो तुम्हें मनाये ।
मन में विघ्न कभी नही आयें।
मन की सोई विधा, भाव जगायें।
भरदों मेरे मन में भक्ती का राग।
राग गान करने से आत्मा जाये जाग ।
माता ओर कहा जाऊ में बस तुमसे है आश ।
माता आजाओ न अवोध बालक के पास ।

तुम्हारे बिना ना कोई सुख पात।

तुम्हारे कृपा जहा हो जाये, सब वैभव अजाता ।

हे माता मेरे मन से तुम कभी ना जाना।

माता तुम को भूल गया था, यह बालक अनजाना ।

भाव शून्य संगीत मेरा मन, मेरी झोली भरदो ।

हे मॉ इस आवोध वालक को, बरदो बरदो ।

हाथ जोड हम करते बन्दन ।

हे शारदे मॉ सत् सत् अभिनन्दन ।

बार–बार बन्दन अभिनन्दन ।

# श्री कृष्ण जी से विनय

हे कृष्ण कृष्ण हे, कृष्ण कृष्ण ·।
हे गोकुल नन्दन, प्यारे।
कोरोना अव पीछे पडा है।
सारे जन दुखयारे ।
हे जग को रचने बाले।
यदुनन्दन राज दुलारे।
कछू भूल यदि मानव करता ।
तब भी है, पुत्र तुमारे।
हे कृष्ण कृष्ण हे कृष्ण कृष्ण ।
गोकुल नन्दन प्यारे ।
क्षमा करो दोष जो होवें
काटो संकट सारे।
विनय करे और अरजी लगावें।
ओ मोहन मतवारे।
जव भी विपदा इस धरा धाम पर ।
तुमने इसके संकट टारे।
कृष्ण कृष्ण हे कृष्ण कृष्ण।
हे गोकुल नन्दन प्यारे।
नाम तुम्हारा विपदा हारी ।
हम सब विपदा के मारे।
तुम बिन और को जग में ।

जो आकर संकट टारे।

कृष्ण, कृष्ण हे कृष्ण कृष्ण ।

गोकुल नन्दन प्यारें।

भक्त दुखी, सन्त दुखी गो माता भी दुखियारी।

एक वार फिर धरा धाम पर आओ कृष्ण मुरारी

हे कृष्ण कृष्ण हे कृष्ण कृष्ण,

गोकुल नन्दन प्यारे।

आकर के फिर से संवारो विगडे भाग्य हमारे ।

हमारा मनुआ बार– बार कृष्ण ही कृष्ण पुकारे।

कृष्ण,कृष्ण हे कृष्ण कृष्ण।

गोकुल नन्दन प्यारे।

अरजी हमारी प्रभु जी सुनकर

तुम जल्दी से आना।

इस महा भयंकर वीमारी से आके सभी वचाना।

हे कृष्ण कृष्ण हे कृष्ण कृष्ण,

गोकुल नन्दन प्यारे।

हम सब दुखियन के तुम ही हो रखवाले।

कृष्ण , कृष्ण हे कृष्ण कृष्ण ,

गोकुल नन्दन प्यारे।

# श्री सीता माता की बन्दना

मॉ जनक लली को आज मनाऊ ।

जास हृदय निर्मल मति पावऊ ।

हे, जनक लली, जग जगत जानकी।

अतिसय प्रिय करूणा निधान की ।

जनक नन्दनी लक्ष्मी रूपा।

तुम पर राजी कोशल भूपा।

हनुमान को सुत तुम माना ।

कीन्ह कृपा राम भगवाना ।

अजर, अमर गुण निधि सुत कीन्हा।

अष्ठ सिध्दि नवनिधि वर दीन्हा।

सती व्रत वीर वृती तुम्ह धारे।

राक्षस गये जानसे मारे।

लक्ष्मण शेष नाग अवतारा ।

सेवा कीन्ही विविध प्रकारा।

जानकी मॉ के परम दुलारे।

रामचन्द्र के प्राण पियारे ।

धर्म हेतू सब सुख तजदीन्हा।

मर्यादा मान गमन वन कीन्हा ।

बाल्मीक त्रिृषि आश्रम जाकर।

कीन्ह तपश्या नीचें पाखर।

दो सुन्दर सुत भात नें जाये।

लव ओर कुश अतिवीर कहायें।

लव, कुश रामहि सोप के सीता।

मही समानी परम पुनीता।

परम पवित्रा सतीत्व तुम्हारा ।

जान गया यह जग सारा।

जन्म दिन के आज दिवस पर, बारम्बार नमन ।

सुखी रहें सब, मिटजायें गम, स्वास्थ्य रहे हर जन ।

हे माता अब कृपा की करदों वरसात

मेरे हृदय आन विराजो राम चन्द्र जी के साथ ।

# काम से ही अमरता प्राप्त होती है

अमर नही है, कोई जग में।

अमर होत बस काम ।

अच्छे काम करो जगत में ।

मत होना बदनाम ।

राम,कृष्ण नानक ने।

यही बात सिख लाई ।

जितनी वन पडे सभी की ।

तुम करते रहो मलाई।

महात्मा गान्धी जी ने ।

सत्य अंहिसा का पाठ पठाया।

अपने कर्म, तपश्या से भारत का मान वढाया।

जो भी करेगा अच्छे काम।

दुनिया हर दम करें शलाम।

जिन के कर्मो से हमें मिली आजादी भगत सिहं नेता सुभाषने ऐसी राह दिखादी ।

आजादी के दीवानों की भीड बडी है भारी ।

इतिहास लिखा है, उन वीरों का जाने दुनिया सारी ।

वे सब मर कर, अमर हो गये ।

कर कर अच्छे काम ।

अच्छे काम करो जगत में ।

मत होना वदनाम ।

# 40 वर्ष विवाह के पूर्ण होने पर

40 वर्ष के हो गये, वैवाहिक आनन्द।
अवतो मनुआ जागजा मिलेंगे परमानन्द ।
जिस दिन से प्रभू पडे दिखाई नीद नही आती है।
सच मानो अब दुनिया दारी मुझे नही भाती है।
तुम हो छलिया प्यारे मोहन, जरा झलक दिखलाते।
थोडे ही पडत दिखाई, फट ओफल हो जाते,
बन्द करो प्रभु जी, यह लुका छुपी का खेल,
आजाओ, प्यारे मोहन, मुझ से करलो मेल,
तुम बिन मनुआ भटकत है, दिन रात रहे बैचेन
यही सोचकर खुश रहता हूँ, सभी तुम्हारी देनं।
सारे सुख, दुख प्यारी दुनिया माया का है रूप ं।
चॉद, धरा चमकते तारे, सूरज देते धूप।
सारी प्रकति रोशन होकर जो भी पडे दिखाई।
खुदतो, प्रभु ओजल हो गये, माया दर्श कराई,।
जीव चंकित इस चकाचोंध से, माया का भ्रम जाल।
दया करो है, दयानिधे, दुनिया के प्रतिपाल।
जो हो जाये प्रभू शरण वह कवहु ना दुख पावै ।
हरे पेड पर्वत पर देखत, मेरा मन हर्षा वै।
कोन कर रहा इन्हें, हरा कोन दे रहा पानी।
आज तलक ना समझ सकी यह दुनिया अन्जानी ।
है परम पिता परमेश्वर, मुझ को इतनी शक्ती देना।

सदा तुम्हारा नाम रटू, नाम बिना ना चेंना।
हरदम मूरत हो सामने, मन्द मन्द मुस्काती।
प्रेम बढे नित, मन उमगें, भर भर आवै छाती ।
छटा देख प्यारी मूरत की जन्म सफल हो जावे।
हे प्रभु यही चाहता हॅू मे, मूरत भी मुस्कावै।
अब लेखनी को प्रभु करता हॅू बन्दं
मनुआ में अब आन वसों मेरे प्यारे परमानन्द ।

# संसार में कार्य अमरता की प्राप्ती होती है

अमर नही है, कोई जग में।
अमर होत बस काम ।
अच्छे काम करो जगत में।
मत होना बदनाम।
राम, कृष्ण, गुरूनान कने।
यही वात सिखलाई ।
जितनी बन पडे समीकी ।
तुम करते रहो भलाई।
महात्मा गांन्धी जी ने ।
सत्य , अंहिसा का पाठ पठाया।
अपने कर्म तपश्या बल से,
भारत का मान बढाया।
जो भी करता अच्छे काम
दुनिया उन्हें करें प्रणाम ।
जिन के कर्मो से हमें मिली आजादी ।
भगतसिह, नेता सुभाष ने ऐसी राह दिखाही ।
आजादी के दीवानों की लिस्ट बडी है भारी।
इतिहास लिखा है, बीरों का जाने दुनिया सारी ।
वे सब मरकर अमर हो गयै।
कर गये ऐसे काम ।
अच्छे काम करो जगत में मत होना बदनाम ।

# (मीठी जवान महनत कश इन्सान)

सुख दुख का चिटठा है जीवन,।

जीवन है, अनमोल।

सदा बोलते रहना प्यारे, ।

तुम मीठे मीठे बोल ।

समय चक्र सव पर आता।

कभी वक्र होही जाता ।

पर प्यारे ना घवराना तुम,

बलवान समय सब सिख लाता ।

राजा हो या रंक यहा पर,

समय चक्र ने सब मारे ।

उदय अस्त होते रहते है,

आशमान में भी तारे ।

जीवन में सघर्ष करोगे,

तब पायोगे आराम ।

महनत कश इन्सानों को, दुनिया हर दम करे शलाम

कर्मो से बन्ते सुख दुख,

कर्मो से बन्ता है भाग्य।

कर्म करो सुभ, सुन्दर,

कर्म तब बन जाये यज्ञ।

भारत मॉ की सेवा कर सदा बढाते रहना मान।

मूल मंत्र मेहनत है, इस यंत्र को लो पहचाना।

मन में कडवा हटसे, होता मन वेचेंन,

मीठी मीठी वाणी वोलो मीठे वैन ।

सुख दुख का चिठठा है, जीवन, जीवन है अनमोल।

सदा बोलते रहना प्यारे, तुम मीठे मीठे बोल ।

सदा कोयलिया बोलत है, मीठी मीठी बानी।

मीठे बोल बोलने से कोयल सब की रानी।

सुख दुख का चिठठा है जीवन, जीवन है अनमोल ।

सदा बोलते रहना प्यारे, तुम मीठे मीठे बोल।

# प्रभु भक्ति से सुख प्राप्ती

सभी दुखी संसार में, सुखिया थोडे माह।
राम नाम मन लीजिये, सुखिया होनो चाह।
तन मन को पवित्रकर, आसन लेय विछाया।
तेज श्वास लीजिये, मुख से ओम कहाय ।
फिर रीढ के नीचे से शक्ती को, टुण्डी तक ले जय।
मन का ध्यान लगत ही, शक्ती भ्रकुटि मध्यम में जाय।
परमात्मा का ध्यानही, श्वास के साथ जाप।
मन वाणी, सब शान्त हों, मिट जाये सब पाप ।
ध्यान धरत ही हरि को, आत्म सुख मिल जात।
मोंह मध्य में ध्यान कर, नाक पर ध्यान लगाय।
तीसरे नेत्र के ध्यान से, ऊर्जा से, भर जाय।
करते रहें अभ्यास नित, हरि में ध्यान लगाय ।
तब संसारी राग, रंग , कतई ना मनहि सुहाय
निर्मल मन के होत ही, श्री हरि सों मिल जय।
सच्चिदानन्द परमात्मा, निस दिन पडत दिखाय।
सोवत, जागत रहे शरण, हर दम दिखाई पडत चरण।
तब मिट जायेगी सब माया, होगा आनन्द का बरण।
नही रहेगा अपना और पराया, मिट जायये सभी भेद।
आत्म जाग्रति से होती सुध्द आत्मा ओर बुध्दी अभेद।
सबमें राम रया है भाई, राम सभी में पडत दिखाई
जीव, निरजीव सब राम समाया, यह रहस्य जानो भाई।

सुखी होने का मंत्र जो तुम पाना चाहो, भाई।

रटो राम रघुवीर चरण कमल सुखदाई ।

राम राम रट, राम राम रट, हे मनुआ मेरे भाई ।

राम नाम सुख दाई, राम नाम सुख दाई ।

भजले कृष्ण कन्हाई, भजले कृष्ण कन्हाई ।

# (आरती वांके विहारी की)

कोमल अति चरण, नख मणि धरण, कान्हा प्यारे की,

आरती बांके विहारी की।

कट पीत बसन, सुन्दर लटकन, शोभा सिन्धु खरारी की, आरती बांके बिहारी की ।

उर बैजन्ती माल, माल विशाल, मोहन मत बारे कीं,

आरती बांके बिहारी की ।

कमल नयन, टेढी चितवन, मुरली धरण धारी की।

आरती बांके विहारी की।

सूर के श्याम, तन घनश्याम, मीरा के गिरधारी की ।

आरती बांके विहारी की ।

घुगराले बाल, टेढी चाल, श्री कुन्ज बिहारी की ।

आरती बांके विहारी की।

राधा के प्राण, सखियों की जान, रास रचाने बारे की ।

आरती बांके विहारी की।

ग्वाल लिये साथ, मेरे नाथ, मनोज लजावन बारे की ।

आरती बांके विहारी की।

गिरि के धरण, पकडू अव चरण श्री बनवारी की ।

आरती बांके, विहारी की।

जानू नहि सेवा, स्वीकारो देवा, आरती कृष्ण मुरारी की ।

आरती बांके बिहारी की।

मधुर मुस्कान, प्रशन्न हुये प्राण, रस राज विहारी की

आरती बांके विहारी की ॱ ।

लड्डू मेवा का थाल, गुलाव की माल, चढाउ नन्द के लालकी ।
आरती वाके विहारी की

भक्ति दो नाथ, श्री जी के साथ, में मागू प्रेम पुजारी की,

आरती बांके विहारी की।

# कोरोंना से बचाव

जिन्दगी ने सिखाया है, नया तराना।
बन्द करो होटल का, पकाहुआ खाना।
सोच समझकर अव, घर से बहार खाना।
ज्यादा जिदकर निकले, तो हो जाय का कोरोंना।
ज्यादा से ज्यादा रखो,
हाथ मुह नाक की सफाई।
जिससे ना खाना पड़े, तुमको दवाई।
अव हर दूसरे से तुम दूरी बनाओ।
तुम दूर रहो, किसी के पास ना जाओ।
साफ रखो घर आंगन का हर कोंना।
झाड़ धोकर लेटो अपने विछोंना।
तन के साथ प्रभुध्यान से मन का मैल धोना।
सच मानिये नियम से ही भरेगा कोरोना।
साग, सब्जी, दूध खाने में हो सफाई।
बचने कोरोना के बचाव हेतु इन्मुनिटी बढाई।
सालोंग इलायची, दालचीन, हल्दी पीपल है दवाई ।
काली मिर्च, तुलसी, गिलोय, अजवाइन से कोरोना को दो भगई।
सभी चीजें का काढ़ा बनाइये।
आप भी पियें और घर भर को पिलाइये।
सरसों का तेल नाक मुह, हाथों पर लगाइये।
नियमित दिन चर्या में सबकी भलाई इसे अपनाईये।

गन्दी आदत गंन्दी चीजों की हैं, यह देन ।
गन्दी आदत गन्दी चीजों छोडो, तभी मिलागा चेंन।
स्वास्थ्य रहने के लिये स्वास्थ्य के निमय अपनाइये ।
भीड से बचकर, घर में रहकर अब खुशियाँ पाइये।
फल, सब्जी खाने की बस्तुये धो पोछ की खइये।
प्रभु सुमरन , पुस्तके पढें मन जहा भी लगे उसे लगाइये
सब मिलकर नियमों को भाने , कोरोना भगईये।

# मॉ का सम्मान

हे जननी जन्मदाता , तुम ही जीवन की निर्माता।
वेद शास्त्र भी देवजनों से तुम को ही बडा बताता ।
सुख दुख सहकर , तुम सन्तान का पालन करती ।
हरे भरे सब पेड़ तुम्ही से सब साधन दे बन्ती धरती ।
संतान सुखी हो हर दम, हरपल , मन में भाव तुम्ही ने पाला।
सच कहता हूॅ नही जगत में मॉ समान दूजा रखवाला ।
यदि संतान दुखी हो, तो माता को होता दुख भारी ।
मॉ सब काम छोड कर पहॅुचे सताति की करने रखवाली।
स्नेह भरा प्यार देकर, सीचे रही अपनी फुलवारी ।
मॉ सम कोई नही जगत में, मेरी प्यारी मात दुलारी ।
मॉ को दुखी ना करना कोई, उसका रखना पूरा ध्यान।
ईश्वर, देव सभी वर देंगे, जो रखते मॉ का सम्मान ।
मॉ मेरी आत्मा मॉ मेरी परमात्मा ।
मॉ ने दूध पिलाकर, आचल में रख पाला।
प्यार दुलार शिक्षित करके बना दिया मात दुलारा।
दुख की छाया का मेरे उपर पडने दिया ना पाला।
मॉ के देख उपर बैठा वो ईश्वर मतवाला।
मॉ ने मुझ को जीवन की हर अच्छी राह सिखाई ।
मॉ के रूप में मुझ को तो ईश्वर पडे दिखाई।
मॉ को पाकर सुखी हुआ हर प्राणी का मन।
मॉ की अमर धरोहर है, मेरा यह जीवन।

मॉ की एक मुस्कान, मेरे सारे कष्ट दूर करे।
मॉ हो जब पास तेरे, तू दुनिया से नही डरे।
ईश्वर तो अद्रस्य शक्ति है, नही पडे दिखाई,
मॉ तो साक्षात ईश्वर है, जो धरती पर आई।
मेरी मॉ मेरे जीवन और आनन्द का सम्बल ।
मॉ यदि नही, तब दुखी लगेगा हर पल ।
मॉ को दुखी करोगे तो ईश्वर करेगा कभी ना माफ
ंमॉ को दुख देने से प्यारे चढ जाता है तुम पर पाप।
मॉ को दुखी ना करना कोई, मॉ को दें पूरा सम्मान ।
ईश्वर देव सभीवर देते , जो रखते है मॉ का ध्यान ।

# ईश्वर ही सब का रखवाला है

तुम बिन कोई और नही है, इस जग का रखवाला ।
ओ मोहन मेरे लाला, ओ मोहन मेरे लाला।
हे नाथ तुम्ही सम्हालत, जग के बिगडे काम,
भक्तों के सब सब काम किये, लीन्ही नही छदाम,
भक्त तुम्हारे मुकुट मणि, हृदय में करते बास।
भक्त शिरोमणि हो गये, इस धरती पर रैदास,,
बिन मागें पारस मणि दीन्ही, छुई कभी ना हाथ
रात दिन रटत रहत , राम, राम, रघुनाथ
देंन हार तुमसा नही, भेजत हो दिन रेंन
ंबांटन वारे बांटते, कर कर नीचे नैन।
कविरा मन से भजत है, राम, राम हे, नाथ।
गाडी भर के माल की, ले पहुॅचे रघुनाथ।
मीरा ने गिरधर, गिरधर गाकर टेर लगाई
हरि मंन्दिर में नाच, गानकर हरि में गई समाईं।
नरसी जी सदा मस्त हो, प्रभु से प्रीत लगाई।
सांवरिया सेठ बने तव, करने भात भराई ।
गज ने प्राण संकट मे पाकर , ऐसी करी पुकार ।
दोड लगाकर प्रभु जी भागे, संकट दीन्हा टार।
जब भी कोई भक्त तुम्हारी , दिल से करे पुकार ।
जहा भी होते दौड लगाते, पहुॅचत उसके द्वार ।।
प्यारे मोहन भक्ती देकर, मुझ को भक्त बनादो।

मोह माया के चक्र व्यूह से, जीवन को सुलझादो
दुनिया में जो दिखता सब कुछ, प्रभु ने ही बनाया।
आज तलक ना समझ सका, प्रभु की प्यारी माया।
यही चाहता हूॅ सावरिया, एक झलक पा जाउ
तुम्हारे पास खडा होकर के, चरणों में लगजाउ।
दर्श बिना यह जीवन सूना, निस दिन रहत उदास ।
पर मेरा विश्वास यही है, हो हर पल मेरे पास।
माया के पर्दे से होती, दुख भरी बर्षात ।
विनय सुनो ओ मेरे मोहन, प्यारे से रघुनाथ।
परदे के अन्दर भी मोहन, कुद, कुछ पडत दिखाई,
साकार रूप में आजाओ, मेरे कृष्ण कन्हाई
मिसरी मक्खन भोग लगाउ, और चढाउ फूल।
लाड लडाउ प्यार, जताउ, छमा करो सब भूल ।।
एक बार आकर के मोहन, मन को धीर बंधादो।
जो भी जीवन की विपदायें, आके उन्हे भगादो।।
दुनिया में दुख भारी, स्वस्थ्य रहें सब नरनारी।
फूल बन कर फिर खिल जाये, प्यारी सी फुलवारी।।
बार बार बिनय करू, मेरे मोहन कृष्ण मुरारी
मेरे मोहन कृष्ण मुरारी, मेरे मोहन कृष्ण मुरारी ।

# पंच तत्वों का संतुलन एवं हमारी सनातन संस्कृति निरोग बनाती है

छित जल पावक, गगन समीरा।

पंच रचित यह अधम शरीर।।

हमारा शरीर पांच तत्वों से बना है, प्रथ्वी, जल आग, वायु एवं आकाश। इन पांच तत्वों का निश्चित संतुलन, एक निश्चित अनुपात होने पर मनुष्य स्वस्थ्य रहता है । इन पांच तरकों में अनुपात घटने, बढने से शरीर रोगी हो जाता है आकाश एवं वायु को खुला स्थान एवं चाहिए तथा अग्नि जलाने के लिये स्थान वायु चाहिये, अग्नी शान्ती के लिये जल चाहिये जब हमारे शरीर में प्रथ्वी एवं जल तत्व की बृध्दि होती है तब हमारी अग्नी मन्द पड जाती है।

एवं रोगणु अर्थात वायरस की बृध्दि होती है। शरीर में प्रथ्वी एवं जल तत्व के बढने से वायु एवं आकाश तत्व को कम स्थान या स्थान ना मिलने से अग्नी मंद पड जाती है और हमें रोग घेर लेता है। अर्थात वायरस एवं बैक्टीरिया हमला बर हो जाते है

हमारी सनातन संस्कृति में प्रणायाम , ध्यान एवं सूर्य रोशनी प्राप्त कर सूर्य उपासना का विधान बनाया गया है। ताकि पंच तत्वों का सही अनुपात बना रहे। हमने प्राचीन परम्परा को त्याग कर आधुनिक सम्पता (पश्चात सम्पता) को अपना कर अपने को रोगी बना लिया है।

अतः हमें यदि रोगों से बचना है तो प्राचीन भारतीय सनातन संस्कृति को अपनाकर प्रणायाम, सूर्य उपासना कर सुबह धूप लेना व ध्यान पध्दति अपना कर एवं पर्यावरण को शुध्उ कर रोगों से छुटकारा पाने में सफल हो सकेगे। साथ में पोस्टिक अहार से हमारी अग्नी संतुलित रहने से रोगों से लडने की क्षमता बनी रहेगी। हम अपने पूर्वजों के बताये सनातन नियमों को अपनाकर निरोग रह सकते है।

# ईश्वर ही सत्य है

बिन पद चल न सुनें बिन काना।

कर बिन कर्म करै, विधि नाना।।

आनन रहित, सकल रस भोगी।

बिन वाणी वक्ता वड जोगी।।

जो चेतन को जड करें।

जडय करें चेतन्य।।

अस समर्थ रघुनाथ को ।

भजय जै नर, ते नर है, अतिधन्य ।।

प्रभु बिना पैरो के चलते है, बगैर कानो के सुनते है,

बगैर हाथ के अनेकों कार्य करते है। मुह के बगैर

सभी रसों का स्वाद लेते है। बगैर वाणी के बहुत कुछ बोल सक्ते है। जो जड को चेतन्य बना सकते है और चेतन्य को जड बना सकते है। ऐसे समर्थ रघुनाथ जी को भी व्यक्ति भजते है वह प्राणी धन्य है ।

हमारे प्रभु हमारे अन्दर आत्म स्वरूप में विधमान है।

जब हम निद्रा में होते है, तब हम निद्रा में बगैर पैरो

के चलते दिखते है, कानों में बगैर आवाज के हमें सुनाई देता है, हमारा शरीर विश्राम की अवस्था में होने पर भी क्रियाशील होकर कार्य करता दिखता है बगैर मुख में कुछ खाये, कई व्यजनों का स्वाद आता है। वाणी विश्राम में है, फिर भी बोलती दिखती है। जब हम जाग जाते है, तब समझ आता है, कि हमने सोते समय देखा।

अब विचार करें हमसो रहे हैं।, फिर सपना किसने देखा । हम आंखो से देखते है परन्तु सोते सयम आखे बन्द है सपने में कोन सुन हरा

था कोन कार्य कर रहा था। सपने में हमारा स्थूल शरीर क्रिया शील नही था।

शरीर से आत्म तत्व निकल ने पर क्या

हम सुन, सक्ते है, चल सक्ते है, देख सक्ते है या कोई अन्य कार्य कर सकते है। उत्तर यही है नही , अर्थात हमारा शरीर जड है, चेतन्य आत्मा ही अर्थात ईश्वर अंस हमारे जड शरीर को चेतन्न बनाकर क्रिया शील रखती है अर्थात हमारा जड शरीर आत्मा द्वारा चेतन्नता को प्राप्त होता है, चेतन्य आत्मा निकलने पर पुनः जड हो जाता है।

जड को चेतन्न बनाने बाले रघुनाथ की सेवा भजन जो भी प्राणी करता है। उसके समान धन्य कोई नही है।

हमारा जड शरीर, एवं आत्म चेतन्न दोनें, ईश्वर प्रदत्त है तथा हमारा पालन पोषण जीवन का संचालन भी उन्ही के द्वारा होता है।

हमारा अपना स्वंय शरीर ही नही है। फिर भी हम अपनी झूठी सान मेरा यह मेर वह, मेंने यह किया, उसने यह किया, जीवन या करते रहते है, ना जाने कितनी भ्रान्तियां मन में पाल कर दुखी होते रहते है। क्या यह सब तुम्हारे साथ आत्मा शरीर से अलग होने पर जाता है, तुम्हारे पास ना शरीर अपन ना आत्मा अपनी । फिर मेरा, मेरा करना अज्ञान ही है। सब उसी का है ,जिसने यह बनाया । जड चेतन सभी उसी के द्वारा बनाई गई है हमारे उपयोग हेतू।

इसलिये शिव भगवान कहते है।

अमा कहउ में, अनुभव अपना ।

सत हरि भजन, जगत सब सपना।।

उमा राम मरकट की नाही।

सबह नचावत राम गुसाई ।।

हमें सपने में बहुत कुछ मिल जाता है परन्तु सपना

टूटने पर कुछ नही रहता । उसी प्रकार संसार की सारी

बस्तुयें  शरीर के साथ जुडी है। शरीर  से आत्मा निकलने पर सब सपने की तरह छूट जाती है, हाथ में कुछ नही रहता । केवल हरि भजन साथ में जाता है। जो एक जन्म से कई जन्मों तक साथ रहता है मदारी जैसा बन्दर को नचाता है, उसी भांति नाचता है राम जी की माया रूपी लाठी के द्वारा हम सभी नाच रहे है।

अतः हमें प्रभु राम की शरण होकर भक्ति करना ही परम कल्याण कारी है।

# (शुध्द अहार, उचित व्यवहार पर्याप्त निद्रा से निरोग रह सकते है)

हमारे शरीर में अम्ल, क्षार, लवण, तत्व, योगिक मिश्रण, धातु, अधातु आदि तत्वों पाये जाते है। जिनकी मात्रा शरीर में संतुलित अर्थात निश्चित मात्रा में होती है कम या अधिक होने पर हम रोग ग्रस्त हो जाते है। शरीर के अन्दर की क्रियायें रासायनिक, वॉयो कैमिकल आदि प्रभावित होती है।

है हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति में कुछ नियम बनाये गये जिन्हें पीढी दर पीढी दैनिक जीवन में हम अपनाते रहे है। परन्तु आज हम अन्धी दौड (देखा देखी पश्चात सभ्यता) में अपने प्राचीन नियमों भूल गये है। जो हमारे लिये तथा आगे की पीढी के लिये हानिकारक है।

नये खान पान से नये, नये रोग उत्पन्न हो रहे है।

हम भक्ष, अभक्ष, पशु, पक्षी, कीट, पतंगो को खा रहे है।

हमारा अहार, हमारा व्यवहार वा निद्रा सब बिगड जाने से हम रोगों का सामना कर रहे है।

# अहार

हमारा अहार, शुध्द पोष्टिक हो जो हमारे शरीर के लिये सभी पोष्टिकता प्रदान कर सके एवं हमें रोग से लडने की छमता प्रदान कर सके व हमें निरोगी रख सकें।

हमारे शरीर में नमक,शक्कर, अम्ल, क्षार इत्यादि की मात्रा बढने घटने पर हम रोग ग्रस्त होते है। शरीर में सोडियम, पोटेशियम, केल्शियम, मैगनेसियम जिंक, कापर, कापर, आपरन इत्यादि धातुयें

ऑक्सीजन सल्फर ,फास्फोरस , कार्वन , पानी यूरिया, विटामिन, हार मोन आदि हमारे शरीर में कार्वनिक कई रासायनिक

क्रियाओं को सम्पादित करते है।

इन धातु, अधातु की अल्प मात्रा या अधिक मात्रा हमें रोग ग्रस्त बनाती है। आज विज्ञान में सभी धातु, अधातु तत्वों की जांच कर ही रोगो का निदान हो रहा हैं इन सभी तत्वों की पूर्ति भोजन, जल से होती है। परन्तु आज खान पान बदल गया है। मिलावट, रासायनिक खाद का प्रयोग हो रहा है

आज दूध, घी, फल, सब्जी, अनाज शुध्द नही है हर व्यक्ति मिलावट वाली बस्तुये खाने को मजबूर है। जो हमारे स्वास्थ्य के लिये हानि कारक है

**व्यवहार**

हमारा आचार विचार नैतिकता , चरित्र दिनचर्या सब कुछ बिगड गया है।

समाज एवं धर्म द्वारा बनाये गये नियमों की अन देखी हो रही है मनमाना व्यवहार, अपनी भारतीय संस्कृति भूलकर नकल कर दूसरों की संस्कृति को अपनाना आलस्य, विकृत सोच, अपराधवृति, व्यक्ति गत विघटन के कारण जीवन संकट भय बन गया है।

## निद्रा

समय से सोना, समय से जागना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक हैं पर्याप्त निद्रा भी आवश्यक है। परन्तु हमारा सोना, जागना नियम से नही है। परिणाम हम देख रहे है हमारी मनोवृति सोच एवं स्वास्थ्य सभी पर असर दिख रहा है

अतः हमें इन वातों को समझकर सही राह चुननी होगी।

हमारे समाज, शासन तथा हमारी स्वंय की यह जवाबदारी हैं, हम सभी बातों को समझें।

एवं स्वंय सुधार कर दूसरों को प्रेरणा दें । साथ में समाज, शासन भी इस बात को समझ कर अभियान चलायें । स्वास्थ्य विभाग शासन हमारे साधू सन्त एवं समाज मिलकर अभियान चलायें ताकि समब्रध्द सुखी, स्वस्थ्य भारत का निर्माण हो

# मन मोहन कब आओगे

मेरे मोहन कब आओगे,
कुछतो बोलो बेंन।।
तुम बिन तडपत है, नैना,
इन नैनन कों मिले ना चैना ।।
जल बिन मछली भई अधीरा,
बिरही जाने बिरह की पीरा ।।
श्याम रटू दिन रैन,
मन को मिलै ना चैना।।
मेरे मोहन कब आओगे,
कुछ तो बोलो बैन ।।
बिन बोलें मेरा मना अधीरा
तुम बिन पडे ना चैन ।।
मेरे नैना सावन की बदली,
बरसत है, दिन रैन ।।
मेरे मोहन कब आओगे,
कुछ तो बोलो बैन ।।
कृष्ण जपू दिन रैन ।।
मन होता बे चेंन ।।
ओचित चोर श्याम कन्हाई
कहां छिपे हल धर के भाई
में ढूडत हू दिन रैन,

विरह वेदना प्यारे मोहन, यह तुम्हरी ही देंन,

मेरे मोहन कब आओगे,

कुछ तो बोलो बैंन ।।

बिन बोलों मेरा मना अधीरा,

तुम बिन पडे ना चैन ।।

मेरे नैना सावन की बदली,

बरसत है, दिन रैन ।।

मेरे मोहन कब आओगे,

कुछ तो बोलो बैंन ।।

मुझ से मिलने कब आवोगे।

कुछ पता बतादों मेंन ।

मेरे मोहन कब आओगे।

कुछ तो बोलों बैंन ।

# नेक कमाई

सब का मालिका एक है,
हम सब उसके बन्दे ।।
गलत राह पर मत चलना,
ना करना गन्दे धन्दे।।
करनी देख कर मालिक करता ,
हम सब का न्याय।।
जैसे कर्म करेगा बन्दे,
बैसा ही फल पाय ।।
पाप पुण्य की समझो बन्दे ।।
सच क्या है परिभाषा।
धमण्ड भरी ना होने पाये,
कमी तुम्हारी भाषा।।
पर पीडा को समझ के भाई,
हर लो उसकी पीडा ।।
पर हित को धर्म बना लो,
उठा लो ऐसी बीडा।
सेवा से बढकर ना होता
पुण्डय सुनो रे भाई।।
जो दूजों को पीडा देता,
यही बडी अध भाई
धन दौलत का गुमान ना करना,

न करना अभिमान ।।

रावण जैसे योध्दाओं की,

ले, ली इसने जान ।।

तुम लालाच को अपने मन में कभी ना लाना,

क्रोधाग्नि को जिसने, मन में वास कराया,

इस ज्वाला की लपटोंने किसको नही जलाया।।

उस मालिक को बन्दे, करते रहना ध्यान।।

मालिक के सुमरन को बन्दे तू सच्चा धन जान ।।

# श्री राम जी चाहेगे वही होगा

यह जग सारा मिटटी है, राम नाम बस सोना ।

बिरथा जन्म गवांवत क्यो, राम चाहे सोई होना,

मन मूरख क्यों समझ ना पावत ।।

हरि चरणों में प्रीति ना लावत ।।

नासवान संसार में, फिर क्यों प्रीति लगावत

अन्त समय कुछ साथना जावें,

रहजात बस रोना ।।

यह जग सारा मिटटी है, राम नाम बस सोंना ।।

दान, भोग और नास है, मनुआ धन गति तीन ।।

पाप कमाई क्यों करते, दुखी करो ना दीन

दीनदयात दयानिधि तो है, वे दीनों के दीन ।

प्रभु भाया बस फिरत मुलाना, प्रभु चरणों को चीन्ह ।।

यह जग सारा मिटटी है, राम नाम बस सोना ।

प्रभु से प्रीत लगाले बन्दे, अन्त पडे ना रोना।।

व्यर्थ समय अब चला गया, अव आगे मत खोना।

राम नाम जे सुमिरत नही , उन्हे पडेगा रोना।।

राम नाम के रंग में डूवों लै के हरि का नाम ।

विगडे काम बनेंगे बन्दे, बनजायेंगे काम ।।

यह जग सारा मिटटी है, राम नाम बस सोंना ।

विरथा जन्म गवांवत क्यों, राम चहे सोई होना।।

राम हमारे परम हित, मन में कर विश्वास

और आस बस छोड दे, एक राम से आस ं।।

राम दरश होगे तभी, जब मन में हो अति प्रीत ।।

भाव प्रिय भगवान है, ले भाव राम को जीत ।।

राधा संग, सखियों ने , मोहन से प्रीत लगाई

प्रेम बस होकर मोहन नाचे, वंसी में धुन लाई

ग्वाल वाल संग मोहन नाचे, देदे ताली ताल।

मन मोहन की प्यारी मूरत, सबको करत निहाल ।।

जब भी प्रीत से उन्हे पुकारों वे दौडे आते है।

हो भक्तों पर कोई संकट , वे उन्हें बचाने आते है।

अब तक कुछ ना समझा, अवतो लो यह जान।

भक्त बत्सल प्रभु राम से, करलो अब पहचाना ।।

# श्याम दीवानी

कृष्ण का मतलब मोहने बाला।
कृष्ण ही है जग का रखबाला ।।
मन मोहन की मोहनी सूरत ।
मन में बसगई उनकी सूरत ।
जब नेनों से जादू डालें।
बडे, बडे होते मतवाले ।।
प्यार भरी बंसी जब बाजे ।
अन्तर मन बाहर को भाजे ।
चारो ओर वही चितचोर ।।
मोर मुकुट पीताम्बर पहनें, कमर में कर धनियां ।।
तीनों लोक जिसे समझ ना पावत, मोहन मोहनिया।
राह तकत चैन कहां, ओ प्यारे सांवरिया
रीति गागर भक्ती भरदो प्यारे नागरिया।।
प्यारी बंसी धुन सुनने को मनुआ है बैचेन ।
रात दिन बस तुम्हे पुकारे, कैसे आवै चेंन ।
मन्द मन्द मुस्कान माधुरी, मन को धीर बंधायें ।
ऐसा लगता मोहन तुम तो मेरे पीछे आये ।
कमी दिखाते, दर्श कराते, झट से तुम छिप जाते ।
पता नही कहॉ से आते, ओर कहॉ खो जाते ।।
लुका छिपी का खेल खेलकर मुझ को और लुभाते ।
कितना अच्छा लगता जब दर्श मुझे दिख लाते।

मन को बांध लिया है, तुमने हे मोह घनश्याम ।
प्रभु की इस सुन्दर झाकी बिन, अब मेरा क्या काम ।
मन तो मेरा चुरालिया, ओ मेरे चित चोर ।
श्याम, श्याम का नाम सुनत ही मनुआ हुआ बिभोर।
घनश्याम मुझे तरसाओं ना तुम सच मुच ही आजाओं
फिर से इस दुनिया में रहकर, सबके भाग्य जगाओ।

# सुख की प्राप्ती

सुख दुख एक अनुभूति है, जिस हम स्व

मन के अन्द उत्पन्न करते है। सुख, दुख

हमारे अन्दर ही है। हमारी इच्छाओं की पूर्ती से सुख ।

अनुभव करते है, तथा इच्छाओं की पूर्ति ना होने पर

हम दुख का अनुभव करते है।

हमारे मन में अनन्त इच्छायें जन्म लेती है सभी

की पूर्ति संभव नही है। अर्थात हमें इच्छाओं की

पूर्ती ना होने से दुख उत्पन्न हो जाता है।

हमारे मन में अच्छा भोजन, बस्त्र अच्छा मकान

घर में अच्छा, अच्छा सामान, अच्छे उपयोगी साधन

अच्छे मित्र, अच्छा परिवार, अच्छे पडोसी, रिस्तेदार आदि कल्पनायें होती है।

हर व्यक्ति की इच्छायें अलग है।

अतः दुख की अलग है हमारे मन की अनुकूल, प्रति कूल दसा

ही सुख दुख का कारण है

कोई तन दुखी, कोई मन दुखी , कोईधन दुखी।

कोई निश दिन रहत उदास ।।

थोडे थोडे सब दुखी, सुखी राम के दास ।।

सुखी होने के लिये इच्छाओं पर नियंत्रण होना तथा कर्म फल के प्रति आशक्ति ना होना आवश्यक है। शरीर में कई तरह के रोग होते है। जिसके कारण हमे दुख की अनुभूति होती है रोगी होने पर तन को कष्ट होता है। पर दुखी मन होता है।

रोगी व्यक्ति को देखकर उसके सम्बधी पुत्र, पत्नी पुत्रिया, पति या अन्य रिस्तेदार , मित्र दुखी होने लगते है, फिर भी रोगी एवं उसके सम्बधियों को धैर्यवान एवं विचारों से मजबूत होना आवश्यक है ताकि रोग पर जल्दी नियंत्रण पा सकें।

हमारे पास इच्छाओ के अनुसार बस्तुये ंना होने से हम मन में दुख का अनुभव करते है। या हमारे मन के अनुसार कोई व्यक्ति कार्य नही करता या किसी व्यक्ति को पास धन दौलत, बस्तुयें, पद, प्रतिष्ठा, सुविधायें, आदि अधिक होने पर हमें दुख होने लगता है। कि हमारे पास क्यों नही है।

कोई व्यक्ति धन अभाव के कारण दुखी होता है या अपने से अधिक घनी को देखकर दुखी होता है।

इस संसार में सभी किसी ना किसी कारण से दुखी है परन्तु भगवान के भक्त ही परम सुखी है। सुखी होने के लिये इच्छाओं का ना होना । या इच्छाओं को त्याग देना आवश्यक है। परन्तु वगैर इच्छा के किसी व्यक्ति , का मिलना दुर्लभ है हरेक की कुछ ना कुछ इच्छा होती है।

हम सीमित इच्छाओं द्वारा एवं सुख दुख के स्थान पर कर्म की प्रधानता होने पर एवं उसके फल की इच्छा ना रखने पर समभाव में रहकर हम सुख का अनुभ करते है।

भगवान के आश्रित व्यक्ति मे समभाव रहकर सुख दुख की चिन्ता बगैर, सीमित साधनों के साथ जीता है तथा सब कुछ भगवान की इच्छा समझकर जीता है।

भौतिक बस्तुयें छडिक सुख दे सक्ती है परन्तु परम सुख के लिये भगवान ही परम आधार है।

सुखी मीन जिम नीर अगाधा।

जिम हरिशरण ना एकउ बाधा।।

अगाधा जल में मछली जिस प्रकार सुख का

अनुभव करती है उसी प्रकार भगवान की भक्ती में

प्रभु भक्त आनन्द अनुभव करते है।

अतः हम अपनी आवश्यकताओं को कम करके सुख दुख में समभाव में रहकर ईश्वर प्रसाद समझकर जियें। तथा हरिशरण लेकर सुख की अनूभूति प्राप्त करें।

# हमें अपने कर्मो से सुख दुख की प्राप्ती होती है

कोई नहि काहू कर, सुख दुख दाता ।

निज कृत कर्म भोग सब भ्राता ।।

इस संसार में कोई किसी को सुख दुख नही देता है।

सभी प्राणी अपने कर्मो का फल भोगते है।

हम चाहें तो मन में धर्म मर्यादित अच्छी बातें ।

सोचकर कार्य कर सकते है। या भ्रमित होकर

धर्म विरूध्द आचरण कर सकते है। हमें क्या बनना है उसी के अनुसार हमें अपनी सोच बनाकर कार्य करते हुये आगे बढना चाहिये, हम अपनी सोच को कियानवित करके आगे बढते है, तथा उसी के अनुसार हमें फल प्राप्त होते है।

कर्म हमारे, सोच भी हमारी तो परिणाम भी हमारे लिये ही होंगे। इसलियें कोई इससे यह शिक्षा ग्रहण करे कि हमें अच्छी सोच के साथ जीना है। हमारे कार्य अच्छे होंगे परिणाम भी अच्छे आवेंगे।

संगति का बडा प्रभाव हमारी सोच पर पडता है। घर, परिवार, दौस्त, समाज, शिक्षा, हमारे कार्य व्यवहार से सोच बन्ती है। घर, परिवार, दोस्त समाज व शिक्षा प्रणाली यदि अनुशासित धर्म मार्यदित हमारे नैतिक, व्यवहारिक आध्यात्मिक ,व्यवसाइक एवं रोजगार प्रदान करने वाली हो, तो निश्चित ही हम विकास की ओर अग्रसर होकर सुखी हो सकेंगे ।

आज की शिक्षा प्रणाली पुरानी बैदिक शिक्षा प्रणाली से भिन्न है। अग्रेजो के जमाने की शिक्षा प्रणाली से हमारा चहुमुखी विकास होना संभव नही है।

केवल रोजगार व्यवसाइक शिक्षा से हम रोजी रोटी पा सकते है। परन्तु हमारा नैतिक, व्यवहारिक, धार्मिक ज्ञान, सामाजिक ज्ञान ना

होने से हम जीवन में निराश होने लगते है। तथा दुख का अनुभव करते है।

आज हमारी सोच अपने तक सीमित हो चुकी है इसलियें स्वार्थ एवं धन को अधिक महात्व दिया जा रहा है ।

पश्चिम देशों में धन कमाने हेतू हमारे कई भारतीय लोग जाते रहते है। कई लोग विदेश मे ही बस गये है। भौतिक संम्पती उनके पास बहुत है, पर शान्ती नही है। कई विदेशी लोग हमारे भारत में शान्ती की खोज में आकर बस गये है तथा धर्म के साथ जुडाव हिन्दू संस्कृति, वा हिन्दू धर्म अपना कर सुख प्राप्त कर रहे है।

भारतीय धर्म, दर्शन, आध्यात्मा, शान्ती प्रदान करने वाला है।

विदेशों एवं भारत से कई लोग साधू शन्तों के पास शान्ती प्राप्ती हेतू एंव अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने उनकी कुटियाओं, आश्रमों में पहॅुच रहें है। तथा शान्ती एवं समाधान प्राप्त कर रहे है। स्वामी विवेकानन्द ने अपने आध्यम बल से शिकागों सम्मेलन में भारतीय वेदान्त दर्शन को रखा। सम्मेलन में विदेशियों ने भारतीय दर्शन को जाना समझा एवं प्रभावित हुये।

हमारे भारतीय भाइयों को इस ओर ध्यान देना चाहियें।

भारतीय दर्शन हमारा सहित्य, वेद वेदान्त आदि ग्रन्थ हमारे आध्यत्मिक विकास, ज्ञान, विज्ञान की शिक्षा देकर हमें युगो, युगों से शान्ती प्रदान कर रहे है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि रोजगार एवं व्यवसायक ज्ञान के साथ ही हमें नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक, व्यवहारिक सामाजिक ज्ञान के साथ हमारा जीवन खुशहाल बना सकें।

साथ ही हमें स्वास्था के नियम निरोग रहने हेतू व्यायामक नियम साथ साफ सफाई एवं अपनी सोच को साकारात्मक बनाना आवश्यक है।

# राम नाम ही सार है

राम नाम महिमा जो जाना।
सदा जपह वे परम सुजाना।।
राम जपत शंभु अविनाशी ।
मुक्त भये सब काशी बासी।।
राम नाम जपकें गणनायक ।
प्रथम पूज्य भये सब लायक ।।
राम नाम जपत हनुमाना ।
राम काज दूसर कछु आना।।
राम कथा जहां भी होई ।।
गुप्त रूप घर आवहि सोई।
राम नाम जपकें बहुलोगा।
गये धाम पाया नहि सोका।।
तुलसी दास भक्त शिरोमणि।
राम कथा में करते बर्णन ।।
और मंत्र सब मंत्र है, राम नाम है राज।
जपों निरंतर राम को हो जायें सब काज ।।
जहा राम तहां लक्ष्मी सदा निरन्तर बास ।
जहां बसें जब रमापति कोन करै वहा नास ।।
राम नाम सुमिरन से मन वाणी होत पवित्र ं।
बिगडों के भी हो गये पावन सभी चरित्र ।
गीध, अजा मिल, गणिका को पावन कर डाला।

राम नाम पतित को भी पावन करने बाला ।

यदि संसय कछु मन में तुमको तो मन में लोठान ।

राम,राम जपके सदा तुम भी लो पहिचान।।

परम दयानिधि राम है, दीनों को गले लगाया।

सबरी , भील, गीध, बानर, भालू ने प्रभु को पाया।

राम नाम ही महामणि भव के रोग मिटाती ।

राम रटन मन से करने से भव बाधा मिट जाती।

बिगडे ना संसार में उनके कोउ काम ।।

राम,राम रटन से अन्त मिले हरि धाम।

# राधा–राधा जपने से सभी काम बनते है

राधा राधा रटने से,
मिट जाती सारी बाधा।।
राधा राधा जपने से,
खुल जाये मन का ताला।।
राधा राधा जपने से,
मिलता अमृत का प्याला।
राधा राधा जपने से,
खुश होते है नन्द लाला ,
राधा राधा जपने से,
मिलती मन मोहन प्रीत
राधा राधा जपने से,
मिलेगा वह मनमीत
राधा राधा जपने से,
बन्ते सारे काम
राधा राधा जपने से
मन से मिलता आराम ।।

# चित चोर श्याम से प्रीति

ओ मोहन चित चोर,
आकर धीर बंधाजा ।।
मेरे हृदय वेदना की,
आकर के पीर मिटाजा।।
जब, जब में श्माय पुकारू ,
विरह वेदना जागे।।
सांवरिया तो नही दिखाये,
बस तस्बीर उसी की आगे।।
प्यारी वंसी बजा, बजा,
मुझको और रिझातें ।
जब भी में तुम्हें बुलाउ,
मन्द,मन्द मुस्काके तुम ओझल हो जाते।
मेंने भी चितचोर श्याम से,
विरहा प्रीत लगाई
एकवार मेरे प्यारे मोहन,
आओ कृष्ण कन्हाई ।।

# (जादूगर श्याम)

तुम हो छलिया श्याम,

तुम सबका मन हर लेते ।।

बिरह वेदना प्यारे मोहन,

हृदय में भर देते ।।

जब भी देखू प्यारी मूरत,

आखियों जादू डाले ।।

नही समझ में आती मोहनं,

तुम्हरी टेडी चाले।।

जो भी तुम से प्रीति लगाता,

हो जाता दीवाना

प्रीति लगाकर हमने मोहन,

तुम को है, पहचाना।।

माया पति की माया ने, बसा दिया संसार,

माया सबको नचा रही, हे माया के भरतार ।

# जपो सीता राम बनेंगे सब काम

क्रते रहो धर्म मय काम ।

मुख से जपलो सीता राम ।।

सीता राम जपो मेरे भाई ।

सीताराम बडा सुख दाई ं।।

राम जपत हनुमति बलबीरा ।

मेंटल सारे जग की पीरा ।

भरत समान ना कोउ बडभागी।।

राम चरण में लौ अति लागी। ।

भरत समान आन नहि होई ।

राम कहत यह बात ना कोई । ।

जो भी जपता राम का नाम ।

उनके बन्ते सारे काम ।।

राम समान ना हितू हमार, राम से देखो करके प्यार।।

# राधा नाम की चाबी

राधा चाबी, श्माम है ताला।
खोल सकेगा खोलने बाला।।
राधा गोरी, श्याम है काला।
प्यारा मोहन, नन्द का लाला ।।
प्यारे संवरिया बंसी बजाते ।
राधा संग वह रास रचाते।।
दही माखन का भोग लगाते ।।
ग्वाल सखा सब को खिल वातें
राधा की सखिया है, प्यारी।
प्रेम करें सबसे गिरधारी ।।
राधा ने, मोहलिया मत वाला।
राधा – मोहन बन गये ग्वाला।
राधा है, जीवन आधार।
हृदया विराजत कृष्ण मुरार ।
राधा मोहन एकाकार, वाके विहारी है सरकार।
राधा में कृष्ण बसत है।
कृष्ण में बसे राधा प्यारी ।।
राधा रानी सरकार है।
चाकर उनके कृष्ण मुरारी ।।
बिन राधा के कृष्ण को
कोई कभी ना पाता ।।

राधा का  कृष्ण से ,

जनम, जनम का नाता ।।

मोर ने जब कृष्ण, कृष्ण पुकारा

उस छलिया मोहन का खुला नही था द्वार ।।

जब वरसाने पहुच मोर ने,

राधा राधा बोला।।

तब राधा की चाबी से ही

श्याम का खोला ताला ।।

जो श्याम से मिलना चाहे। राधे, राधे, बोले ।

राधा नाम की चाबी से श्याम का ताला खोले।

# भजन राम का अति सुख दाई

जपो राम जपो राम सीता।

जो भी यह जाप करे सुखी हो वो जीता।।

सीता राम सम कोई हितुना हमारा।

सीता राम कहो भाई सीता राम है प्यारा।।

काम, क्रोध लोभ, भय सबसे हो छुटकारा ।

राम ब्रम्ह परमेश्वर , इस जग को रचने बाले ।

सीता शक्ति राम की माया, राम ही उसको पालो ।

सीता राम जपन से माया, भक्ती से सुख देती ।

माया देवी बडी सयानी सबका मन हर लेती ,।

माया से जग को रचने वाले ना बच पायें ।

ना जाने इस माया ने क्या, खेल खिलाये,।

राजा हो रंक सभी को माया ने रंग डाला।,

माया संग श्याम खेलता, होकर के मत बाला।

माया को हृदय बिठाकर नाचत है, घन श्याम।

राधा, राधा वंशी पुकारत , नित्य करें यह श्याम ।

राम कभी श्याम बन्ता, सीता माता राधा ।

सीताराम कहो मेरे भाई मिट जाये सब वाधा ।

सीताराम , राधे श्याम दोनों में प्रेम समाय।

करो प्रेम सीता राम हि फिर नित्य करेगी माया।

सीता अन्दर राम बसत है, राम के अन्दर सीता ।

दोनों मिलकर जगत नचावत भजलों परम पुनीतां

जपो राम, जपों राम सीता, ।

जो भी यह जप करें सुही हो वो जीता।।

# सखी की प्रीत

गई ब्रन्दावन घूमन, वहा मिला नन्द का लाला।
काले मतवारे नैनो से, उसने ऐसा जादू डाला ।।
में ना समझी काले को, वो है सुन्दर मत बाला।
अपनी प्यारी सूरत से उसने रंगडाला।।
घर में आकर जहां निहारू वही पडत दिखाई।।
में जहां भी डोलू कान्हा दिखता, ऐसी प्रीत लगाई।।
विरह वेदना ऐसी बाढी, बन वैठा चितचोर,
मेरे अन्दर, बाहर झाके मचा मचा के सोर ।
वह छलिया क्या समझ सकेगा इस विरहा की पीर,
नटखट श्याम सलोने ने आकर मुझे बंधाओ धीर।
जब भी पुकारों श्याम, श्याम अखियों, में आ जावै।
जब भी उस की सुरत करू, आखो में पानी लावै।।
चित, चोर श्याम से, सखी तुम भी प्रीत लगालों।
मोंटी, कजरारी आखों बाले को, अपने दिल मैं बसालों।

# सतरंगी है, श्याम

काले कान्हा में छिपे, भांति भांति के रंग ।
ढूढत है हम काले कान्हा मिलेगा उसका संग ।।
सात रंग की बनी चुनरिया, श्याम ने रंग दीन्ही ।
रंगो के अजव मेल की अब करवा दो चीन्ही।।
हरा रंग हर्ष भरदेता, पीला प्रीत बढाता ।
नीला रंग गगन से सुन्दर, श्याम रंग है भाता।।
लाल रंग में रंग कर सुख देती है श्यामा ।
बैगनी सुन्दर ओढनिया से सजा हुआ है धामा ।।
सात रंग की प्रीत पुरानी, चक्र सुदर्शन धारी।
लिये पीठ पीछे चक्रोसे आवै सुरत तुम्हारी ।।
सूरत देख मन हर्षित हो, चक्र सभी दिख लाते ।
सातों रंगों से उठत उमंग, श्याम हमें मिल जाते।।
परम समाधी जिसको, कहते वह चक्रो का मेल ।
सात रंग आकर दिखलाते वडे वडे ही खेल।।
सात रंग की चाबी राधा, श्याम हमारा ताला।।
खोल सके तो खोल ले बन्दे, मिल जाये नन्द लाला।।

# नारी का सम्मान करो

जिस घर में होता नही, नारी का सम्मान ,
वह घर तो घर नही, वह तो है समसान।।
देवी देवता रूस्ट हो स्वीकारें ना पूजा ।
नारी को दुख मत देना, इस सम पाप ना दूजा।।
नारी घर की लक्ष्मी है, जो भी इसे सताये ।
लाख कोशिशों वाद भी सुख को वो ना पावे।।
नारी नर की जननी है, सदा करो सम्मान ।
यही बात बतात है, सारे वेद पुराण।।
सेवा,दया, ममता, धीरज की नारी ही है खान ।।
नारी को तो समझ लो बौरये हुये इन्सान ।
जिस घर लक्ष्मी रूपा नारी का सम्मान ।
ईश्वर भी प्रशन्न हो दे देते बरदान ।।
पुत्र, पती और घर वालों का रखती है वह ध्यान ।
नारी तुम घर लक्ष्मी हो, तुम को करू प्रणाम,
राधा तो हो श्याम जपे, श्याम जपे नित राधा ।
नारी के सम्मान में क्यों आती है बाधा ।

# मोबाइल, कम्प्यूटर का सहारा

मुठठी में हो गई, सारी दुनिया जान।
मोबाइल और कम्प्यूटर जी तुम हो बडे महान।।
दुनिया का हर ज्ञान, तुम में गया समाई।
हाई डिस्क और पेन ड्राइव में दुनियान नई बसई।।
गूगल बाबा से बडा दुनिया में ना ज्ञानी ।
इस बाबा के अन्दर में दुनिया सभी समानी ।।
मन में कोई प्रश्न हो हल खोजत तत्काल ।
गूगल बाबा में भरा, माया का सब जाल।।
घर में ऑफिस, घर व्यापार, घर से होती बात ।
सभी समस्याये हल होती दिन हो या रात ।।
घर बैठे हम घूमते , सारी दुनिया देश ।।
घर बैठे ही देख लो, जो चाहो पर देश।।
लोक डाउन में दिखे, तुम्ह ही एक सहारा ।
सभी समस्याओं का हल, तुमने ही कर मारा ।।
मोबाइल मित्रवत तुमने की जो सेवा।
मोबाइल के रूप में, तुम बनके आये देवां। ।
धर्म तुम्हारे अन्दर आकर सारे गये समाई ।
तुम्हारे अन्दर, आकर, बन्द पडी लडाई।।
तुम सम दर्शी हो, करते सर्व धर्म सम्मान
मोबाइल और कम्प्यूटर जी तुम हो जगत महान,
मानव मन में भी ऐसा ही कम्प्यूटर आजा वे ।
सर्व धर्म सम्मान हो, धरा स्वर्ग बन जावै।।

# हरि कैसे मिलें

माया पति की माया से ना मिलता आराम ।
करते, करते काम को मुख से जपलो राम ।।
राम नाम के जपने से बन्ते सारे काम ।
दुनिया की इस भाग दौड में ना मिलता विश्राम।
भक्त शिरोमणि हो गये, भक्तों में रैदास। ं।
राम नाम का जाप कर , वन के उनके दास ।
कवहु ना छोड काम कों, मुख से लीन्हा राम।।
काम करत और हरि जपत पागये वे विश्राम ।
प्रभु जी आकर प्रीत वस, उनसे मिलने आये।
काम सहित, हरिनाम जप उनके दर्शन पाये।।
मन से हरि जाप की, मनुआ आदत डालों।
काम करत हरि नाम जप, तुम भी हरि को पालो।।
बिना प्रभू के प्रीत के यह दुखिया जग सारा।।
तुम भी हरि से प्रीत लगाओ करलो मन उजयारा।।
भजन कीर्तन लीला धाम में बास करत गिरधारी ।
सन्तों से बो प्रीत करत है, मैरे कृष्ण मुरारी ।।
भजन कीर्तन, लीला से मन में प्रीत जगाओ
प्यारे, मोहन, राधा के संग वो छलिया को पालो।

# गोपाल ही सबको नचाते है

अखियों से जादू डाला, मोहलिया नन्दलाला ।।

कान्हा बृन्दावन लाला, मुरली ने रंग डाला।।

खुद तो वह रास रचाता, सखियों को नच वाता।।

माखन भोग लगाता, चुपके से हाथ बढाता ।

कभी दिखता, कभी छुप जाता, कोई समझ ना पाता।।

कभी बन्ता गोवर्धन धारी, सूरत उसकी प्यारी प्यारी।

बैठा छुपकर मेरे अन्दर, कर दिया कछु जादू मन्तर ।।

सुन्दर बाल मकुन्दा , आनन्द रस बरसाता।।

हे गोविन्द, गोपाल तुम्ही से सारे जग का नाता।।

में निस दिन मजू गोविन्दा, काटो पम के फन्दा।

परम पिता परमेश्वर तुम हो में तेरा ही बन्दा।।

# शक्ति बनकर सभी में समाया

बिन शक्ति कछु कामना होता, सुन लो मेरे भाई।
शक्ति हर चीज में, ना पडती कमी दिखाई।।
लकडी में बन के चिनगारी, हम को पडती जान।
यही शक्ति का पुन्ज निराला, शक्ति को पहिचान ।
बीज रूप में छिपकर बैठी , वो अन्जानी माई।
पेड रूप जब बनजाता, उपर पडत दिखाई।
शक्ति को सभी चाहिये, हवा, पानी और धूप।
तब शक्ति प्रकट होकर के लेती अपना रूप।।
आणु, परमाणु से भी छोटे,इलैक्ट्रोन प्रोट्रोन,।
सभी तत्व में छुपा हुआ है प्यारा सा न्यूट्रोन।
पर शक्ति उससे छोटी है, करती वृहद संहार।
परमाणु, अणु की होती जब वौछार ।
शक्ति है , अविनाशी वो घट, घट की वासी।
शक्ति हमें ना पडे दिखाई वो तो है, अविनाशी।
शक्ति के बल पर होते, छोटे, बडे सब खेल।
शक्ति से चलती गाडी, और चलत है रेल।
शक्ति का रूप ना देख सका, बस देखा उसका काम।
शक्ति बिना ना घूमें पहिया रूकता सकल जहान ।
शक्ति की झलक ज्वाला, रोशनी धूपं।
शक्ति से ही बने सूरमा, राजा रानी, भूप ।
शक्ति के है, रूप निराले लो अब उनको जान।।

शक्ति से बिना ना पूजे जाते मेरे ही भगवान।
शक्ति से बन्ती दुनिया, शक्ति से मिट जाती ।।
शक्ति कहां से आती और कहां छुप जाती ।।
आज तलक ना समझ सका भोला सा इन्सान ।।
शक्ति पिता परमेश्वर प्यारे को लो अब पहिचान ।।
आत्म तत्व मानव तन बैठा, बन करके अविनाशी ।।
आत्म तत्व जाने बिन, कैसे मिटे उदासी।।
आत्म तत्व को सभी समझाते ये ही मेरे प्रान।।
आत्म तत्व ही ईश्वर, बन्दे लो पहिचान ।।

# भगवान ही परम हितू है

किसी बात की चिन्ता मत करें ।
छोड दे चिन्ता सारी।।
हरि की शरण में आजा प्यारे,
कान्हा है, दुख हारी ।।
जो भी करूणा से भजता,
आते कृष्ण मुरारी।।
हर लेते सारे कष्टो को,
भक्तो के हितकारी।।
भक्तों के बस में रहते,
हर दम ही भगवान
भक्त उनके शिरोमणि,
भक्त ही उनकी जान।।
भक्त माल सुनने के वे ही पक्के रसिया।
सुन्ते भक्तों का गुण गान ।
भक्त वक्सल है, राधा मोहन,
तुम भी लो उनको पहिचान ।

# मेरे अन्दर आत्म रूप में बैठा है

मेरे अन्दर बैठा,

मुझ को ही नाच नचाता ।।

में नाच नाचता रहता।

फिर भी समझ ना पाता ।।

में जहां, जहां भी जाता ं।

मेरे साथ ही वो जाता ।।

मेरी ही परछाई बनकर ।।

मेरे अन्दर ही छुप जाता ।

में मन्दिर में जाकर, फूल और भोग चढाता।

वह फूल प्रसादी देखे, अन्दर ही मुस्काता ।।

में ढूड,ढूड, कर हारा, ना मिले हरि हमारा।

जब राधा, राधा, बोला, उसने खिडकी को खोला ।

वो खिड की से पडा दिखाई,

मेरा कृष्ण कन्हाई।

# माया के कारण प्रभु दर्शन नही होते

माया प्रभू से लड पडी, तुमह क्यों रोकत मोय ।
जो प्रभू को भजता नही, में क्यों छोडू सोय ।।
माया पति, माया से बोले, सारा जग मेरा उपजाया।
जगत के सारे जीवों को तुमने ही है, भरमाया।
पापी का भी मन, जब पापों से भर जाता ।
मन में हर दम भय होने से, में ही उन्हें दिखाता ।
पापी भी अनचाहकर करते मेरा ध्यान।
हे माया महारानी तुम उन जीवों को पहिचान ।।
माया पति की माया ने, सब पर जादू डाला।
माया के बस होकर नाचत, याद कहां नन्द लाल ।।
जब माया से खेल, खेल कर, उसका मन भर जाता ।
माया से छुटकारा पाने, पास मेरे आ जाता ।
हे माया देवी तुमने ही, सारे खेल खिलाये।।
बन्दा उलझा भकड जाल में, वो कैसे भग पाये।।
में ही जाकर उन बन्दों को, सही राह दिख लाता ।
साथ , मेरा पाकर के वह, मेरे पीछे, पीछे आता ।।

# भक्तों के हितकारी कृष्ण मुरारी

यशोमति का लाला, कान्हा बृन्दावने बाला।
कलिया नाथ नथैया, बलदाउ का भइया ।।
बन में वो गाय चराता, सखियों संग रास रचाता।
राधा संग प्रीत लगइया, सबका चैंन चुरइया।।
आखों में जादू डाला, मोहलिया नन्द लाला।
बंसी मधुर बजाता, सबके मन को वो भाता।
जो भी प्रीत लगाता, वह उसका ही हो जाता।
जब भी पुकारो कान्हा, वह दोडा, दोडा आता ।
भक्तों का हितकारी, माधव मदन मुरारी ।
ऊधव, विदुर ने जाना, मोहन को पहिचाना।
अर्जुन ने प्रीत लगाई, उनकी करी सहाई ं।
विराट रूप दिखलाया, अर्जुन के मन भाया।
द्रोपदि का चीर वढाया, कोई समझ ना पाया।
मीरा जो गिरिधर गई, हृदय में गया समाई
तुम भी भजलो भाई, मोहन कृष्ण कन्हाई

# बृन्दावन के बांके विहारी

राधा मोहन एक हुये, बन गये बांके विहारी ।
हरिदास भगत की भक्ती, रीझे कृष्ण मुरारी।
बिन्द्राबन में बांके विहारी, मन्दिर आन बिराजे।
मधुर,मधुर मुस्कान श्याम की, मीठी बंसी बाजे ।
इस प्यारी बंसुरिया की धुन, आज भी पडत सुनाई।
यह रहिस्य समझे ना कोई, सुनलो मेरे भाई ।
राधा मोहन पडत दिखाई, जब, जब भक्त पुकारे ।
बडी दूर से दौडे लगाकर आता उनके द्वारे ।
भक्तों की भावना, श्याम करें स्वीकार।
मीठी, मीठी बंसी बाजत, कानों में भंकार।
राधा मोहन एक रूप है, तुम भी करलो प्यार।
बंसी की मीठी धुन सुन, मनुआ प्रीत से डोले।
जिसने भी यह धुन सुनली है, उनके पीछे होले।
बिन्द्रावन है रास, रंगीली, प्यारा सा धाम ।
बास करें जहां बाके विहारी, भक्तों के घनश्याम
राधा, राधा, हर कोई बोलो, और मस्ती में डोले। ऐसा प्यारा धारा धाम , जहां निरित्य करत है भोले ।

# कान्हा मुझे बचाओ

दुनिया में है, दुख अति भारी, पता नही क्या नाथ।
कव कृपा बर साओगे, है दीन बन्धु रघुनाथ ।
जल में तूफान उढत है, उल्का पिड धरती तर आवत ।
कोरोना बनके वीमारी, सब को ही नाच नचावत।
नभ में, जल में, थल में, उथल पुथल है भारी।
यह जग है, विपदा का मारा, सुनलो बांके विहारी ।
प्रकृति प्रकोप, मचाती भारी, जीव सभी दुखियारे।
प्रदूषण, कभि वाढ भयंकर , उल्का पिड दिखारे।
आजाओ हे नाथ, सभी संकटो को टालो।
प्रकृति संतुलित हो जाये, आके सभी बचालो।
धरती पर प्यार बढे, सभी लोग हो साथ ।
यही विनय है, प्यारे मोहन मेरे प्रिय रघुनाथ।
हर कोई अब एक दूसरे से, दूरी बहुत बनाता।
प्यार घटा पहले ही , अब छूटा रिस्ता नाता।
बिना प्रेम के चले ना गाडी, प्रेम हुआ है दूर।
दूर, दूर, रहने को, जन्ता है मजबूर ।
आओ कान्हा आकर प्यार बढाओ ।
दुनिया के टूटे, रिस्तों को, आके आन बचाओं।
राम राम कहने से कष्ट हरत हनुमान ।
राम नाम सुनने को तरसत है कान ।
राम नाम से प्रीत लगा लो, ।

राम प्रिय हनुमान को पालो

जय सिया राम जय, जय हनुमान

संकट मोचन जय हनुमान

राम नाम लिखते, लिखते

मन मे होती प्रीत ं।

अन्दर बैठा है, मन मोहन ।

बन जाता मनमीत ।

मन हो जाता राधा बस में

गीत गोविन्द के गाता ।।

राधा कृष्ण एक रूप है

कृष्ण मजो श्री राधा।।

# सारी श्रष्टि का आधार राधा नाम, है

कान्हा मुरली मधुर बजाई ।

बोले, राधे, राधे।।

राधे– श्याम का प्यार ।

बोले, राधे, राधे।।

जो भी करते प्यार।

बोलें राधे, राधे।। जिस में छिपा संसार ।

बोलो , राधे, राधे,।।

राधा है, आधार।

बोले, राधे, राधे,।

जन्मों, जन्मों का प्यार ।

बोले, राधे, राधे।

हो जाओ भव से पार ।

बोलो राधे, राधे ।

राधा नौका श्याम पतवार बोलो, राधे, राधे ।

प्यार जगत आधार

बोलो, राधे, राधे,।।

राधा है शरकार ।

बोलो, राधे, राधे।।

सुखी हो व संसार ।

बोलो, राधे, राधे। ।

हम भी करते प्यार ।

बोलो, राधे, राधे।

तुम भी करलो प्यार।

बोलो, राधे , राधे।

लिये श्रष्टि का भार ।

बोलो, राधे, राधें।।

प्राणों का आधार ।

बोलो, राधे,राधे।।

# परमानन्द की प्राप्ती

जिन्दगी में कोन, चाहता है।

परमा नन्द को पाना ।

हरि का नाम, जपलो ।

लीला गुण गाना।

बना रहे धमों में जाना ।

बोलो, राधे श्याम ।

बोलो सीता राम ।

मिट जाये सब काम।।

बन जायें सब काम।।

बोलो सीता राम।।

जो भी हरि को ध्यावे।

बस उनका ही हो जावे ।

वे ही करते रखवारी

हर दम सूरत हमारी ।

सभी कष्ट हर लेते ।

वे ही सब सुख देते ।

बोलो सीता राम बोलो राधे श्याम ।

भक्ती है , सुख दाई ।

सुनलो मेरे भाई ।

मीरा ने गिरधार गाया।

तभी श्याम को पाया ।।

नानक ने ध्यान लगाया।

राम दौडकर आया।

मस्त हुये कवीरा ।

मिट गई भव की पीरा।

तुलसी ने राम पुकारा।

राम बन गये उनका सहारा।

तुम भी भक्ती करलो

राधे, राधे जपलो ।

राम श्याम है एक

नही  कछु है भेद

राधा में श्याम समाया।

सीता ने राम बसाया

सभी नाम सुख दाई ,

जानलो मेरे भाई।

# अन्तर से पुकार से हरि मिलते है

अन्तर मन में प्रीत कर ।

हरि को लेय पुकार ।

आरत बचन सुन ।

दौडते कृष्ण मुरार ।

राधा हर दम कृष्ण रटत।

कृष्ण रटत है राधा ।

राधा कृष्ण एक रूप हों ।

मिटा देत है, हर वाधा।

अन्तर मन प्रीत बिन ।

हरि नहि रीझत जान ।

अन्तर मन में प्रीत कर ।

हरि को लो पहिचान ।

मन से प्रीत लगाकर वोलो राधा

भव की सारी पीर हरें, हरलेगी सब बाधा।

राधा नाम मन में लिखते हो जाती है प्रीत

अन्दर बैठा है मन मोहन बन जाता मनमीत

मन हो जाता राधे, बस में ।

गीत गोविन्द के गाता ।

राधा–कृष्ण एक रूप है

कृष्ण मजो श्री राधा ।

# (तुम्हारा, हरि अन्दर ही बैठा है)

तुम ना शरीर हो,

हे, तुम हो आत्म रूप भगवान ।

वो अन्दर ही, बैठा है लोयह पहिचान ।

सारे खेल उसी की रचना ।

हर कोई समक्षना पाता ।

हरि से ध्यान लगाने से ।

सब सभ्भव हो जाता

जो भी, जभी तुम्हें चाहियें ।

हरि ही सब पहुॅचाता ।

पंच तत्व, से रची यह काया।

पंच तत्व संसार रचाया।

माया ने जब डेरा डाला

नया खेल जग में रच डाला ।

सब कुछ है, पर सब नहिपाते ।

सब पाकर प्यासे रह जाते

अन्दर बैठै हरि को जानो

करलो , उनसे पहिचान ।

हरि से ध्यान लगाओ, मिल जाये सब ज्ञान ।

# श्रमिकों की समस्या

फिर से भीड दुखी जनों की गांवो में पडे दिखाई ।
पहले भूख इन्हे गांवो से ले शहरों में आई।
काम किया पूरे प्रेम से दुनिया नई बसाई।
ठेला, रेडी, ई रिक्सा, ओर अन्य कार्य से थोडी करी कमाई
बडी , बडी फैक्ट्रियो में बना, बना सामान ।
दर्द इनका ना समक्ष सकें ना कोई इन्सान ।
कोरोना मे भी इनको आंख दिखाई।
भूखे, प्यासे रहकर रोगों से करें लडाई ।
हजारों मीला पैदेल , भूखे चलते रडधीर ।
राजनीति केचल रहे, आगे, पीछे तीर ।
इनके दुख दर्द को कब समझेगा इन्सान ˙
इनकी दीन दसा पर रोता है भगवान ।
रोते छोटे बच्चे, बिन, रोटी, पानी चलते ।
जिन्हें, देखकर कुछ धर्मी देते सहार दिन ढलते ।
भारत के विकास में जो हरदम अपना श्रम देतें।
बदले में कुछ नही भागते बस रोटी, पानी लेते।
क्या बडी, बडी अटालिकायें बिन इनके बन पायेगीं।
कल,कारखानों में इनकी कमी सतायेगी।
श्रमिक बीर गांव में रहकर अपनी भूख मिटायेंगें
बनी फैक्ट्रिया, आगे हम कैसे ओर चलायेंगे।
भारत की मांग पूर्ति में भारी अन्तर आयेगा ।

श्रमिक जब नही मिलेंगें माल कौन बनायेगा।
भारत की अर्थ व्यवस्था पर भी संकट भारी ।
हे, प्रभु तुम से विनय करू तुम हो संकट हारी ।
तुम हो दीना नाथ, तुम दीनों के पालन हार ।
दया करों इन दीन दुखियों पर करते यही पुकार ।
संकट की इस घडी में मिलकर वोझ उठायें ।
श्रमिकों को सहारो देकर उन्हें सुखी बनायें।

# वांके विहारी का चमत्कार

बांके विहारी कव किसको, क्या चमत्कार दिखलाये।
कब आजयें कोई ना, जाने कब बालक बन जाये।
छलिया बनकर पडें दिखाई, कोई समझ ना पावै।
जब द्रस्य घटित हो, जावे तभी समझ में आवे।
एक वार गया वृन्दावन, मन्दिर बांके विहारी ।
मैंने पुकारा नाथ, दर्शन दो गिरधारी ।
एक छोटा बालक मेरे पास आ फूलो को फेंका ।
में समझा इस बाल को हो गया कछु धोंका ।
फूलों को मन्दिर में नही चढातां।
उल्टा मुह कर के मेरे उपर यह बर्षाता।
में समझाा यह बालक है बहुत ही नटखट ।
मेरी आखो के आगे समा गया वह झट पट ।
मेरे सनमुख आकर के भी बात नही हो पाई ।
में तो कुछ भी समझा ना पाया तुरंत ही गया समाई
पांच अक्टूवर दो हजार उन्नीस की है यह बात
दर्शन पाकर धन्य हुये पर चेंन न अब दिन रात
हरदम मूरत मन्द, मन्द मुस्कावे।
वाके की लीला कोई समझ ना पावै।

# बांके विहारी की सुन्दर भक्ति

दर्शन पाकर, बाके विहारी, मिट गई दुनिया दारी ।
सुन्दर, क्षवि, मुस्कान मनोहर है, पीताम्बर धारी ।
मुरली हाथ, राधिका का साथ, मोर मुकट अति शोभा न्यारी ।
बार,बार, बलि, बल जाउ, मेरे प्यारे बाके विहारी ।
धन्य छटा, प्रेम बरसात, दर्शन से अंखिया भर आवत।
तुम्है, निहारू निसपल, मनुआ को यह भावत ।
भक्त, मुनि सब ध्यान लगावत, प्यारी छविमन बंसाबत।
परम प्रेम, हिय में उपजे, परमानन्द से लाड लडावत ।
अखण्ड अनादि, ब्रम्ह को ध्यावें फिर भी कछु समक्षना पावे।
आनन्द सिधु में डूब कर, अपनी नइया पार लगावे।
बांके विहारी अपने भक्तों पर, लाड लडावें।
स्वीकार करो मेरी विन्ती भोग प्रसाद तुम्हें चढावे।

# सोच सुधारें

जो भी सोचें, मन में वही बात समाती ।
सोच, और मनका सम्बध जैसे दिया हो वाती ।
सोच मन में आकर बन जाती है ।बाती ।
बाती मन में आकर नई राह दिखलाती ।
मन, और सोच का हर दम करो सुधार ।
मन और सोच बन्ता जीवन का आधार।
सोच, और मन मिलकर करते काम ।
जब सोच और मन गलत हो, तब होत बदनाम।
सोच, समझ से करते रहन काम।
सोच अगर सही है ना होगे बदनाम।
सोच, कर्म की भाई,
इसको समझो भाई
अच्छी सोच से सदकर्म होत है,
बुरी सोच दुख दाई।
धर्म हमें, अच्छी सोच से, अच्छे कर्म बताता ।
सोच, कर्म का बहुत पुराना जन्मों से है नाता।
इसी लिये धर्म सभी का जगत पिता कहलाता।
पिता सदैव करता है, पालन और करत रखवारी।
सही सोच बन पावन करती बन के जग महतारी।
सोच बातों पर जब ना रहता है ध्यान।
कर्म रूप पुत्र तव, बिगडत जात लो जान।

मर्यादा, कर्म की पतनी, हर दम रखती ध्यान ।

कर्म चन्द्र विगड ना जावें, रखे सभी का मान।

अपनी सोच सदा सुन्दर हो, जीवन हो सुखदाई।

जीवन सफल बना लो अपना सुनलो मेरे भाई।

मन को सदा तुम घोडा समझो,

दे दो उसे लगाया।।

उपर सजग, सदा हो बैठो, ना आलस का काम ।।

मन तो कोरा कागज है, जिस रंग में डालों।

उसी भांति की फसल उगेगी इस को भी समझालो

आम बीज से आम, उगे, और पीपल से पीपल।

सोच, मन में, रंग भरे, गरम, नरम और सीतल।

मन चन्द्र की सदा बस मे रखना उसकी चाबी।

मन सदैव बस में रखना,

मत करना इसे गुलाबी ।

# राम भजन अन्त में काम आता है

हे जगदीश्वर, जगत के पालन हारे।
जगत पिता सब तुम को कहते तुम ही एक सहारे।
सारा जग तुमने रच डाला, माया रही नचाई ।
भरत सरिस आव भ्रात कहां कहां राम सा भाई ।
माया पति की माया ने, ऐसा जाल विछाया।
माया के इस चक्र व्यूह ने बहुतई नाच नचाया।
राग, द्वेश, स्वारथ बस होकर नाच रहा इन्सान
परम पिता परमेश्वर का छूट गया है ध्यान ।
धन, दौलत , लालच, औरत पर अपना ध्यान लगाया।
धन, दौलत, सोहरत  पाकर, अभिमान सभी को आया।
नही समझता एक दिन जाना, राजा, रंक फकीर ।
राम,राम, सुमिरन करके भी बचे नही कबीर ।
राम नाम की माया जोडी, धन दौलत नही कमाई ।
राम नाम लो भवसागर तर गया अदना बीर कसाई ।
राम, राम, शुमिरन करके, अपनी झोलीभरलों।
अन्त समय मत पक्ष ताना, राम भजन अब कर लो।

# राम में राधा मॉ छिपी कुण्डनी में वास है

राम, राम, जपलो, राम में ब्रम्ह समाया।

रा,को जब हम ध्याते, राधे, राधे, पाते ।

रा, से राधे, म, से मॉ का प्यार ।

राम में ब्रम्ह समाया र, ही रचता माया।

र, में प्रेम समाया, म, से बन गई माया।

जो राम, को जपत है, मन में कर विश्वास ।

माया पति , और माया उनके आते पास ।

जब मया पति की माया, मॉ बन जाती ।

जग को रचने वाली मॉ तब प्यार जताती ।

राम के साथ में सदा रहती है माया।

माया पति का साथ मिलत ही, संसय सभी मिटाया।

तुम भी प्यारे मजलो राम, का नाम ।

जीवन हो आनन्द में मिलते है भगवान ।

राम, अन्दर ही बैंठा , लगा कुण्डली ताले।

कुण्डली को जो खोलेगा, वही राम को पाले ।

सत रंगी चक्रो, मे, रमता रहता राम।

सातों चक्र जब खुल जायेंगे तब पा जाता आराम ।

सतरंगी, चको की, छटा बडी निरालीं ।

वही समझ सकता है जिसने इनको पाली ।

योग, किया, ध्यान, साधना और लगा समाधी।

सतो चक्र बस में करके दिखती छटा निराली ।

राम,राम, मन में जपने से सातों चक्र खुल जाते ।

राम, सतरंगी छाट दिखे हम प्रभु को पा जाते ।

राम नाम की ओढ चदरिया, राम, राम गालो।

परम पिता परमेश्वर की कृपा ,दया बरसालो।।

# जग के रचने वाले

हे जग को रचने बाले,हर चीज तुम्ही ने बनाई ।
प्रकृति , को हर चीज में तुम्ही पडे, दिखाई ।
सूरज, अम्बर , धरा, बनाईं।
नभ में सुन्दर तारे ।
भांति , भांति के पक्षी, कीडे ।
नदी, पहाड भी प्यारें, ।
सुन्दर, पेड, लता, हरी हरी घास।
सुन्दर, फूल फलों में दिखा तुम्हारा बास।
हे, जग को रचने बाले प्रभु।
में, भजू तुम्हें , दिन , रैन।
तुम को देखे, बिना प्रभू ।
अब पडे कहां मुझे चैन।
में तो भजता सीता– राम
भजता प्यारे, राधे श्याम ।
दुनिया के कामों से मिलत नही आराम।
मेरा, मन, तन, आत्मा सभी।
तुम्हारा रूप।
प्रकृति की हर चीज , ही लगे तुम्हारी धूप।
रचना रचकर, छुपकर बैठे है, भगवान।
प्रकृति की हर चीज में लो उनको पहिचान।

# बोलो राधे, राधे

में भजू श्याम, तेरा नाम।

बोलो, राधे, राधे।

में तुम को करू प्रणाम ।

बोलो, राधे, राधे।

मन में हो विश्राम ।

बोलो, राधे, राधे ।

बन जाते सारे काम ।

बोलो, राधे, राधे,

हर, पल, आवै याद।

बोलो, राधे, राधे।।

में जपू श्याम तेरा नाम ।

बोलो राधे, राधे ।

दरसन दो घनश्याम

बोलो, राधे, राधे

रखते, भक्तों का मान

बोलो, राधे, राधे।।

# राम नाम जाप उच्चस्थिति में स्वयं जाप होता है

हरि का नाम प्रीत, प्रेम से जो भी गाता।
अन्दर बैठा राम, परमानन्द बरसाता।
श्वास, श्वास में बस जाता राम बडा सुखदाई ।
इस दुनिया में राम से बढकर कोई नही दवाई ।
राम,राम रटने से हृदय में दर्श दिखाते।
और अधिक जाप कराने से कुण्डली जाप कराते ।
हरि मेरा भजन, करत है, में सोउ तब चैंन ।
कुण्डली में भजन चलत है, राम, दिखे तब नैंन ।
मनुआ राम भजन तू करले हरि से प्रीत लगावे ।
राम,नाम बडा सुख दाई राम, राम तू गावे।
तुलसी दास , निसदिन सोवत लम्बे पैर पसार ।
हरि , उनका भजन करें। प्रीत सहित हरि निज द्वार ।
दादू, नानक, ने, हरि से प्रीत लगाई ।
राम, उनका भजन करते है रोम, रोम सुनाई ।
रोम, रोंम बोले जब राम, तब वन्ते सारे काम, ।
राम, राम सुमिरन ही, सबसे बडा इनाम ।

# मनमोहन अन्दर ही बैठा है

समा गया मन में मनमोहन,

निस दिन पडे दिखाई,

आस, पास मन के अन्दर

झाके उसकी परछाई ।

राधे,राधे प्रेम पूरवक ।

गाओ यही तराना।

मोहन ही है, जग का स्वामी ।

अब हमने पहिचाना।

मन के अन्दर मेने झाका ।

बात समझ तब आई ।

तेरी प्रीत समानी अन्दर मूरत लीन्ह छुपाई ।

निराकर, निगुण व्रम्ह।

बैठा मेरे अन्दर ।

अथाह समुन्द्र रतनो से भरा ।

मेरे मन का अन्तर ।

# सफलता के आधार

जीवन में सफलता के सुनलो आधार ।
योग किया करते रहे । मन से राम उचार ।
मन,में सदभावना, और प्रकृति से प्यार ।
सत्य, अहिसा, त्याग, तपश्या बनते जीवन के आधार।
पर सेवा , भाई चारा, सदगुण का रखलो भण्डार ।
दया, क्षमा, सील, अनुशासन भारत मॉ से करलो प्यार।
सत्य सनातन धर्म हमाराा, सदा, सत्य, करो व्यवहार ।
शुध्द आचरण, शक्ति बनकर, सुखी रखें सारा परिवार ।
देश हमारा, रिषि, मुनिया का, भारत है, धाम ।
भारत माता तुम पर बलिहारी , तुम को करू प्रणाम ।

# राम सुमिरन से मन बस से होता है

तुम्हे ही सुमरत हु, तुम्हें ध्यावहु, तुम्हारा ही ध्यान लगाऊ।

तुम्हे ही गाउ, तुम्हें सुनाउ , और कहा जहा मे जाऊ

मन, सिन्धु गहरा, सबसे निराला, उठती है, कमी इसमें ज्वाला

परम, बेग बाला ये, मन ही हमारा।

बेग इसमें इतना तूफान इससे हारा।

पता नही में कहां, कहां उडा ये ।

कब किसको, कही , जाके गिरायें।

मन से अधिक नही किसी की उडान ।

पलक छपक ते ही घूमता है जहान।

मन पर होती है, जब बुध्दि की लगाम।

नैतिकता, और चरित्र से मिलता है, मुकाम ।

सदगुण, सदाचार ,मित्र, परोपकार।

साहस , त्याग, सेवा भाव सदाव्यवहार।

एक तुम ही हो बस हमारा सहारा।

राम , में बसे अब मन ये हमारा।

# पिता

पिता ने हम को जन्म दिया, धरा धाम पर लाया।
नैतिकता, अनुशासन, व्यवहार ज्ञान सिखलाया ।
बडे, प्यार से पाला पोसा अपना देकर ज्ञान ।
इस जग में पिता पुत्र के कहलाते भगवान ।
कभी – कष्ट आने ना देते, खुदही दुख सहलेते ।
धन, दौलत, दुनिया का वैभव सब कुछ वो देते ।
प्राण बसे सन्तान में जिन के,
पर सन्तान से सुख, देखकर ।
सन्तान से सुख – दुख पाते ।
खुद सुखी दुखी हो जाते ।
हाथ, सदा, वह थामें, रहते, आगे पथ पर चलने।
ज्ञान, मान, सम्मान सहित धन, वैभव से बढने।
निज, जीवन, का भाव सदा, नव जीवन पथ ले जाता।
सारे सुख, सन्तान को देता वही पिता कहलाता।

# भारत मॉ के बीर जबान

भारत माता सदा रिणी है
भारत के बीर जवानों।
जो माता को  सदा सतायें
उन गददारों को पहिचानो।
जिस मिटटी में, पले बढै।
उस माता के गुण गायें ।
अपना, प्यारा, स्वच्छ, तिरंगा,
सीमाओं पर लहरायें ।
जो भी मॉ को आंख दिखाये,
उसको लो पहिचान।
भारत मॉ के बीर जवानों
घटे ना मॉ का मान ।
जे बैटे सहीद हुये हैं
दे दी अपनी जान
भारत माता गर्मित है।
है पुत्रो बीर महान ।
नमन, तुम्हें नम आखों से ,
करते है, भारत बासी ।
भारत मॉ के बेटो के
दुख से , छाती है उदासी ।
जो सीमाओं पर बलदान हुये।

हम, उनको शीश नवाहाते।
भारत मॉ से सदा, रहेंगे उनके जीवन नाते ।
लिखा, रहेगा उन वीरों का अमर लिस्ट में नाम।
श्रध्दा सुमन तुम्हें, चढाते, बन्दन तुम्हें प्रणाम ।

# राधा कृष्ण एक रूप

पहली, रोटी, गाय को।
दूजी दो भगवान।
राम, कृष्ण दोउ।
एक है, सही वात पहिचान ।
मन बुध्दि, बस में करें।
कसकें देय लगाम ।
सब संसय मिट जायेगा।
जब बस में होवै काम।
मन बुध्दि से ध्यान धर ।
हरि से प्रीत लगालो ।
मन प्रसन्न कर रोज ही ।
राधे, राधे गालो।
जब उपजे गा प्रेम रस।
हरि हृदय में डोले।
हरि प्रेम श्रष्टि का सार है।
राधे, राधे बोले।
राधा, नाम जपने से खुश होते गोपाल।
राधा, रानी भक्ति है, भक्ति बसत नन्दलाल।
राधा, राधा जपते है। मेरे कृष्ण मुरारी ।
राधा की सूरत, मूरत हिय धरते है गिरिधारी ।
राधा, राधा जपने से कान्हा दौडा आता।

कान्हा के आजाने से सारा झगडा मिट जाता।

भक्ति के अन्दर श्याम, छुपे, श्याम के अन्दर भक्ति

दोनों  मिलकर जगत नचावत अविनाश वह शक्ति

# प्रभू प्रेम ही सार है

हे मन तू क्यों रहत उदास ।
तेरे घट में परम प्रभू का वास ।
मन्दिर, मस्जिद, गिरजा में
जो बैठा भगवान।
वही तुम्हारे घट के अन्दर ।
अब तो लो पहिचान ।।
हर जगह, हरपल,
हर बस्तु में उसका वास।
बिन पहिचान मनुआ रहत उदास।
हरि तो प्रकट प्रेम से होते,
यह बात लो जान।
हरि का भजन सदा सुखदाई ।
तुम भी लो पहिचान।
प्रेम सहित, राधेश्याम सीताराम बोलो ।
अन्दर लगे कपाट को अब तुम भी खोले।
राधे, राधे जपने से मिलता कृष्ण कन्हाई ।
जाप करो काम करते कष्ट मिटेंगे भाई ।

# राम नाम सुमिरन करो

हे, जग बन्दन, जानकी रमणा,
दीन बन्धु दीनन हितकारी।
काम कोटि छवि, श्याम बरण।
रघुकूल तिलक जगत भयहारी ।
सन्तन, त्रिृषि, मुनियों के रक्षक ।
सन्तों,भक्तों के प्राण आधार।
पशु, पक्षी, गिरी, पादप, लतायें।
परम प्रभू से करते प्यार।
राजीव लोचन भव भय मोचन।
तुम सम नही कोउ उदार।
जो तुम्हारा नाम उचारे ।
तुम उसका करते उध्दार ।
ऐसे परम दयालु कृपालू।
मेरे रामचन्द्र सरकार।
राम नाम का सुमिरन करलो।
राम नाम से करलो प्यार।।

# राम का शक्ति रूप

राधे, मॉ ने, ब्रम्हा, विष्णु, शिव को शक्ति दे डाली ।
ऊॅ रूप में शक्ति बांटी, राधे, मॉ मतवाली ।
शक्ति ने माया बल पाकर, रच दीन्हें ब्रम्हाड।
शक्ति रूप ने रचे निराले, सतों खण्ड ।
सात लोक की स्वामिनी है राधा, मॉता ।
शक्ति रूप का भेद, कोई जान नही पाता।
एक विन्दु पर विष्णु बैठै, एक विन्दु पर ब्रम्हा ।
एक विन्दु पर भोले, बैठै, विना शक्ति सब तन्हा
राधा तो त्रिकोड के अन्दर, उसके नीचे भाई ।
इस, ने की ब्रम्हाड की रचना ना ही पडे दिखाई ।
सारी रचना, जोड कर बन जाता है राम ,
उपर छत्र ,नीचे मुकुट मणि, तीनों कोंण त्रिदेव ।
राधा तो मध्य क्षत्र में, मॉ मणि दर्शन लेव।
राधा छत्र , मॉ मुकुट से, बन जाता है राम ।
राधा, संग मॉ समा गई, करें शक्ति का काम ।
राम, राम, रटने से शक्ति, सिध्द हो जाती ।
फिर सच्चे पथ पर चलाने की राह तुम्हें बताती।
जव शक्ति का अन्दर हो जाता है वास।
मनुआ हो प्रसन्न तब राम उसी के पास।

# सदगुण संगति और भगवान सहारे है

सदगुण का फल है सुख दई ।
दुर्गुण का फल तो दुख है भाई ।।
सत संगति भविष्य संवारे ।
दुष्ट संगति सब खेल विगारै ।।
स्वर्ग , नर्क, सब साथी, विगडे में ना साथ निभाई
स्वारथ बस सब प्रेम जतावें।
काम सरै फिर पास ना आवें।
दुनिया में सब शरीर के नातै ।
बिन शरीर पहिचान ना पाते।
जन्म , जन्म जो करता प्यार।
मेरा प्यारा कृष्ण मुरार ।
जो हर विपदा को टाले ।
प्यारे कृष्ण है मुरली बाले।

# कोऊ ना हित् हमार

हरि बिन कोउ ना हितू हमार।

हरि ही सारे काज संवारे।

जग सारे स्वारथ के रिस्ते।

स्वारथ बस जग चाकी पिसते।

विपत्ति काल कोउ साथना आवै ।

बने काम सब हाथ लगावे।

हरि हमारे, विपदा हारी ।

सुन्दर क्षवि मेरे गिरी धारी ।

सुमिरन करलो मन से उनका।

कष्ट हरें वो सबके मनका।

नाम कृष्ण का है, सुख दाई ।

तुम से कहता सुनलो भाई ।

हरि नाम का सुमिरन करलो।

भव सागर से पार उतर जो।

# दुर्गुण त्याग हरिभजन करें

अन्दर ही छुप कर बैठा है, प्यारा सा भगवान ।
मन के अन्दर नही झाकता हरकोई इन्सान।
विपदा जब पडे, दिखाई, तव उनका सुमिरन करते।
स्वारथ, लालच, दम्य, ईर्षा मन में लीन्ह बसाई ।
परम पिता परमेश्वर तुम को कैसे पडे दिखाई।
धनवल, मनवल, तनवल, घमण्ड ने डाला है डेरा।
तुम्हारे जीवन में कैसे हो सुनहरा श्याम सवेरा।
दया, धर्म, सेवा, उपकार, इसकी सकल दवाई।
स्वास्थ्य, लालच, धमण्ड, ईर्षा , इनको दूर भगाई ।
परम प्रभू का सुमिरन निश दिन, कर ले तू इन्सान ।
जाग,जाग,मत सोवै , यह अवसार ना खोवे कर ध्यान।
राम, राम, मन सुमिरन कर विरथा जन्म ना जावै ।
अवसर निकलै, हाथ कछू ना फिर का है पक्षतावै।

# सदगुण, संगति और भगवान ही सहारे है

सदगुण का फल, है सुखदई ।

दुर्गुण का फल तो सुख है भाई ।

सत संगति सब खेल विगारै ।

कर्म फल भाई । बन के सब।

स्वर्ग, नर्क, सब करम फल भाई ।

बने के सब साथी, विगडे में ना साथ निभाई ।

स्वास्थ्य बस सब प्रेम जतावें

काम सरै फिर पास ना आवें।

दुनिया में सब शरीर के नाते।

बिन शरीर पहिचान ना पाते।

जन्म, जन्म जो करता प्यार।

मेरा प्यारा कृष्ण मुरार।

जो हर विपदा को टाले।

प्यारे कृष्ण है मुरली बालें ।

# हरि बिन को उना हितू हमार

हरि बिन कोउ ना हितू हमार।

हरि ही सारे काज संवारे ।

जग सारे स्वारथ के रिस्ते ।

स्वारथ बस जग चाकी पिसते ।

विपत्ति काल कोउ साथना आवै ।

बने काम सब हाथ  लगावै।

हरि हमारे है, विपदा हारी।

सुन्दर क्षवि मेरे गिरि धारी।

सुमिरन करलो मन से उनका ।

कष्ट हरें वो सबके मनका

नाम कृष्ण का है, सुख दाई

तुम से कहता सुनलो भाई।

हरि नाम का सुमिरन करलो।

भव सागर से पार उतर लो।

# दुर्गुण त्याग हरि भजन करें

अन्दर ही छुप कर बैठा है, प्यारा सा भगवान ।
मन के अन्दर नही झाकता हर कोई इन्सान।।
विपदा जब पडे, दिखाई, तब उनका सुमिरन करते।
खुसिया हो जब जीवन मे, याद नही उनकी करते।
स्वारथ, लालच, दम्भ्य , ईर्षा मन में लीन्हें बसाई ।।
परम पिता परमेश्वर तुम को कैसे पडे दिखाई।
धनबल, मनवल , तनवल, घमण्ड डाला है डेरा।
तुम्हारे जीवन में कैसे हो सुनहरा श्याम सवेरा।
दया, धर्म, सेवा, उपकार, उसकी सकल दवाई।
स्वारथ, लालच, घमण्ड, ईर्ष्या , इनको दूर भगाई।
परम प्रभू का सुमिरन निश दिन, करले तू इन्सार।
जाग,जाग, मतसोवै, यह अवसर ना खोवे कर ध्यान ।
राम, राम, मन सुमिरन कर विरथा जन्म ना जावै।
अवसर निकलै, हाथ क छूता फिर काहे पक्षतावै।

# घर का माहोल अच्छा हो

घर का बातावरण जो अच्छा बनायेगा।
वही घर में सच्चा सुख पायेगा।
गाली दोगे सीख जायगे बच्चे।
बच्चे तो मनके होते है सच्चे।
गन्दा महौल, नरक बनाती है, घर को ।
सदआचरण, सदग्यान दूर करेगा। डर को।
भाईचारा, सम्मान, आदर बाणी संयम है। यंत्र ।
अनुशासन धर्म, मरयादा नैतिकता है मंत्र।
रामायण गीता भक्ति गुरू देते हमको ज्ञान।
सच्चे पथ के राही बनकर ईश्वर को पहिचाने।
राम भक्ति सुमिरन सेंवा कष्ट सभी हर लेता।
भक्ति, भाव से अर्चना, पूजन मन प्रसन्न कर देता।
राम नाम का सुमरिन, हे अति सुख दाई ।
राम नाम मंत्र राज है, जान लो मेरे भाई ।

# शक्ति ही पालन, संहार, जन्म का कारण है

मेरू दण्ड के सुरू में , जन्म, पालन, संहार ।
परम, पिता परमेश्वर की शक्ति का संचार।
शक्ति विराजी पिण्ड पर ढाई लपेटा लेय।
ध्यान, धारणा, समाधि से शक्ति ही,दर्शन देय।
जन्म का कारण शक्ति,पालन होता नाल।
पेट, के अन्दर, शक्ति ही, नाल ही पालन हार। ।
मुख से भोजन करत है, जढर अग्नि जल जात।
जठर अग्नि मन्द हो, तो हो जाता बात।
जठर अग्नि जब तेज हो, पित्त बढे तत्काल।
बात, पित्त ,मिलकें करें कफ सें हो बेहाल ।
भोजन ऐसा कीजिये, जठर अग्नि समहोय ।
रोग ना व्यायें शरीर को पैर पसारें सोय।
भोजन, भजन, ध्यान की महिमा वडी विशाल।
जैसा भोजन, भजन हो फल देखों तत्काल ।
शान्त भाव भोजन करें, मन प्रसन्न चित जाय।
स्वच्छता का ध्यान हो, अमृत वह बन जाय।

# कष्ट के समय भगवान ही सहारा है

समय चक्र  बलवान है, समय को  लो पहचान।
समय चक्र से नाचता सारा सकल जहान ।
कभी ग्रह नक्षत्र नरम, हो, कभी होत बलवान।
भीलों ने लूटी गोपियां, चले ना अर्जुन बान ।
महाभारत के युध्द में कौरव सेंना थी भारी।
पाण्डवों के साथ थे, प्यारे कृष्ण मुरारी।
सारथी बन कृष्ण ने, दिया पूर्ण सहारा।
धर्म, अधर्म का युध्द था समय ने सब कर डाला।
राजा हो या रंक, सभी से समय ने की मनमारी ।
राजा हरीशचन्द्र सत्यव्रत , भरा डोम घर पानी।
समय चक्र विपरीत समझ के, राधे श्याम को गालो
है, राधे–श्याम, मुरारी, विपदा मेरी टालो।

# भक्त की पुकार

मुझे पल, पल, आवै याद, निभाओ प्रभु याराना।
तुम बिन रहा ना जाये, नही, और ठिकाना।
धीर धरै ना मनुआ हो गया बौराना।
सुनू, सुनाउ, राधे–श्याम नाम का ही तराना।
सुन्दर छवि जब से देखी, बांके विहारी।
याद सदाके लिये बसी मोहन कृष्ण मुरारी।
बंसी मधुर, बजाकर प्यारे ऐसा जादू डाला।
मन मेरा, तुम्हारे चरणों में, ओ मोहन नन्दलाला।
हर दम करते, रहते, लुका छुपी का खेल।
एक बार सामने पाकर करलू तुम से मेल।
मन मन्दिर में बसी हुई, प्यारी सांवरी सूरत ।
बन्द आंख से दिखे कभी मुस्काती मूरत ।
आजाओ साकार रूप में मेरे कृष्ण मुरारी ।
करू बाते तुमसे सारी में हूॅ प्रेम पुजारी।

# धरती सब की माता है

धरती सबकी माता, सब इसने उपजाया।
हरी भरी धरती, और कंचन जैसी काया।
जीव, जन्तु, पशु, पक्षी, मानव सवका पालन करती ।
अच्छे,बुरे, सभी पुत्रों को उपर धारण धरती ।
बीजों को यह पेड, बनाती, सभी अन्न, उपजाती।
बडे, बडे, पहाड, नदियॉ, खनिज, लवड धर छाती।
सतरंगी चूनर ओढे, फूलों, सी मुस्काती।
चन्दा, सूरत, रोशनी डाले, स्वच्छ गगन से झाकें,।
सुन्दर , छटा, निराली मॉकी, नभ तारै संग, ताकें ।
बादलों, की घोर घटायें, विजली , उपर डालें।
पानी, भर, भर, चढे गगन में, करते मानो कुचालें।
ठंडी, वर्षा ,गरमी सब कुछ मॉ सहलेती।
अपने पुत्रों को उपजाकर , सभी रत्न है, देती।
हम, प्यारी धरती माता का सदा रखें बस ध्यान।
मेरी धरती माता का, घटे कभी ना मान।

# माँ दयालु है कृपा करती है

भक्तो के भण्डार को भर देती है माता।
माता और संन्तान का जन्म जन्म का नाता।
जब,जब भक्तों पर पडता संकट भारी।
आजाती मॉ रक्षा करने करके सिहं सवारी।
खडग, त्रिसूल हाथ में लेकर माता दौडी आती।
जिन भक्तों पर संकट हो, मॉ आके उन्हें बचाती।
ब्रम्हा, विष्णु, शिव शंकर को, शक्ति दे डाली ।
मॉ की ममता मॉ ही समझे वो है भोली भाली ।
लाल चुनरिया मॉ को भाती ,चमक दार है गोटा।
घ्वजा, नारियल, मिस्ठान चढावे, जल भर के लोटा।
अगर,कपूर, घी दीप जलावे मॉ से करलो प्यार।
मॉ से कहदो अपनी मुरादें वो करलेगी स्वीकार।
मॉ की ममता, का इस जग में कोई नही है मोल।
मॉ की ममता ना तौल सकोगे वो तो है अनमोल।

# कृष्ण ही एक सहारा है

हे नदलाला, हे, गोपाल, तुम्हारी टेडी मेढी चाल।।
सब – कोई समझ ना पावें, मनुआ है, वेहाल ।।
नम में, जल में, थल में, उथल पुथल है भारी ।।
ना समझ में अन्जाना, मेरे कृष्ण मुरारी ।
चीन, चायना, जिसको कहते, लडने को तैयार
अपनी बडी कुचालों से बढा रहे रार ।।
जीव, जन्तुओ को खाकर फैलादी महामारी।।
कोरोना महारोग से लडकर जन्ता हारी।।
नई, नवेली बीमारी की बनी ना कोई दवाई ।।
बिना दवा के लोगों ने बीमारी से जान गवाई।
कृष्ण, कन्हैया कहां छिपे हो, जगतो है बेहाल।।
आजाओ अब इन्हे बचाने, छोडो टेढी चाल।।
तुम ही हो बस एक सहारा ओ नटवर नंदलाल।।
श्याम सुन्दर, कृष्ण मुरारी, गोवर्धन, गोपाल ।।
जग में दिखती जो भी चीजें सब में श्याम समाया।।
जो भी भजता सच्चे मन से वही कृष्ण को पाया।।

# हरि का भजन कीर्तन संकट मोचक है

करो कीर्तन मुख से, बोलो हरि का नाम।।
कट जायेगे सारे संकट जपलो सीताराम ।।
सीताराम, राधेश्याम गाने से आराम।।
दादू, नानक, संतक कबीरा, तुलसी लीन्हा नाम।।
नाम की शक्ति, भक्ति उपजे, मन में हो विश्राम ।।
करो कीर्तन मुख से, बोलो हरि का नाम।।
राम, राम, हनुमत जपते, मन प्रशन्न जियजान।।
राम काज, राम भक्ती, में डूब गये हनुमान।।
राम, राम, दिन रात जपें भोले बाबा अविनाशी ।।
मुक्ति भी जहां पानी भरती, वो मेरी है काशी।।
संत, भक्त, करें कीर्तन, लैके, हरि का नाम।।
संत, भक्त सम काहू नें लहे नही विश्राम ।।
करो कीर्तन मुख से, बोलो हरि का नाम।।
भक्त माल में भक्तो का पढलो गुणगान ।।
हरि की भक्ती में डूबकर, हो गये जगत महान ।।
करो कीर्तन मुख से, बोलो हरि का नाम।।

# सुख, दुख का कारण

करे एक दूसरे का मन से सम्मान ।।
अपने, अपने बस में रखे हम अपना ईमान।।
धर्म, मर्यादा, अनुशासन, नैतिकता का पाठ ।।
जे इनको मानें सदा उनके हर दम ठाट ।।
ललच, क्रोध, ईषा, सदा बढावै बैर ।।
घमण्ड, छल, कपट, दम्म को नही मिलेगा ठौर ।।
आत्म ग्लानी, में दुख उपजाती।।
आत्म ग्लानी सदा जलावे बिन दिया ओर वाती।।
हीन भावना, असंतोष से दुख उपजत तत्काल।।
प्रेम बासना मे जो फसे, उन्है ना छोडे काल।।
मन में भरी विशैली बातें, मनका धीर चुरावें।।
बिन चाहें, उन्हें कुमार्ग पर वे लेजावे।।
अगर सुखी रहना है,तो बुध्दि से लो काम।।
काम सदा अच्छे करना मत होना बदनाम ।।
ज्ञान अथाह तुम्हारे अन्दर तुम उसको पहिचानो।।
बुध्दि से , बस मनको करलो, सत्य यथारथ जानो।।

# साम 6 बजे 3 बार, हर, हर, हर, जाप से सारे संकट दूर होते है

विधिना का लिखा, कोउ ना मेंटन हार।  
शिव की महिमा अमित, मेंट सकें त्रिपुरार।।  
भोले बाबा, करें, कीर्तन राम, राम पुकारें ।।  
बडे से बडा हो संकट, छड भर में ही टारें।।  
भांग, धतूरा, बेल, पत्र, गंगा जल प्रिय लागें।।  
भूत प्रेत, बेतल, सिध्द जन आगे पीछे नागें।।  
जगत पिता शंभु अविनाशी, पारवती है माता ।।  
इस सारी दुनिया का है, जन्म, जन्मों से नाता ।।  
जो निश कपट ध्यान पूर्वक शिव का ध्यान लगाता।।  
भांग, धतूरा बेल, पत्र गंगा जल आन चढाता।।  
बंम,बंम, बंम, सुन की ही वे प्रशन्न हो जाते।।  
राम कथा हरि चर्चा सुनने, वे आतुर हो आते ।।  
महा मृत्युन्जल मंत्र, सदा मौत को टालें।।  
उ नमः शिवाय भजकर के भोले बाबा पाले।।  
हर, हर, महादेव 3 बार शाम को 6 बजे जो उचारे।  
सारे सुख उसको मिल जावें कटैगें संकट सारे।।

# मन में मुरली बाले को बसा लो

मन मन्दिर में प्यारे सांवरिया को बसालो।।
मन मन्दिर गोपाल बसाके फिर तुम ताला डालो।।
नटखट, झटपट, प्रेम से उर अन्दर में समाता।।
निशकपट होकर जो श्याम का ध्यान लगाता ।।
परम प्रेम से राधे ने अपने हिय माह बसाया ।।
मन मोहन प्यारे छलिया ने, राधा कन्ठ लगाया।।
प्रेम पूरवक एक दूजे में गयें समाई।।
दुनिया को आज तलक यह बात समझ ना आई।।
प्रेम जगत आधार है , राधा उसकी माता।।
जो राधा, राधा, गाता, कृष्ण उन्हें मिल जाता।।
प्रेम पूर्वक प्यारे तुम भी मन से, राधे, राधे गालो।।
चिदानन्द बंशी वाले सांवरिया को मन में बसालो ।।
बंसी की जादू भरी, ध्वनि पडेगी तभी सुनाई।।
सुध बुध खोकर कृष्ण पुकारो, तुरतई पडे दिखाई।।
राधा, श्याम, की छवि मनोहर, उर में गई समाई ।
कृष्ण, कृष्ण है, कृष्ण, कृष्ण याद तुम्हारी आई।।

# गोविन्द दरसन

हे कौशल के नन्दा,
में निस दिन भजू गोविन्दा
मेरे घर में आजाओं।
मुझे प्यारे दरथ कराओ।
मेरे संग में आकर प्यारे।
झूला मेरे झुलना
बनकर प्यारे से ललना।
आ कौशल के नन्दा।
में जिस दिन भज गोविन्दा।
ओ यशुमत के चन्दा।
मेरे कोटो जम के फन्दा,
में निसदिन भजू गोविन
ओ यशुमति के नन्दा।
में निसदिन भजू गोविन्दा।
मेरे प्यारे अंगना,
ओ यशुमति के नन्दा।
में निशदिन भजू गोविन्दा।
तम थाम लो मेरी बइय्या,
ले चलो कदम की छय्या।
ओ यशुमति के नन्दा
में निशदिन भजू गोबिन्दा।

# अमर सहीदो को प्रणाम

भारत मां के अमर सहीदो।

तुमको वारम्बार प्रणाम।

भारत की मिट्टी में मिलकर अमर हो गया जिनका नाम।

दुश्मन को सीमा पर घेरा डटकर किया खूव प्रहार।

दुश्मन हार मानकर भागा, मचा मचाकर चीत्कार।

भारत मां के अमर सहीदो, तुमको वारम्बार प्रमाण।

मां  की रक्षा जो भी करता, वो ही प्यारा वीर सपूत।

उसे न कोई मार सकेगा, चाहे आजाये यमदूत

हम जीकर भी मरे हुये है, तुम मरकर हो गये अमर।

तुम हर पल निडर रहे, हमको हर पल लगता डर।

भारत मां के अमर सहीदो, तुमको वारम्बार प्रमाण।

स्वार्थ लालसा जिनको घेरे, श्रम से नही है, जिनका नाता।

देश प्रेम न जिनके दिलमें, उनकी नहीं है भारत माता।

भारत मां के अमर सहीदो, तुमको वारम्बार प्रणाम।

# जन्मदिन की बधाई

जन्म दिन की तुम्हें बधाई।
तुम जियो हजारों साल।
कला, शिक्षा, देश हित में
तुम दिखलाना नया कमाल।
सूरज जैसी आमा देकर,
नई शेशनी देना।
चन्दा जैसी सीतल किरणें,
वनके बरसें अंगना।
नाम तुम्हारा  अमर हो जगमें,
यह आशीष हमारी।
सुखी रहें तुम्हारे मात–पिता,
ओ नन्ही सी फुलवारी।

# भारत देश महान

भारत देश मकान, भारत देश महान,
भारत मां के वीर सपूतो ऐसा कुछ करजाओ।
अपनी वुद्धिओर कलम से, दुनिया को बतलाओ।
शान्ती धर्म और नैतिकता की क्या क्या है, परिभाषा।
हम सब मिल पूर्ण करेंगे ऐसी मेरी आशा।
भारत देश महान, भारत देश महान।
कर्मवीर और धर्मवीर, ऋषि मुनियों का यह देश।
धर्म और सत्य न छोड़ा, यहां ऐसे रहे नरेश।
भारत देश महान, भारत देश महान,
ग्यान दे रहे हमें रामायण, गीता और कुरान।
भागवत महाभारत से भी मिलता हम को ज्ञान।
आदि ग्रन्थ भारत के सारे वेद, और पुराण।
भारत देश महान, भारत देश महान,
आज पथिक वन भूलों को सुन्दर पथ ले जाये।
देश भक्ति और अनुशासन का फिर से पाठ पढाये।
भटक गये है, उनको फिर से सच्ची राह दिखायें।
तुम तो हो भारत मां के बेटे, करो न काम कभी भी खोटे।
भारत देश महान, भारत देश महान।
पहिचानों भाईचारा, करो देश का ना बटवारा।
जाति धर्म का भेद मिटाओ, मिलकर माता के गुणगाओ
भारत देश महान, भारत देश महान,।

दीन हीन को गले लगाओ, दुखीजनों को तुम अपनाओं।
शुद्ध आचरण पर दो ध्यान।
भारत देश महान, भारत देश महान।
एक दूसरे का हरदम ध्यान, घटना पाये मां का मान।
नैतिकता और चरित्र का न हो पाये पतन।
हरदम भारत मां और याद रहे वतन।
भृष्टाचार और स्वायर्थ को करदो दफन।
भारत मां की तरफ जो आंख उठये कुचलो उसका फन।
अब कोई भी न हो भूखा, वेकार ओर बिना काम ।
सबको दो रोटी, पानी, घर कपड़ा ढकने को तन।
सबको मिले रोजगार, दूर हो चीत्कार।
हमारा भारत देश महान, भारत देश महान।

# शिक्षक बन्दना

ओ भारत के भाग्य विधाता।

तुमही हो शिक्षा के दाता।

शिक्षक तो है, युग निर्माता।

भले वुरे का ज्ञान कराता।

सुन्दर पथ सवको ले जाता है।

त्याग, तपस्या, नैतिक जीवन जिस के जीवन का संवल।

मानवता की सेवा करने जो तप्पर रहता हर पल।

यदि शिक्षा ज्योति है तो, शिक्षक उसमें बाती है।

शिक्षक के कृत्यों से भारत माता मुस्काती है।

ओ भारत के भाग्य विधाता, तुमको सत् सत् कर नमन

स्वीकारों हम लोगों की हल्दी, रोली और चन्दन।

# सनातन धर्म ही गुरू है।

गुरू सनातन धर्म है, गुरू है, गुण की खान
गुरू अपने ज्ञान से, मिलादेत भगवान।।
गुरू विन सारे ज्ञान, जगत के रहे सदा अधूरे।।
गुरू ही जगत का ब्रम्ह है, गुरू से होते पूरे
अच्छे, बुरे सभी ज्ञान, से करवाता पहचान
जीवन में आये दुःख टाले, वह मेरा भगवान
वेद, पुराण, और शास्त्रों की हैं वह जान
जग मे छिपे अनमोल रतनों से करबाता पहचान
सुन्र पथ पर जा जाता, मेरी जीवन गाडी
विना गुरू के ज्ञान ना पाते, रहते सभी अनाडी
जीवन नैया पार लगाता, देकर के ज्ञान
नमन करू अपने गुरूवर को वा मेरे भगवान
रोली, कुमकुम, तिलक, लगाऊ, फूलो को भी चढ़ाऊ
करू वन्दना चरणो में झुक, बलिवल जाऊ
फल मेवा का भोग, लगाऊ, लिया तुम्हें पहिचान
गुरू हमारा धर्म है, गुरू ही है, भगवना।
बारम्बार नमन हम करते, देते रहना ध्यान।
गुरू को पूरी दुनिया पूजे, चाहें हो धनवान
गुरू पूर्णमा के दिवस पर, गुरूवर की पूजा करते।
श्रद्धा, और विश्वास सहित हम चरणों में पडते।
सनातन धर्म जगत गुरू है, गुरूवर मेरी सान।
गुरू के अन्दर ज्ञान छिपा है।, जान सके तो जान।

# गणपति बन्दना

सुमिरहु परम प्रिय, गणपति नायक।
विध्न, विनाशक, शुभ फल दायक
त्रिद्धी ,सिद्धी के तुम हो धारक
शुभ और लाभ परम प्रिय बालक
राम,राम रट, सव गुण पाया
भक्तों पर करते तुम दाया
प्रथम पूज्य मये जग माही
तुम विन शुभ काम कहुं नाही
भक्तो का सव मंगल करते
बुद्धि विध्या से झोली भरते
भर देते भवतन भंडार
तुम समान नहि कोऊ उदार
मोदक प्रिय, मूसक हैं वाहन
तुम्हरा सुमिरन है, अतिपावन
भक्ति भाव से जो सुमिरन करते
विन भय वे सव भव से तश्ते

# गुरू पूर्णिमा पर गुरू बंदना

सनातन धर्म ही गुरू है, गुरू है मेरी जान।।
धर्म, हिये धारण करें, माया पति भगवान।।
माया पति की माया का जो करवादे ज्ञान।।
धरती पर साक्षात है, गुरू रूपी भगवान।।
गुरू ही मायापति की माया का भेद मिटाता।।
माया का भेद मिटाने से, भगवान समझ में आता।।
दुनिया में जो भी दिखता, सव माया का रूप।।
सूरज, चन्दा, गगन में तोरे धरती पर है धूप।।
परम पिता को ढूडा, मिला हमारे अन्तर।।
सारी बात समझ में आई, जपा जव गुरू मतर।।
गुरू भक्ति, शक्ति से हमने, सारे सुख पाये।।
बारम बार नमन हम करते, प्रभुदर्श दिखलाये।।
गुरू पूर्णिमा के अवसर पर, गुरू का पूजन करते।।
श्रद्धा, और विश्वास से, चरण हिये हम धरते।
रोली चन्दन तिलक लगाऊ, करू तुम्हारा बंदन।।
बारम्वार चरणों में पडकर , करते तुम्हें नमन।।

# गणपति, शिव, हनुमान जी एवं श्रीजी के पूजन से राम, मिलते है।

कोई, राम, नाम इन सम नहि जाना।।

गणपति, शिव, बीर हनुमाना।।

'राम, की भक्ति शक्ति पहिचान।।

तीनों देवो का यस गुणगान।।

बिन शक्ति पहिचान न आवै।।

'शक्ति, बसत 'राम, हिय माही।।

'शक्ति, राम की प्राण अधार।।

तीनो देव जो करें सहायी।।

शक्ति मॉ है परम उदार।।

तीनों  देव और 'राम, में भेद ना लावै।

मॉ शक्ति को मन से ध्यावै।

परम प्रशन्न होते तव 'राम,

पूजन विधि में सही विधान।।

पूजन विधि में यही विधान।।

पूजन दक्ष, शिव विन कीन्हा।।

विधिवत फल तव उनको दीन्हा।।

गणपति है। विध्नो के हर्ता।।

हनुमत सदा राम सुमिरता।।

'श्री' जी है, राम की शक्ति ।

इन विन कोई पाये ना भक्ति।

यह रहस्य जाने नहि कोई ।।

राम कृपा हो, जाने सोई।।

# हरिनाम ही सुख की खान है

सव सुख की है, खान जपलो हरी, हरी।

सारे दुःख, पातक मिटजायें, रसना हरी, हरी।

मन में श्रद्धा रख, विश्वास जपलो हरी, हरी।

सब मंगल होजाय, जपलो हरी,हरी।

सभी सन्त जपें, हरी नाम जपलो हरी, हरी।

बो जगत का पालन हार, जपाले हरी,हरी।

सबका करता उद्धार, जपलो हरी, हरी।

तुमभी करलो उससे प्यार, जपलो हरी, हरी।

जगत श्रजन करतार जपलो, हरी,हरी।

अन्दर बसा तुम्हार, जपलो हरी, हरी।

द्योड कपट जंजाल, जपलो हरी, हरी

जन्मो, जन्मो का साथ, जपलो हरी, हरी

चिन्ता छोडो अब यार, जपलो हरी, हरी

हरी हरदम तेरे द्वारा, जपलो हरी, हरी।

# भजन से सारे कष्ट दूर होते है

जप,तप, सुमिरन भजन ना होई।।

विपत्ति समय जानो है, सोई।

मन बुद्धि दूषित हो जावै।

उल्टे कामों में तुम्हें फसावैं।

दुःख पावत अपनी करनी का।

पाप बंढे तब इस धरती का नाना भांति तब रोग अनेका।

परम वित्रित एक से एका।

उठा पटक, घर में हो जावैं।

सभी दुःखी कछु समझ ना आवै।

विस्था ईश्वर दोष लगावै।

जप, तप सुमिरन सदा सुखदाई।

करो भजन मन में चित लाई

विपत्ति कवहु घर ना झाके।

सुख, समवृद्धि, रहे घर ताके।

# भक्ति ही सुखदाई है।

सच्चिदा नन्द रूप के अन्दर, भक्ति है राधा।
परमेंश्वर के अन्दर शक्ति हरती सारी वाधा।
शक्ति, शारी जग को रचने बाली माता।
परमेश्वर की शक्ति का कोई भेद समझ ना पाता।
अविनाशी, चिदानन्द, विश्व उत्पत्ती कारण।
इस शक्ति के द्वारा, होते सभी निवारण।।
आत्मा रूप में शक्ति रहती सब के अन्दर।
आत्मा में भरा हुआ है, ज्ञान का बडा समुन्दर ।
आत्मा अंस इस का अविनासी है।, रूप।
कटे, मरे, ना उपजे, ले जाते है, दूत।
कर्मो के बन्धन से, बंधती इसकी डोर।
जैसे कर्म किये होते है, वैसा मिलता ठोर।
भक्ति के द्वारा सारे कर्म बन्धन कट जाते।
भक्ति के द्वारा, जीवन मरण बन्धन मिटजाते है।
प्रेम पूरवक सच्चे मन से, जपलो राधे श्याम
रूपया, पैसा काम ना आवै, अन्त समय बरा राम।

# संसार रचने बाले हरि ही है।।

हरे राम, हरे श्याम, दोनों एकही के नाम।
'हरि, के हजारो नाम हरि को करो प्रणाम।
जीव, र्निजीव सभी चीज में हरि ही समाया।
बडे, बडे, ऋषि मुनियों ने हमको है समझाया।
पंच तत्व से बन्ती काया, रचना करती माया।
धरती, अम्बर, पवन, अग्नि,जल ने सभी बनाया।
पंच तत्वो के दूषित होने से बनती बीमारी।
पर्यावरण बचालो मय्या ना हो महामारी।
बुद्धि, ज्ञान, अनुशासन, धर्म, और मर्यादा।
सब मिलके हमें सुखी बनाने का करते बादा।
ज्ञान और विज्ञान, अध्यात्म हमें बढ़ाते।
जीवन जीने की कला, सच्ची राहा दिखाते।
'हरी, हमारी करते रक्षा, मेरे अन्दर बैठ।
'हरी, का नाम सुमिरले भय्या उनसे करते पैठ।

# प्रभू भक्ति से सब कष्ट मिटते है

सब बाधा हरते नटनागर, भजलो प्यारा नाम।
मन की दुविधा मिट जायेगी मिले तुरत आराम।
प्यार और विश्वास सहित राधा कृष्ण पुकारो।
जीवन का अब करो समर्पण प्रभु चरणो में डारो।
परम पिता परमेश्वर के विन हिले नहीं को ईपत्ता।
'शक्ति, अनोखी जगत नचावत सही यही है सत्ता।
'धर्म, आचरण, अनुशासन से बंधी हैं, इसकी डोर।
हितू हमारा इस समना कोई और नहीं कहु ओर।
राधेश्याम ,सीताराम दोनो सुन्दर पावन नाम।
पतितो को पावन करते, ऐसे है भगवान ।
जब, जब भक्तों ने, करूणा से उन्हे पुकारा।
तत्छण दौड़ लगाकर, आता प्रभू हमारा।
करमेती, कर्मा, मीरा ने, उनके दर्शन पाये।
सूरदास, रहीम, नानक ने, उनके दर्शन पाये।
गोपी, ग्वाल संग खेले प्यारे मोहन, गिरधारी
विपिदा हारी है, नटनागर प्यारे, कृष्ण मुंरारी।

# अन्दर वाहर प्रभूवास है।

प्रभु की कृपा हुई, दिव्य दरस हम पाये।
अपने घर परिवार सहित, मित्रों को करवाये।
प्रभु प्रेम अब हिये समाना, करू में करूण पुकार।
प्रभु हमारे परम कृपालू करें जगत उद्धार।
प्यारे मनमोहन, सांवरिया, युगल रूप में आना।
मुझे दरस देकर मित्रों को भी दरस कराना।
यह जग सारा है, दुःखयारा माया इसे नचाये।
ऐसी जुगत बताना कांन्हा, हम इससे बचजाये।
ध्यान तुम्हारा सदाधरू और राधेश्याम गाऊ।
साक्षात मुरली बाले के नैनों से दर्शन पाऊ।
हर बस्तु, हर जगह, तुम्हारा ही है। वास।।
जल में कुम, कुम में जल है, भीतर वाहर पानी।
फूटा कुंम जल जलहि समाना यही मेरी कहानी।
अन्दर, वाहर तुम्ह ही तुम हो माया को कुंम बनाया।
माया रूपी कुंम, फूट के अन्दर वाहर में तुम को पाया।

# हमारा प्रभु हमारे अन्दरती है

अगत पिता जगदीश्वर ही, सारे जगको रचते।
जिसयर ईश्वर कृपा करें, वहि माया से बचते।
मानव जीवन की है सुख, दुख भरी कहानी।
कहानी लिखने वाले से, दुनिया है। अंजानी।
कर्मो से बन्ते सुख, दुःख, कर्मो से बनी कहानी।
लिखने बाला अन्दर बैठा, ना करना मनमानी।
बो सब कुछ देख रहा है। पर तुम्हें ना पडत दिखाई।
आत्मा तत्व में अन्दर बैठा, सुनलो मेरे भाई।
ध्यान, धारणा से खुलते, अन्दर के ताले।
'राम, राम, रसना से रटके, अन्दर बाले को पाले।
अन्दर बाहर हो उजियारे अन्दर पडत दिखाई।
आत्म, अंस में अन्दर बैठा हर से देत मिलाई।
हरि, हर हमारे सारे, संकट को टाले।
ॐ जय श्री हरि, हर हरे, हरे, मंत्र हम गाले।
प्रीत सहित जो, हरि का ध्यान लगाता।
परमानन्द को पाकर जीवन सफल बनाता ।

# प्रभु चरणों में प्रीत लगा के।

निर्मल, मन को करें, छोड कपट जंजाल।
ममता प्रभु चरणों में रख, जीवन करो निहाल।
मनका मेल धुवत ही हो प्रभु चरणों में प्रीत।
प्रेम, सहित हरि ध्यान कर, मिल जायेगा मीत।
सांवरिया, से प्रेम बढत ही, मन की त्रिष्डा मागे।
हर दम तुम, मस्त रहोगे, मन भक्ति में लागे।
भक्ति, जिसके हृदय विराजे सारे संकट टारे।
घर, उसके तव श्याम, विराजे चक्र सुदर्न वारे।
माया का पर्दा उठने से, गिरधर वाहर झांके।
जो भी तुम उनसे मागो, सभी देत तव लाके।
श्याम सावरिया हितु हमारा वही है पालनहार।
सच्चे मन से उसे पुकारो, आजावे तव हार।
पिता पुत्र, मित्र, प्रभु बनकर, रखते सब का ध्यान।
जो, जिस प्रेम, भाव से मजते, वैसा उसका सम्मान।
राधे, श्याम मजले मेरे मनुआ, प्रेम सहित गाले।
विरथां क्यो भटक रहा है, प्रभु चरणो में प्रीत लगाले।

# प्रभू शक्ति से सब कुछ बना है

राधा, राधा, जबभी पुकरो, श्याम हृदय तक जावे।
जो राधा से प्रीत लगाये, उन्हे कृष्ण मिलावे।
सांवरिया के मन मन्दिर में बैठी है, राधा।
राधा तो बस श्याम दिवानी हरती है सव वाधा।
राधा शक्ति को जब हरि ने हृदय धारण कीन्हा।
अमित, सच्चिदानन्द रूप दिखा ब्रम्हा, हर दर्शन दीन्हा।
सभी देवताओं ने हरि अन्तर शक्ति को देखा।
परम प्रभू की भक्ति से उपजी अविचल रेखा।
अविनाशी शक्ति अमित आलौकि सत्ता।
इस शक्ति के विना ना हिलता इस जग में पत्ता।
आदि शक्ति अविनाशी निराकार है रूप ।
इसी शक्ति से सब उपजे धरती अम्बर धूप।
जल हवा अग्नी धरती पर उपजाई।
आदि शक्ति ने ही उपजाई जगदम्बा माई।
नीले दिखते आकाश में गृह नक्षत्र और तारे।
इसी शक्ति की उपज हैं मइख्या जो भी दिखते सारें

# प्रभु भक्ति एवं सदकर्म से सुख मिलता है

एक भरोसा एक बल, एक आस विश्वास।
जे हरदय प्रभु सुमिरन करे, रहे ना कोई त्रास।
काम सदा बोही करें रख धर्म, अनुशासन ध्यान।
बुरे कर्म करने से, मिटजाता इन्सान।
लाख कोशिशे करो पर सत्य कभी ना छुपता।
सत्य विना ना चल पायेगी, जो झूठी हो सत्ता।
झूठ सदा दुखदाई है, हमें नर्क ले जाता।
झूठ बोलकर जो करें कमाई कहो कोन सुख पाता।
झूठ, फरेव छल छिद्र से मिटजाता इन्सान।
खोटेकर्म, हिंसा करें, धर्म त्याग अभिमान।
सत्य सनातन धर्म है, जो भी पालन कर्ता।
ईश्वर उसकी रक्षा करते सुख से झोली भरता।
धन, दौलत, कुछ काम ना आती यही धरी रह जाती।
हरि का नाम सदा सुख दाई, जनम जनम का साथी।
सच्ची वात समझलो भया हरि से लगाओ प्रीत
काम सदा वोही करना जो हरि मनको ले जीत।

# ऊॅ शक्ति वीज है

ऊॅ अछर है, जिस का छय नाहि होता ।
ऊँ, अछर को जपने बाला शक्ति बीज के बोता ।
'ऊँ, के अन्दर ओमा, चांद के ऊपर बिन्दी।
'ऊँ, शक्ति के अन्दर की अब समझो हिन्दी।
अेमा, के अन्दर आदि शक्ति अविनाशी।
सुन्दर चांद के ऊपर विन्दी, शिव के ऊपर काशी।
सभी मिलकर त्रिदेव के अन्दर ऊँ रूप समाई।
आदि शक्ति अविनाशी रूप, वो प्यारी है माई।
ऊँ, अछर में चांद के ऊपर विन्दी बडा सितारा।
चंद के संग मिलकर सितारा लगता प्यारा प्यारा।
अक्षय त्रितिया के दिन आसमान पर यही नजारा।
चन्दा की सब पूजा करते, हिन्दू मुसलिम सारा।
चांद बडा ही सुन्दर, शीतल, मन सबको भाता।
चांद को सब मामा कहते, जन्मो का है नाता।
ईश्वर, अल्ला के नामों में लगता है भेद।
पर प्यारे चंदा मामा की, कीरत रही अभेद।

# मन के शुभ विचार कष्ट मिटाते है

आसा और विश्वास को ना होने देना कम।
डर, चिंता अवसाद के मिट जायेगे गम।
हतासा, अवसाद हमें कमजोर बनाता।
सजगता सच्चा पहरी, आके हमें बचाता।
अनुशासन मंत्र है भय्या इसको गले लगाते।
बीमारी और दुःख को मन में नहीं बसाये।
योग क्रिया प्रभु भजन से तन मन होत पवित्र।
गन्दी सोच त्याग दो मन में सुन्दर चित्र।
मित्रों से जुडे रहो, करो मन की बात।
अंधेरा छट जायेगा, होगा नया प्रभात।
अच्छी सोच बिचार से प्रशन्न रस बनजात।
आत्म सुख बर्षत रहे, मन प्रशन्न हो जात।
श्रद्धा और विश्वास से भरे रहो भरपूर।
अच्छे दिन नित होयगे। नहीं रहेंगे दूर।
मन में कभी ना आने देना ग्लानी।
बुद्धि से मन बस में करलो सही तत्व को जानी।

# वृन्दावन में हर कोई राधे बोले

राधा, राधा, रटने से राधे ध्याने बाले आते।
राधा, राधा सुनकर कान्हा हृदय में सुख पाते।
राधा प्रेम दिवानी होकर मोहन हृदय समानी।
तीन लोक की स्वामिन राधा देवी है महारानी।
ब्रज चौरासी कोस में हर कोई राधे बोले।
चढा रंग भक्ति का सब पर सब मस्ती में डोले।
बृन्दावन में राधे प्रेम का रंग बडाही निराला।
बाके विहारी बनके बैठा दुनिया का रखबाला।
यमुना महारानी की श्यामा छटा हें निराली।
चारो और सुख शांति विखरी बडी दिवाली।
निधिवन में नित लीला करते रास विहारी।
जो भी इसके दर्शन पाले खोये सुध बुध सारी।
बृन्दावन की पेड लतायें कदम पेड है सुन्दर।
पशु पक्षी बन्दर प्रेम को समझे प्यारे सारे मन्दिर ।
संत, साधु प्रभु भक्ति में रहकर करें राधे श्याम से प्रीत।
जग के सभी काम छोड कर भजले परम पुनीत।

# कृष्ण मुरारी का भजन करो

सारी बातें छोडकर भजले कृष्ण मुरारी।
दौड लगाकर आजायेगें प्यारेगिरधारी।
राधा नागर से सच्चे मन से जो प्रीति लगाता।
सच मानो वह सदा सदा के लिये उनका हो जाता।
जिस जिस ने इस जगमें सच्ची प्रीत लगाई।
प्यारे सांवरिया उनके पडे दिखाई।
नैना जिनके है मत बारे बंसी जादू बारी।
मोर मुकुट शिर सोभित श्याम छटा है कारी।
टेढी चितवन मधुर सुस्कान घुधराले है बाल।
सुन्दरता अति काम भी हारा टेडी मेडी चाल।
बैजन्ती माला उर में धारें नन्द यसोदा लाल।
प्यारी छवि जो भी निहारत मनको करत निहाल।
जरी  का कुर्ता पहना गोटा बाली धोती।
चन्दन तिलक लगाया माला पहने मोती।
छोडके चिन्ता सारी भजलो कृष्ण मुरारी।

# भारत की प्राचीन विद्या समझनी होगी

शिक्षा, और संसकार से, बन्ता अच्छा मन।
अच्छे मन के कारण ही होता सच्चा जीवन।
गुरू कुल में बन्तीस विद्या चोसठ कला सिखाते थे।
जीवन सफल बनाने की  सच्ची राह दिखाते थे।
अनुशासन गुरू आज्ञा का पूरा रखते थे ध्यान।
एक दूसरे का हरदम करते थे सम्मान।
विज्ञान कला विद्या बल आचरण पर था ध्यान।
भारत देश हमारा रिश्रि मुनियों की संतान।
प्रकृति प्रेम शुद्धता पशु पक्षी से प्रेम जताते।
पशु पक्षी भी प्रेम समझते सच्चा साथ निभाते।
नदी, पहाड बृक्षो की हम करते है पूजा।
प्यार भरा नैतिक जीवन भारत समना दूजा।
विदेशियों ने आकर शिक्षा धर्म अनुशासन किया विनास।
पुरातन शिक्षा लुटाकर कहते इसे विकास।
महामारी बीमारी का कारण नहीं रहा अनुशासन।
समझनी होगी वे सबवाते जिन्हे कहे पुरातन।

# प्रकृति प्रेम से रोग दूर होते है।

कान बन्द कर सुनो, आती झीगुर की आवाज।
प्रकृति मानो ध्यान घर लेती हो स्वास ।
अन्दर और वाहार दोनो में प्रकृति के खेल निराले।
अद्रस्य सन्ता से ताल मेलकर डाल दिये है ताले।
जो भी अद्रस्य सन्ता का मन से ध्यान लगता।
प्रकृति से सच्चा प्रेमी वन जो भी प्यार निभाता।
वह पाजाता है, अद्रस्य सन्ता का ज्ञान।
ध्यान धारणा भजन से मिलेगें प्रभू यह वात लो जान।
प्रकृति से खिलवाड कर जो करता प्रदूषण।
रोग से मरते तव लोग, होता प्राणों का हरण।
प्रदूषण की देन है नित नई बीमारी।
प्रदूषण से मिटरही, प्रभु की दुनिया प्यारी।
सन दोहजार बीस में बनी कोरोना बीमारी।
बिना इलाज मर रही जन्ता फैली महामारी।
नियम अनुशासन दूर, दूर रह मास्क लगाओ।
काढा पीकर प्रभु को सुमरो रोग दूर भगाओ।

# क्रोध ही दुःख का कारण बन्ता है।

तुम अगर क्रोधित होने से झगडा तो बढ जायेगा।
एक पक्ष जन क्रोधित हो तब दूजा हो यदि शान्त।
थोडी देर माहोल गरम होकर होगा क्रोध का अन्त।
अगर दोनो क्रोधित होगे झगडा तो बढ जायेगा।
शान्ती नहीं हैं यदि मन में तो झगडा कोन मिटायेगा।
स्मझ दार बनो भाई क्रोध कभी मत लाना।
क्रोध का फल हरदम दुःख होता अन्त पडे पछताना।
क्रोध के कारण अगर कुछ दुर्घटना घट जाती।
छोनो पक्षों में सदैव लाती है वरबादी।
मन प्रशन्न रखें क्रोध को रखना दूर
घर परिवार में खुशिया। हो भर पूर।
समय, समय पर अपने मन मन्दिर में झाकों
राम,राम सुमिरन करलो विपत्ति ना व्यापे बाको।